यूनियन धारा
Union Dhara

जिल्द. 48, सं. 1 VOL.XXXXVIII NO. 1, मुंबई जनवरी-मार्च, 2023

आज़ादी का अमृत महोत्सव

गृह पत्रिका • HOUSE MAGAZINE OF

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
भारत सरकार का उपक्रम

Union Bank of India
A Government of India Undertaking

यूनियन धारा UNION DHARA

जनवरी-मार्च, 2023 January-March, 2023

प्रकाशन तिथि : 30.05.2023

अनुक्रमणिका Contents

- परिदृश्य 3
- हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं 4
- संपादकीय 5
- विश्व कैंसर दिवस क्लोज़ द केयर गैप 6-8
- म्यूचुअल फंड में निवेश 9-10
- Financial Investment - A Perspective 11-12
- Popular Titbits of Financial World 13
- काव्यधारा 14-15
- Climate Risk and Sustainable Finance 16-18
- स्वर्ण आभूषण के बदले ऋण संबंधी अनुपालन 19-20
- Team Building Skills 21-22
- साहित्य जगत से : प्रसिद्ध कवि एवं गीतकार - गोपालदास "नीरज" 23
- प्रतियोगिता 165 / प्रतियोगिता परिणाम 164 24
- Increasing Dominance of the Indian Rupee In International Markets 25-26
- Currency: A Journey Through Ages 27-28
- Digital Transformation & Our Bank's Initiatives 29-30
- समय की कीमत 31
- प्रधान मंत्री आवास योजना से सामाजिक एवं आर्थिक बदलाव 32-33
- Role of AI & ML in Banking 34
- Insolvency Resolution and Bankruptcy Process Against Personal Guarantors 35-37
- सेंटर स्प्रेड 38-39
- Indian National Flag 40
- Konark Sun Temple, Odisha 41-42
- शिखर की ओर / शुभमस्तु 43-44
- Face in UBI Crowd - Meet Beauty with Brain and Golden Heart - Mrs Priyanka Khanna 45-46
- शिक्षा का बाजारीकरण 47
- The Goldfish Theory 48
- जलवायु परिवर्तन से जूझती धरती 49
- Mobile Banking Apps 50-51
- हमें गर्व है 52
- Samuel Hahnemann - Father of Homeopathy 53
- बाबू जी / भारतीय संस्कृति में समन्वय 54
- Empower Her To Fly 55
- उद्यमिता का नया दौर : महिला उद्यमिता 56-57
- Going Green: The Future of Sustainable Finance 58-59
- Kintsugi 60
- व्यक्तित्व विकास के महत्वपूर्ण पहलू 61
- समाचार दर्शन 62-73
- हेल्थ टिप्स / व्यंजन 74
- आपकी पाती 75
- बैक कवर 76

संरक्षक Patron

ए. मणिमेखलै A. Manimekhalai
एमडी एवं सीईओ MD&CEO

प्रधान संपादक Chief Editor

लाल सिंह Lal singh
मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन)
Chief General Manager (HR)

संपादकीय सलाहकार Editorial Advisors

ए. के. विनोद A. K. Vinod
मुख्य महाप्रबंधक Chief General Manager

शैलेश कुमार सिंह Shailesh Kumar Singh
मुख्य महाप्रबंधक Chief General Manager

योगेंद्र सिंह Yogendra Singh
मुख्य महाप्रबंधक Chief General Manager

रामजीत सिंह Ramjeet Singh
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
Asst. General Manager (OL)

संपादक Editor

गायत्री रवि किरण Gayathri Ravi Kiran
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) Chief Manager (OL)

Printed and Published by GAYATHRI RAVI KIRAN on behalf of Union Bank of India and printed at UCHITHA GRAPHICS PRINTERS PVT. LTD., 65, Ideal Ind. Estate, Mathuradas Mill Compund, S.B. Marg, lower Parel, Mumbai- 400013 and published at Union Bank Bhawan, 239, Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point, Mumbai- 400021.

E-mail: uniondhara@unionbankofindia.bank
gayathri.ravikiran@unionbankofindia.bank

Tel.: 022-41829288 | Mob.: 9849615496

इस गृह पत्रिका में प्रकाशित लेख आदि में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं और प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है.

The views expressed in the articles published in this house magazine are solely that of the author and do not necessarily reflect the views of the management.

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा आंतरिक परिचालन हेतु प्रकाशित.

Published by Union Bank of India for internal circulation

परिदृश्य
PERSPECTIVE

प्रिय यूनियनाइट्स,

यूनियन धारा के नवीनतम अंक के माध्यम से सभी यूनियनाइट्स को मेरा हार्दिक अभिनंदन. मुझे प्रसन्नता है कि यूनियन धारा ज्ञान के प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करती है और मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करती है. यह एक ऐसा मंच है जो बैंकिंग और डिजिटल प्रौद्योगिकी से लेकर जीवनशैली और संस्कृति तक के विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को कवर करने वाली वैविध्यपूर्ण दृष्टिकोण को एक साथ लाती है.

आज की गतिशील और इंटरकनेक्टेड दुनिया में, बैंकिंग संस्थानों की भूमिका पारंपरिक लेनदेन बैंकिंग से परे विकसित हुई है. हम अत्याधुनिक तकनीकों को अपनाते हैं और ग्राहकों की बदलती जरूरतों के अनुरूप स्वयं को ढालते हुए अपने आप को नवाचार की अग्रपंक्ति में पाते हैं. जैसा कि आपको विदित है बैंक की प्रोन्नति के लिए हमने कई पहल किए हैं. मार्च, 2023 को समाप्त वित्तीय वर्ष के लिए हमारी सुदृढ़ वित्तीय स्थिति पूरे वर्ष के दौरान हमारे द्वारा की गई पहलों का प्रमाण है. हमने वित्तीय वर्ष 2023 के दौरान कारोबार, लाभ और लाभप्रदता, आस्ति की गुणवत्ता और पूंजी पर्याप्तता के मामले में अच्छे आकड़ों के साथ मज़बूत वृद्धि दर्ज की है.

निर्बाध ग्राहक अनुभव सुनिश्चित करने के लिए हम अपने व्योम ऐप और विभिन्न एसटीपी जर्नी के साथ डिजिटल क्षमताओं का निर्माण भी कर रहे हैं. मानव संसाधन के क्षेत्र में हमने अपने कर्मचारियों के अनुभव और उनके व्यावसायिक विकास को और बढ़ाने के लिए कई पहल किए हैं.

चालू वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए हमने महत्वाकांक्षी लक्ष्य और आकांक्षाएं निर्धारित की हैं. ₹ 21.5 ट्रिलियन का कारोबार हासिल करने और परिचालन लाभ के मामले में तीसरा सबसे बड़ा पीएसबी बनने की दोहरी आकांक्षाएं विकास के पथ पर हमारा मार्गदर्शन करेंगी. अपने मिशन को पूरा करने के लिए हमने विशिष्ट रणनीति और कार्य-योजना तैयार की है.

एक बार फिर यूनियन धारा के माध्यम से, मैं अपने सभी यूनियनाइट्स को बैंक की वृद्धि और विकास के अवसरों का पूर्ण लाभ उठाने हेतु प्रोत्साहित करती हूँ. बैंकिंग क्षेत्र में सबसे आगे रहने के लिए उद्योग की प्रवृत्ति से अवगत रहें, नई तकनीकों को अपनाएं और अपने कौशल को बढ़ाएं. आइए हम सब मिलकर अपनी पहचान बनाएं और सफलता की विरासत तैयार करें.

शुभकामनाओं सहित,

Dear Unionites,

My warm greetings to all unionites through the latest issue of Union Dhara. I am happy that Union Dhara serves as a gateway of knowledge and provides valuable insights. It is a platform that brings together diverse voices covering a wide range of subjects from banking and digital technology to lifestyle and culture.

In today's dynamic and interconnected world, the role of banking institutions has evolved beyond traditional transaction banking. We find ourselves in the forefront of innovation, embracing cutting edge technologies and adapting to the changing needs of our customers. As you know we have taken a number of initiatives in order to take the Bank to the next level. Our strong financials for the year ended March, 2023 is a testimony to our initiatives taken during the year. We have registered strong growth during FY23 with good set of numbers, in terms of business, profit & profitability, asset quality, and capital adequacy, among others.

We are also building digital capabilities with our VYOM app and various STP journeys to ensure seamless customer experience. On the Human Resources front we have taken several initiatives to further enhance our employees' experience and their professional growth.

We have set ambitious goals and aspirations for the current financial year 2023-24. Our twin aspirations to achieve ₹ 21.5 trillion business and become the 3rd largest PSB in operating profits will guide us on our path to growth. We have come out with specific strategies and action plan in order to accomplish our mission.

Once again through Union Dhara, I encourage all my Unionites to seize the opportunities for the growth and development of the Bank. Stay abreast of industry trends, embrace new technologies and enhance your skill sets to remain at the forefront of the banking sector. Together, let us make our mark and create a legacy of success.

With best regards,

(ए. मणिमेखलै)
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

(A. Manimekhalai)
Managing Director & CEO

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्री रजनीश कर्नाटक ने दि. 21 अक्तूबर, 2021 को यूनियन बैंक ऑफ इंडिया में कार्यपालक निदेशक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया. आपने वाणिज्य (एम.कॉम) में स्नातकोत्तर की उपाधि हासिल की तथा आप इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ बैंकर्स के सर्टिफाइड एसोसिएट (सीएआईआईबी) हैं.

आपको बैंकिंग क्षेत्र में 29 वर्ष का गहन कार्यानुभव है और आपने अनेक शाखाओं एवं प्रशासनिक कार्यालयों का भी कार्यभार संभाला है. पूर्ववर्ती ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स के महाप्रबंधक के रूप में, आप लार्ज कॉर्पोरेट क्रेडिट शाखाओं तथा वर्टिकल जैसे ऋण अनुश्रवण, डिजिटल बैंकिंग और मिड कॉर्पोरेट ऋण के प्रभारी थे. ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स के पंजाब नेशनल बैंक में समामेलन के पश्चात, आप पंजाब नेशनल बैंक में ऋण अनुश्रवण प्रभाग और कॉर्पोरेट क्रेडिट प्रभाग के प्रमुख रहे हैं.

आपने आईआईएम-कोषिक्कोड और जेएनआईडीबी हैदराबाद द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण तथा नेतृत्व विकास कार्यक्रमों में प्रशिक्षण प्राप्त किया है. साथ ही, आप आईएमआई (अंतरराष्ट्रीय प्रबंधन संस्थान) दिल्ली के अग्रिम प्रबंधन कार्यक्रम में सहभागी हुए हैं. आईआईएम बेंगलूरु एवं ईगोन जेंडर के नेतृत्व विकास कार्यक्रम के लिए एफ़एसआईबी (पूर्व बीबीबी) द्वारा चयनित वरिष्ठ अधिकारियों के प्रथम बैच में आपका चयन हुआ था. आप परियोजना निधीकरण तथा कार्यशील पूंजी निधीकरण, ऋण जोखिम की विशेष योग्यता के साथ जोखिम प्रबंधन व ऋण मूल्यांकन कौशल में दक्ष हैं.

आपने पंजाब नेशनल बैंक की ओर से पीएनबी हाउसिंग फ़ाइनेंस लिमिटेड तथा इंडिया एसएमई एसेट रीकन्स्ट्रक्शन कंपनी लिमिटेड के बोर्ड में नामित निदेशक के रूप में भी अपनी सेवाएँ दी हैं. आपने आईएएमसीएल (आईआईएफ़सीएल एसेट प्रबंधन कंपनी लिमिटेड) में पंजाब नैशनल बैंक की ओर से बोर्ड ट्रस्टी के रूप में भी कार्य किया है. आप यूबीआई सर्विसेस लिमिटेड के नामित निदेशक के पद भी कार्यरत रहे हैं. आपने लंदन स्थित बैंक की सहायक कंपनी यूबीआई (यूके) लिमिटेड के बोर्ड में गैर स्वतंत्र गैर-कार्यपालक निदेशक के रूप में भी कार्य किया है तथा इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ बैंक मैनेजमेंट (आईआईबीएम) गुवाहाटी के गवर्निंग बोर्ड के भी आप सदस्य रहे हैं.

आपने दिनांक 29 अप्रैल, 2023 को बैंक ऑफ इंडिया के प्रबंध निदेशक एवं सीईओ के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है.

श्री उमेश कुमार सिंह, ने दिनांक 01 जुलाई 2020 से 15 फरवरी 2023 तक यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के मुख्य सतर्कता अधिकारी का कार्यभार संभाला है. आपको बैंकिंग में सतर्कता, डिजिटल बैंकिंग, मानव संसाधन और जोखिम प्रबंधन में दो दशकों से अधिक का अनुभव प्राप्त है

मोती लाल नेहरू रीजनल इंजीनियरिंग कॉलेज, इलाहाबाद से इंजीनियर के रूप में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद आपने वर्ष 1994 में सेंट्रल बैंक में अधिकारी के रूप में अपने कैरियर की शुरुआत की. आपने देश के विभिन्न प्रांतों में शाखाओं और क्षेत्रों का नेतृत्व करते हुए अपने कैरियर को आगे बढ़ाया. आप वर्ष 2011 में महाप्रबंधक के रूप में पदोन्नत हुए. आपने बैंक के कई वर्टिकल यथा परिचालन, लेनदेन बैंकिंग और राजभाषा का नेतृत्व किया और भोपाल तथा कोलकाता अंचलों के क्षेत्र महाप्रबंधक के रूप में भी कार्य किया है. वर्ष 2019 में मुख्य सतर्कता अधिकारी के पद के लिए आपका चयन हुआ और यूनियन बैंक ऑफ इंडिया से पहले विजया बैंक, इलाहाबाद बैंक और यूको बैंक के सीवीओ रहे हैं. यूनियन बैंक ऑफ इंडिया में सीवीओ के रूप में आपके कार्यकाल के दौरान आपने नाबार्ड, एलआईसी, एक्जिम बैंक और कैनरा बैंक का भी अतिरिक्त कार्यभार संभाला है.

आपने केंद्रीय सतर्कता आयोग के निदेशानुसार 'एथिक्स एवं अच्छी प्रथाएँ' विषय पर 11 पुस्तिकाओं की संकल्पना और डिजाइनिंग का कार्य बखूबी निभाया और सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2022 के दौरान माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी के कर कमलों द्वारा इन पुस्तिकाओं का विमोचन किया गया.

आपने दिनांक 16 फरवरी, 2023 को सरसई, नई दिल्ली में केंद्रीय रजिस्ट्रार तथा प्रबंध निदेशक एवं सीईओ के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है.

संपादकीय
EDITORIAL

प्रिय पाठकगण,

मुझे 'यूनियन धारा' के इस अंक को प्रस्तुत करते हुए अत्यंत गर्व महसूस हो रहा है, चूंकि यह अपने बैंक की गरिमामय कॉर्पोरेट गृह पत्रिका के संपादक के रूप में मेरा पहला अंक है. यूनियन धारा ने अपने सुदीर्घ इतिहास में विषय-वस्तु और प्रकाशन के उच्च मानक बनाए रखे हैं, और हम चयनित विषय-वस्तु के साथ आगामी अंकों को प्रस्तुत करते हुए इस परंपरा को बनाए रखने का प्रयास जारी रखेंगे.

मैं इस अवसर का लाभ उठाते हुए गृह पत्रिका के प्रकाशन में अमूल्य मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु संपादकीय सलाहकार समिति के सम्माननीय सदस्यों के प्रति और अपने योगदान से गृह पत्रिका को वर्तमान रूप प्रदान करने वाले सभी स्टाफ सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ.

'यूनियन धारा' में हम अपने पाठकों को बैंकिंग उद्योग के नवीनतम रुझान और प्रगति के साथ-साथ सामान्य रुचि के विषयों पर भी अद्यतन जानकारी प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं. यह कार्य सेवारत और सेवानिवृत्त स्टाफ सदस्यों से बनी आंतरिक लेखकों के समूह की सक्रिय सहभागिता से ही संभव है. अत: मैं आप सभी से आग्रह करती हूँ कि अपनी लेखनी को तराशें और हमें अपने साहित्यिक योगदान भेजें.

यह अंक 'सामान्य अंक' के रूप में प्रस्तुत किया गया है और पाठक को वैविध्यपूर्ण विषयों के चयन का विकल्प देता है. इसमें समसामयिक विषयों पर चर्चा के साथ-साथ सामान्य रुचि के कई विषयों पर भी प्रकाश डाला गया है.

आशा है कि 'यूनियन धारा' का यह अंक आपको रुचिकर लगेगा. हम इस अंक के बारे में आपकी राय तथा मूल्यवर्धन हेतु आपके सुझाव का लाभ पाने की इच्छा रखते हैं, अत: हमें अपनी प्रतिक्रिया अवश्य भेजें.

आपकी,

(गायत्री रवि किरण)

Dear Readers,

I take immense pride in presenting this issue of Union Dhara, as this is my first issue as the editor of the esteemed corporate house magazine of our Bank. Union Dhara has maintained high standards of content and publication throughout its long history, and we shall strive to continue this tradition by bringing forth the ensuing issues with curated content.

I take this opportunity to thank the esteemed members of the Editorial Committee for their invaluable guidance in bringing forth the house magazine and all the staff members for their contributions which have given the house magazine its present shape.

We, at 'Union Dhara', endeavour to present our readers with the latest trends and developments in banking industry along with updated information on topics of general interest. This is possible only with the active participation of our pool of in-house writers comprising of both in-service and retired staff members. I urge one and all to brush up your writing skills and send in your literary contributions.

This issue is presented as a 'General issue' and offers the reader a kaleidoscopic choice of topics. It deliberates on current topics as well as provides insights into a variety of topics of general interest.

Hope this issue of 'Union Dhara' makes for an interesting read. We wish to benefit from your opinion regarding this issue and suggestions for further improvement, so kindly do send us your response.

Yours sincerely,

(Gayathri Ravi Kiran)

विश्व कैंसर दिवस क्लोज़ द केयर गैप

हौसला रखो तो जीतने की उम्मीद बढ़ जाती है,
वरना छोटी सी बीमारी भी भारी पड़ जाती है.

मनुष्य जीवन का आनंद तभी ले सकता है, जब उसका तन और मन स्वस्थ हो. जैसे-जैसे विज्ञान प्रगति कर रहा है, भौतिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि हो रही है, कहीं न कहीं लोगों की जीवन शैली भी बदल रही है. खान-पान, रहन-सहन असंयमित हो गया है. साथ ही बढ़ते प्रदूषण और बदलते पर्यावरण के कारण नई-नई बीमारियां लोगों को अपना शिकार बना रही हैं. अनेक रोगों का इलाज है, किन्तु कुछ रोग लाइलाज हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि जानकारी ही बचाव है. ऐसा ही एक रोग है- कैंसर.

कैंसर शब्द की उत्पत्ति का श्रेय यूनानी चिकित्सक हिप्पोक्रेट्स को दिया जाता है. इन्हें आधुनिक चिकित्सा का जनक माना जाता है. हिप्पोक्रेट्स ने गैर-अल्सर बनाने और अल्सर बनाने वाले ट्यूमर का वर्णन करने के लिए कार्सिनो और कार्सिनोमा शब्द का इस्तेमाल किया. इटली में चिकित्सकों ने पाया कि ट्यूमर को एक सर्जरी के माध्यम से हटाया जा सकता है. लेकिन उन्होंने यह भी पाया कि इस पर किसी भी प्रकार की दवा का कोई असर नहीं हो रहा है.

कैंसर एक ऐसी बीमारी है, जिसका नाम सुनते ही आम आदमी में खौफ बन जाता है. रोगी को मौत सामने दिखाई देती है. वह जिंदा रहने की उम्मीद ही छोड़ देता है. रोगी के साथ-साथ पूरा परिवार भीषण मानसिक परेशानी से गुजरता है. लोगों को लगता है कि इसका कोई इलाज नहीं है, पर ऐसा नहीं है. अगर सही समय पर कैंसर की पहचान हो जाए और समय पर मरीज का इलाज शुरू हो जाए, तो वह ठीक भी हो सकता है. इसके लिए जरूरी है कि लोग कैंसर को जानें, उसे समझें और उसके लक्षणों को पहचान कर चिकित्सक से संपर्क करें. चिकित्सकों का मानना है कि कैंसर को लाइलाज मानने के पीछे एक बड़ा कारण यह है कि कैंसर के मरीज लगभग आखिरी स्टेज में कैंसर के डॉक्टर के पास पहुंचते हैं. तब तक संक्रमण पूरे शरीर में फैल चुका होता है और मरीज की प्रतिरोधक शक्ति भी कमजोर पड़ जाती है.

विश्व कैंसर दिवस का उद्देश्य : विश्व कैंसर दिवस का उद्देश्य लोगों को कैंसर रोग के बारे में जागरूक करना है ताकि समय रहते इस रोग का पता लगाया जा सके एवं समय से इलाज प्रक्रिया को शुरू किया जा सके. इस दिवस के माध्यम से सभी नागरिकों तक इस रोग के उपचार हेतु समुचित चिकित्सा सहायता एवं अन्य सुविधाओं को सुनिश्चित किया जाता है तथा कैंसर से संबंधित सामाजिक भ्रांतियों को भी दूर किया जाता है. साथ ही सभी नागरिकों के सहयोग से इस रोग के वैश्विक उन्मूलन हेतु संकल्प लिया जाता है. आज के समय में कैंसर कोई बीमारी नहीं रह गई है बल्कि यह महामारी का रूप ले चुकी है. भारत में एक कैंसर एक्सप्रेस ट्रेन भी चलती है, जो कि कैंसर मरीजों के लिए जीवन रेखा है. इसमें अधिकतर यात्री कैंसर के मरीज और उनके इलाज के लिए साथ जाने वाले परिजन ही होते हैं.

विश्व कैंसर दिवस 2023 की थीम : विश्व कैंसर दिवस की इस वर्ष की थीम "**क्लोज़ द केयर गैप**" अभियान के दूसरे वर्ष को चिह्नित करती है. यह पिछले तीन वर्षों (2022, 2023 और 2024) के लिए विश्व कैंसर दिवस की थीम है. बहुवर्षीय अभियान का मुख्य उद्देश्य जोखिम, भागीदारी और अवसरों के माध्यम से कैंसर दिवस के बारे में वैश्विक जागरूकता बढ़ाना है और कैंसर देखभाल में असमानताओं को समझने और उन्हें दूर करने के लिए आवश्यक प्रगति करने के लिए कार्रवाई करना है. विश्व कैंसर दिवस 2023 के लिए आधिकारिक रंग नीला है.

विश्व कैंसर दिवस की शुरुआत : वैश्विक स्तर पर कैंसर के प्रति जागरूकता फैलाने एवं आम जनमानस को इस रोग के प्रति जागरूक करने के लिए अंतरराष्ट्रीय कैंसर नियंत्रण संघ (यूआईसीसी) द्वारा 4 फरवरी 2000 को विश्व कैंसर दिवस को मनाने की घोषणा की गई थी. प्रथम बार इस दिवस को कैंसर के विरुद्ध जंग के रूप में फ्रांस की राजधानी पेरिस में मनाया गया. वैश्विक स्तर पर कैंसर के खिलाफ कार्य करने के लिए अग्रणी संस्था (यूआईसीसी) की स्थापना वर्ष 1993 में जिनेवा, स्विट्ज़रलैंड में की गयी थी. कैंसर के विरुद्ध लड़ाई में यह संस्था प्रमुख भूमिका निभाती है. विश्व कैंसर दिवस 4 फरवरी को कैंसर के बारे में जागरूकता बढ़ाने और इसकी रोकथाम, पहचान और उपचार को प्रोत्साहित करने के लिए मनाया जाता है. विश्व कैंसर दिवस, 2008 में लिखे गए विश्व कैंसर घोषणा के लक्ष्यों का समर्थन करने के लिए (यूआईसीसी) के नेतृत्व में कार्यरत है. इसका प्राथमिक लक्ष्य कैंसर के कारण होने वाली मौतों को कम करना है.

कैंसर के कारण : कोशिकाओं के भीतर डीएनए में परिवर्तन के कारण कैंसर होता है. कोशिका के अंदर मौजूद डीएनए में बड़ी संख्या में अलग-अलग जीन मौजूद होते हैं, जिनमें से प्रत्येक में निर्देशों का एक सेट होता है, जो सेल को बताता है कि उन्हें क्या कार्य करना है, कैसे बढ़ना है और कैसे म्यूटेट होना है निर्देशों में किसी तरह की त्रुटि की वजह से कोशिका अपना सामान्य कार्य करना बंद कर देती है और फिर कोशिका कैंसर से संक्रमित हो जाती है. शरीर में मौजूद कोशिकाओं यानी सेल्स में दो ऐसे बदलाव आ जाते हैं जो नहीं आने चाहिए तब शरीर में कैंसर बनता है. पहला- किसी भी कोशिका का अनियंत्रित रूप से बढ़ना और दूसरा- किसी एक ऑर्गन की सेल का बहुत अधिक ग्रोथ लेते हुए अपनी जगह से दूसरे ऑर्गन तक फैल जाना. इन दोनों ही स्थितियों में कैंसर हो जाता है. इसके अतिरिक्त कैंसर के निम्न कारण हैं-

- तम्बाकू, पान, सुपारी, पान मसालों, एवं गुटकों के सेवन से मुंह, जीभ, खाने की नली, पेट, गले, गुर्दे और अग्नाशय (पेनक्रियाज) का कैंसर होता है.
- धूम्रपान-सिगरेट या बीड़ी के सेवन से मुंह, गले, फेफड़े, पेट और मूत्राशय का कैंसर होता है.
- शराब के सेवन से श्वास नली, भोजन नली और तालु में कैंसर होता है.
- धीमी आंच व धुएँ में पका भोजन (स्मोक्ड) और अधिक नमक लगाकर संरक्षित भोजन, तले हुए भोजन और कम प्राकृतिक रेशों वाला भोजन (रिफाइन्ड) सेवन करने से बड़ी आंतो का कैंसर होता है.
- कुछ रसायन और दवाईयों से पेट यकृत (लीवर) मूत्राशय का कैंसर होता है.
- लगातार और बार-बार घाव पैदा करने वाली परिस्थितियों से त्वचा, जीभ, होंठ, गुर्दे, पित्ताशय, मूत्राशय का कैंसर होता है.
- कम उम्र में यौन संबंध और अनेक पुरूषों से यौन संबंध द्वारा बच्चेदानी के मुंह का कैंसर होता है.

कैंसर की एक वजह प्रदूषण भी है, जहां सांस लेने से भी हानिकारक कण शरीर के अंदर प्रवेश करते हैं और लगातार ऐसी स्थिति में रहने के कारण कैंसर जैसी बीमारी शरीर को अपनी गिरफ्त में ले सकती है. जिस जगह रहते हैं अगर वहां आस-पास वातावरण में हानिकारक केमिकल्स की मौजूदगी रहती है तो कैंसर जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है. इसमें प्रदूषण और पैसिव स्मोकिंग जैसी समस्याओं की भी भूमिका होता है. पैसिव स्मोकिंग वह होती है, जिसमें आप खुद तो स्मोकिंग नहीं करते लेकिन स्मोकर के साथ रहने के दौरान उसके द्वारा हवा में छोड़ा गया धुआं और हानिकारक टॉक्सिन्स सांस के जरिए अंदर ले रहे होते हैं. क्रॉनिक स्वास्थ्य समस्याएं वाले लोगों में भी कैंसर का खतरा बढ़ सकता है.

कैंसर के चरण : एक बार जब चिकित्सक कैंसर का पता लगा लेते हैं तो फिर यह जानने की कोशिश करते हैं कि यह किस स्टेज में है. कैंसर का चरण जानकर ही चिकित्सक आपके इलाज के लिए अपनाए जाने वाले विकल्प पर विचार करते हैं और आपके ठीक होने की संभावनाओं का पता लगाते हैं. कैंसर का चरण जानने के लिए बोन स्कैन, पोजिट्रोन एमिशन टोमोग्राफी (पीईटी स्कैन) अल्ट्रासाउंड और एक्सरे किए जा सकते हैं, ताकि पता लगाया जा सके कि क्या कैंसर शरीर के अन्य हिस्सों में फैला है या नहीं. कैंसर को शून्य से चार चरणों में मापा जाता है. एक, दो, तीन, चार में से जितने ज्यादा स्तर का कैंसर होता है, यह उतना ही ज्यादा गंभीर होता है.

हालांकि कैंसर की बीमारी होने के कारणों में फैमिली हिस्ट्री की भूमिका बहुत बड़ी नहीं होती है, लेकिन अगर आपके परिवार में इस बीमारी का इतिहास रहा है तो हो सकता है कि म्यूटेशन अगली पीढ़ी में भी ट्रांसफर हुआ हो. इससे बचने के लिए आप डॉक्टर से बात कर और उनकी सलाह पर जेनेटिक टेस्टिंग करा सकते हैं.

कैंसर के कुछ प्रारम्भिक लक्षण-

- लम्बे समय से शरीर के किसी भी अंग में दर्दरहित गाँठ या सूजन.
- शरीर में किसी भी अंग में घाव, जो न भरे.
- स्तनों में गाँठ होना या रिसाव होना, योनी से अस्वाभाविक खून बहना, मल-मूत्र, उल्टी और थूक में खून आना.
- आवाज में बदलाव, निगलने में दिक्कत, लम्बे समय तक लगातार खाँसी, पहले से बनी गाँठ, मस्सों व तिल का अचानक तेजी से बढ़ना या पुरानी गाँठ के आस-पास नयी गांठों का उभरना.
- बिना कारण वजन घटना, कमजोरी आना या खून की कमी.

कैंसर का इलाज : मेडिकल क्षेत्र में हुई प्रगति के साथ आज कैंसर के कई इलाज उपलब्ध हैं. इलाज इस बात पर निर्भर करता है कि किस तरह का कैंसर है, किस स्टेज का कैंसर है, आपका स्वास्थ्य मौजूदा स्थिति में

कैसा है और किस तरह का इलाज अपने लिए बेहतर है. डॉक्टर के साथ मिलकर कैंसर इलाज के विभिन्न तरीकों के लाभ और नुकसान पर बात करके उनमें से सर्वोत्तम इलाज करा सकते हैं. कैंसर के इलाज का मकसद आपको कैंसर से मुक्त करना है.

- प्राथमिक उपचार- प्राथमिक उपचार का मकसद आपके शरीर से कैंसर सेल्स को पूरी तरह से हटाना या कैंसर सेल्स को मारना होता है. सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाले प्राथमिक उपचार में कैंसर की सर्जरी है. इसके तहत आपको रेडिएशन और कीमोथेरेपी दी जा सकती है.
- सहायक उपचार- इस उपचार का मकसद ऐसे कैंसर सेल को खत्म करना है, जो प्राथमिक उपचार के बाद भी रह जाते हैं. इस उपचार के जरिए कैंसर दोबारा होने की आशंका को खत्म किया जाता है.

असाध्य कैंसर का आयुर्वेद से उपचार : कैंसर के इलाज में आयुर्वेद बहुत कारगर है. आयुर्वेद में कैंसर के अनेक उपचारों के बारे में जानकारी मिलती है. आयुर्वेद में कैंसर के इलाज के लिए कुछ पद्धतियों का भी जिक्र है, जिसमें स्नेहन, स्वेदन, तप, उपनाह, अग्निकर्म, क्षार कर्म, शस्त्रकर्म जैसी विधियां प्रमुख हैं. इसके अलावा कैंसर को नियंत्रित करने के लिए पिप्पली, गिलोय, ब्राह्मी, हल्दी, अश्वगंधा, मुलेठी आदि जड़ी बूटियों का भी प्रयोग किया जाता है.

कैंसर से बचाव के उपाय : कैंसर का सर्वोतम उपचार बचाव है. यदि मनुष्य अपनी जीवन शैली में कुछ परिवर्तन करने को तैयार हो तो 60 प्रतशित मामलों में कैंसर होने से पूर्णत: रोका जा सकता है.

- विटामिन युक्त और रेशे वाला (हरी सब्जी, फल, अनाज, दालें) पौष्टिक भोजन खाएं.
- कीटनाशक एवं खाद्य संरक्षण रसायनों से युक्त पदार्थों को धोकर खाएं.
- धूम्रपान, तम्बाकू, सुपारी, चूना, पान मसाला, गुटका, शराब आदि का सेवन न करें.
- अधिक तले भुने, बार-बार गर्म किए तेल में बने और अधिक नमक में सरंक्षित भोजन न खाएं.
- नियमित व्यायाम करें, अपना वजन सामान्य रखें.
- मुंह में सफेद दाग या बार-बार होने वाला घाव या शरीर में किसी भी अंग या हिस्से में गांठ होने पर तुरन्त जांच करवाएं.
- महिलाएं माहवारी के बाद हर महीने स्तनों की जाँच स्वयं करें. इसका तरीका चिकित्सक से सीखें .
- दो माहवारी के बीच या माहवारी बन्द होने के बाद रक्त स्त्राव होना खतरे की निशानी है. पैप टेस्ट करवाएं.
- शरीर में या स्वास्थ्य में किसी भी असामान्य परिवर्तन को अधिक समय तक न पनपने दें.
- नियमित रूप से जाँच कराते रहें और अपने चिकित्सक से तुरन्त सम्पर्क करें.

उपसंहार : कैंसर एक गंभीर बीमारी है, जिसके मामले दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं. खान-पान के प्रति लापरवाही और हमारी खराब आदतों की वजह से यह गंभीर बीमारी तेजी से फैलती जा रही है. बच्चों से लेकर बड़ों तक कोई भी इस बीमारी की चपेट में आ सकता है. कैंसर अब एक सामान्य रोग हो गया है. हर दस भारतीयों में से एक को कैंसर होने की संभावना है. कैंसर किसी भी उम्र में हो सकता है. लेकिन यदि रोग का निदान व उपचार प्रारम्भिक अवस्थाओं में किया जाए तो इस रोग का पूर्ण उपचार संभव है. विश्व में कुल 2 करोड़ लोग कैंसर ग्रस्त हैं. इनमें हर वर्ष 90 लाख व्यक्ति और जुड़ जाते हैं. विश्व में हर वर्ष अनुमानित 40 लाख व्यक्तियों की कैंसर के कारण मृत्यु हो जाती है. भारत में लगभग 14.61 लाख (2021) अनुमानित मामले हैं, जिसको हम अपने अच्छे खानपान, रहन-सहन, आदतों में बदलाव और जागरूकता के द्वारा ही नियंत्रित कर सकते हैं.

प्रवीण कुमार
यूनियन लर्निंग अकादमी, गुरुग्राम

म्यूचुअल फंड में निवेश

आजकल कई प्रकार के निवेश विकल्प उपलब्ध हैं. इनमें से एक है म्यूचुअल फंड. आइए हम म्यूचुअल फंड के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बातों पर चर्चा करें.

म्यूचुअल फंड क्या है?

म्यूचुअल फंड एक पेशेवर फंड मैनेजर द्वारा प्रबंधित धन का एक पूल है. यह एक ट्रस्ट है जो कई निवेशकों से धन एकत्र करता है जो एक सामान्य निवेश उद्देश्य साझा करते हैं और उसे इक्विटी, बॉन्ड, मुद्रा बाज़ार और अन्य प्रतिभूतियों में निवेश करते हैं. इस सामूहिक निवेश से उत्पन्न आय / लाभ योजना के निवल आस्ति मूल्य (एनएवी) की गणना करके लागू खर्चों को घटाकर निवेशकों के बीच आनुपातिक रूप से वितरित किया जाता है. सीधे शब्दों में कहें तो बड़ी संख्या में निवेशकों द्वारा जमा किया गया पैसा ही म्यूचुअल फंड बनता है.

म्यूचुअल फंड यूनिट की अवधारणा को एक उदाहरण से समझते हैं :- मान लीजिए पाँच साथी चॉकलेट खरीदना चाहते हैं, और अपना पैसा एकत्रित कर चॉकलेट का एक बॉक्स खरीदते हैं. इसका परिणाम यह होता है कि प्रत्येक साथी चॉकलेट के बॉक्स में एक यूनिट धारक होता है, जो सामूहिक रूप से उन सभी के स्वामित्व में होता है, प्रत्येक व्यक्ति के पास बॉक्स के एक हिस्से का स्वामित्व होता है.

इसके बाद, आइए समझते हैं कि निवल आस्ति मूल्य (एनएवी) क्या है. जिस प्रकार एक इक्विटी शेयर का व्यापारिक मूल्य होता है, उसी प्रकार एक म्यूचुअल फंड यूनिट का निवल आस्ति मूल्य प्रति यूनिट होता है. एनएवी किसी विशेष दिन पर एक फंड द्वारा रखे गए शेयरों, बॉन्ड और प्रतिभूतियों का संयुक्त बाजार मूल्य है. एनएवी प्रति यूनिट किसी दिए गए दिन पर एक म्यूचुअल फंड योजना में सभी इकाइयों के बाजार मूल्य का प्रतिनिधित्व करता है. यह एनएवी सभी खर्चों और देनदारियों के साथ-साथ उपार्जित आय का योग है जिसे योजना में इकाइयों की बकाया संख्या से विभाजित किया जाता है.

म्यूचुअल फंड उन निवेशकों के लिए आदर्श है जिनके पास या तो निवेश के लिए बड़ी रकम की कमी है, या जिनके पास न तो बाजार पर शोध करने का झुकाव है और न ही समय है, फिर भी वे अपनी संपत्ति बढ़ाना चाहते हैं. म्यूचुअल फंड में एकत्रित धन पेशेवर फंड प्रबंधकों द्वारा योजना के घोषित उद्देश्य के अनुरूप निवेश किया जाता है. बदले में, फंड हाउस एक छोटा सा शुल्क लेता है जिसे निवेश से काट लिया जाता है. म्यूचुअल फंड द्वारा लगाए गए शुल्क विनियमित होते हैं और भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) द्वारा निर्दिष्ट कुछ सीमाओं के अधीन होते हैं.

भारत में विश्व स्तर पर सबसे अधिक बचत दर है. धन सृजन की यह प्रवृत्ति भारतीय निवेशकों के लिए पारंपरिक रूप से पसंदीदा बैंक एफडी और गोल्ड से परे म्यूचुअल फंड की ओर देखना आवश्यक बनाती है. हालांकि, जागरूकता की कमी ने म्यूचुअल फंड को निवेश का कम पसंदीदा तरीका बना दिया है.

म्यूचुअल फंड वित्तीय स्पेक्ट्रम में निवेश के लिए कई उत्पाद विकल्प प्रदान करते हैं. क्योंकि निवेश के लक्ष्य अलग-अलग होते हैं - सेवानिवृत्ति के बाद के खर्च, बच्चों की शिक्षा या शादी, घर की खरीददारी आदि के लिए पैसा - इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक उत्पाद भी अलग-अलग होते हैं. भारतीय म्यूचुअल फंड उद्योग ढेर सारी योजनाएं पेश करता है और निवेशकों की सभी प्रकार की जरूरतों को पूरा करता है.

म्यूचुअल फंड खुदरा निवेशकों को भाग लेने और पूंजी बाजार में अपट्रेंड से लाभ उठाने के लिए एक उत्कृष्ट अवसर प्रदान करते हैं. म्यूचुअल फंड में निवेश करना जहां फायदेमंद हो सकता है, वहीं सही फंड का चयन करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है. इसलिए, निवेशकों को फंड की उचित सावधानी बरतनी चाहिए और जोखिम-वापसी व्यापार-बंद और समय सीमा को ध्यान में रखना चाहिए या पेशेवर निवेश सलाहकार से परामर्श करना चाहिए. इसके अलावा, म्यूचुअल फंड निवेश से अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए, निवेशकों के लिए इक्विटी, कर्ज और गोल्ड जैसे फंड की विभिन्न श्रेणियों में विविधता लाना महत्वपूर्ण है.

हालांकि सभी श्रेणियों के निवेशक प्रतिभूति बाजार में अपने दम पर निवेश कर सकते हैं, फिर भी म्यूचुअल फंड एक बेहतर विकल्प है क्योंकि सभी लाभ एक पैकेज में मिलते हैं.

म्यूचुअल फंड कैसे काम करते हैं?

एक म्यूचुअल फंड निवेशकों को एक सामान्य निवेश उद्देश्य के साथ पैसा जमा करने की अनुमति देता है, जो योजना के उद्देश्यों के आधार पर विभिन्न परिसंपत्ति वर्गों में पैसा निवेश करते हैं.

एक निवेशक के रूप में, हम अपना पैसा स्टॉक, बॉण्ड और अन्य प्रतिभूतियों, यानी वित्तीय संपत्तियों में लगाते हैं. हम या तो उन्हें सीधे

खरीद सकते हैं या म्यूचुअल फंड जैसे निवेश साधनों का उपयोग कर सकते हैं. प्रत्यक्ष निवेश पर म्यूचुअल फंड के कुछ फायदे हैं. उदाहरण के लिए, हो सकता है कि हमारे पास खुद बाजार के रुझान को समझने का कौशल न हो, या हमारे पास बाजार को बारीकी से समझने का समय न हो. इस मामले में म्यूचुअल फंड एक बढ़िया विकल्प हैं क्योंकि वे पेशेवरों द्वारा प्रबंधित किए जाते हैं. आइये चर्चा करें कि म्यूचुअल फंड कैसे काम करता है.

म्यूचुअल फंड एक निवेश विकल्प के रूप में : म्यूचुअल फंड एक निवेश साधन है जो एक सामान्य निवेश उद्देश्य के साथ निवेशकों से पैसा एकत्र करता है. इसके बाद यह योजना के उद्देश्यों के आधार पर इक्विटी और बॉण्ड जैसे विभिन्न परिसंपत्ति वर्गों में पैसा निवेश करता है. एक आस्ति प्रबंधन कंपनी (एएमसी) निवेशकों की ओर से ये निवेश करती है. म्यूचुअल फंड का प्रबंधन करने वाली टीम उन शेयरों को चुनती है जिनमें निवेशकों का पैसा स्पष्ट रूप से परिभाषित निवेश उद्देश्यों के आधार पर लगाया जाता है.

एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड निवेश : म्यूचुअल फंड के लिए एक व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी) एक अनुशासित तरीके से निवेश करना आसान बनाता है. यह एसआईपी विकल्प बैंक में आवर्ती जमा (आरडी) खोलने के समान है. आरडी के समान ही हमारा एसआईपी हमारे बैंक से निर्दिष्ट अंतराल (आमतौर पर हर महीने) पर एक निर्दिष्ट राशि काट कर निवेश करता है.

आरडी और एसआईपी में एक महत्वपूर्ण अंतर है. आरडी आपके निवेश पर एक निश्चित ब्याज देता है. आपके म्यूचुअल फंड एसआईपी से मिलने वाला प्रतिलाभ म्यूचुअल फंड योजना की निवल आस्ति मूल्य (एनएवी) पर निर्भर करता है. एनएवी अंतर्निहित प्रतिभूतियों के वर्तमान बाजार मूल्य का प्रतिनिधित्व करता है और इसमें दैनिक उतार-चढ़ाव होता है.

म्यूचुअल फंड एसआईपी के कुछ फायदे -

1. एकमुश्त भुगतान करने के बारे में चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है. हम हर महीने छोटी, प्रबंधनीय राशि का निवेश कर सकते हैं.
2. नियमित और व्यवस्थित दृष्टिकोण निवेशकों के बीच अनुशासन बनाता है. एक बार जब हम स्वत: नामे के लिए एक स्थायी अनुदेश देते हैं, तो एसआईपी निवेश अपने आप हो जाएगा.
3. चूँकि एनएवी में उतार-चढ़ाव होता है, इसलिए हमारे निवेश की प्रत्येक किस्त के साथ अलग-अलग संख्या में यूनिट खरीदे जाते हैं. इसमें समय के साथ निवेश की औसत लागत को कम करने की क्षमता है, इस प्रकार यह हमारे प्रतिलाभ को अधिकतम करता है.

म्यूचुअल फंड में एकमुश्त निवेश - जब हम किसी म्यूचुअल फंड में एकमुश्त राशि का निवेश करते हैं, तो इसका मतलब है कि म्यूचुअल फंड में एकमुश्त बड़ी राशि लॉक हो जाती है. एकमुश्त निवेश में एक निवेशक के लिए उपलब्ध संपूर्ण धन का निवेश शामिल होता है. उदाहरण के लिए, यदि कोई अपने पास मौजूद पूरी राशि को म्यूचुअल फंड या इसी प्रकार के निवेश साधनों में निवेश करना चाहता है, तो इसे एकमुश्त निवेश कहा जाता है.

म्यूचुअल फंड को प्रभावित करने वाले कारक : म्यूचुअल फंड में निवेश करते समय हमें कई कारकों और शर्तों के बारे में पता होना चाहिए:-

निवल आस्ति मूल्य (एनएवी) : म्यूचुअल फंड की कुल लागत प्रति फंड यूनिट की कीमत पर निर्भर करती है, जिसे निवल आस्ति मूल्य (एनएवी) के रूप में जाना जाता है. एनएवी हमें यह समझने में मदद करता है कि एक विशिष्ट म्यूचुअल फंड योजना कैसा प्रदर्शन कर रही है. म्यूचुअल फंड प्रतिभूति बाज़ार में निवेश करते हैं. प्रतिभूति बाज़ार मूल्य हर दिन बदलता है. इसी प्रकार एक योजना का एनएवी भी हर दिन बदलता है.

प्रबंधनाधीन आस्ति (एयूएम): म्यूचुअल फंड निवेशकों से एकत्रित धन का उपयोग करके संपत्ति खरीदते हैं. इन संपत्तियों में स्टॉक, बॉण्ड और अन्य प्रतिभूतियाँ शामिल हैं. म्यूचुअल फंड द्वारा खरीदी गई सभी संपत्तियों का कुल मूल्य प्रबंधनाधीन आस्ति (एयूएम) कहलाता है.

निधि प्रबंधक: ये बाजार के विशेषज्ञ हैं जिनके पास प्रतिभूति बाज़ार की तत्काल महत्वपूर्ण जानकारी रहती है. निधि प्रबंधक सबसे बड़े और सबसे अधिक लागत प्रभावी पैमाने पर व्यापारों को निष्पादित करते हैं. ये प्रबंधक पूर्णकालिक, उच्च स्तरीय पेशेवर निवेशक हैं. वे उन कंपनियों की निगरानी करते हैं जिनमें उनके द्वारा प्रबंधित म्यूचुअल फंडों ने निवेश किया है.

विविधता: आमतौर पर लोग कहते हैं कि सब कुछ दाँव पर नहीं लगाना चाहिए. यह निवेश के मामले में भी सही है. म्यूचुअल फंड योजनाएं उद्योगों और क्षेत्रों की एक पूरी शृंखला, विभिन्न प्रकार की संपत्ति, और बहुत कुछ में निवेश करती हैं. योजनाएँ ब्लू-चिप स्टॉक, प्रौद्योगिकी स्टॉक, बॉण्ड या स्टॉक और बॉण्ड के मिश्रण पर ध्यान केंद्रित कर सकती हैं.

चलनिधि- ओपन एंडेड बनाम क्लोज एंडेड म्यूचुअल फंड : भारत में म्यूचुअल फंड को उनकी निवेश संरचना और तरलता के आधार पर दो प्रकारों में बांटा जा सकता है - ओपन-एंडेड निधि या क्लोज-एंडेड निधि. ओपन एंडेड निधि को कभी भी खरीदा या बेचा जा सकता है, क्लोज्ड एंडेड फंड्स को केवल आरंभ के दौरान ही खरीदा जा सकता है और फंड निवेश अवधि समाप्त होने पर इसे बेचा जा सकता है.

निष्कर्ष : हम शुरू से ही म्यूचुअल फंड में निवेश करके पैसा बचा सकते हैं, और संपत्ति बढ़ा सकते हैं. शब्द 'निवेश' शुरुआत में डरावना लग सकता है - लेकिन एक वित्तीय सलाहकार से परामर्श करके और म्यूचुअल फंड के बारे में जानने से हमें निवेश की दिशा में पहले कुछ कदम उठाने में मदद मिल सकती है और इस प्रकार समय के साथ एक अच्छी वित्तीय नींव तैयार हो सकती है.

प्रभाकर पाल
डिजिटल बैंकिंग यूनिट, अगरतला

Financial Investment - A Perspective

Investment can be defined as a decision for allocation of hard-earned money of an individual or investment company in financial instruments to achieve the desired financial goal. In the process of investment, the money involved has to keep growing automatically without any intervention of the primary investor. The idea of investment is actually not nearly as difficult as it looks if certain basic principles of investment are followed in the true sense. Selecting suitable assets and building a diversified portfolio for attaining maximized returns is the main objective behind investments.

The following basic principles of investment can be helpful in achieving investment goals.

Measurement of present scenario: In a prudent investment decision, measurement of the present scenario is very important. Assessing the current situation involves assessment of the capacity of the investor, assessment of the economic condition at micro and macro level, stability of management, present business conditions and future prospects of the company where the investment is to be made.

Establishment of investment goal: Every individual is different and the objective behind a decision is also different from person to person. Some investors need short term high returns, some invest with an objective of getting returns in the form of stable and steady growth. Generally young investors prefer investing in highly volatile stock market whereas an elderly investor would like to protect their funds with an objective of coupon returns. Portfolios to suit the requirement of the investor should be made according to the established investment goal of the investor.

Measurement of risk bearing capacity: Risk is the probability of potential losses in any credit or investment decision. There is an old saying which goes "More Risk More Gain & Less Risk Less Gain". Many times emotional investment decision results in negative returns and some times zero returns too. The modern portfolio theory argues that risk and return should not be calculated in silos, rather it should be evaluated as to how an investment decision affects the portfolio as a whole. There are risk mitigation tools available in portfolio construction to diversify portfolio as per the risk bearing capacity of the investors.

Portfolio Building & Portfolio Diversification: After measurement of the risk bearing capacity of the

investor, the next task is to build a portfolio that can adjust the risk and can result in optimum returns. In this process, fund managers choose the option to diversify funds and build a portfolio. This practice involves spreading the fund in different investment avenues so that the price volatility in one investment may be balances the other. This is designed to abserb the potential losses of the portfolio due to price volatility in one particular instrument or sector over a period of time.

Asset Allocation: Asset allocation is a practice to divide total investments in different assets such as stock, bond, cash etc. The allocation of the investment is highly customized, and it depends on the priority of the primary investor. If any individual is expecting high return over his investment, he/she needs to look at the stock market. The debt funds and bonds ensure safety of the principal and also ensures a moderate return on the principal, and this option may be opted by an investor who is highly risk averse.

Investment Option: There are many investment options available in the financial environment. An investor can choose based on his investment goals and his risk bearing capacity. There are many factors which can be categorized on different parameters like.

a- Source of income

b- Liquidity in investment option

c- Age of investor

d- Risk bearing capacity

e- Time frame/Maturity

f- Taxation etc

To meet the above targets, there are many investment options available like stocks, debt instruments, government securities, Kisan Vikas Patra, Mutual Fund, Bank's Tax savers, Bank's FD, Sukanya Samridhi Yojna and other government sponsored schemes.

Re-checking and balancing the portfolio: It is a process of revisiting investment decisions. It is a kind of an overhauling activity of the entire portfolio which involves buying and selling of potential instruments to avoid the risk of losses and increase in potential gain. This is a strategy of bringing a portfolio that has deviated away from one's target asset allocation back into line.

Things to be avoided in Investment decision:

In order to maintain a good portfolio and keep away from potential losses, few strategies can be strictly followed during portfolio building. as given below :

1. Avoid speculation and baseless ideas
2. Don't fall in love with one stock or company
3. Lack of patience may lead to loss of opportunity of gain
4. Too much of investments in one option or sector may result in huge losses
5. High cost of investment will lead to less gain
6. Fund lock-in period may result in locking potential gain, so choose lock-in maturity instruments judiciously
7. Do not frequently change investment goals

Before starting investing an investor should decide his goals. Once goals are fixed the ground work is ready. Now as per the investment goals the available investment instruments should be opted. To avoid losses one needs to revisit the portfolio from time to time. So why wait? This is the correct time, start investing as per your desired financial goals.

Shahid Kabeer
ZLC, Visakhapatnam

Popular Titbits of Financial World

1. FD Laddering

Did you know that laddering your fixed deposits can help optimize returns and manage your liquidity requirements much better?

It makes no sense to start laddering your FDs when the interest rates are reversing. That is exactly what is happening right now with the FD rates set to increase in India in the near future. If you look at which banks offer highest FD interest rates, then you will notice that there is a gradual increase in FD rates in 2022 and going into 2023.

What is Fixed Deposit Ladder?

When you start making an FD ladder, you essentially divide the amount available into parts and create multiple FDs of different maturity deposits initially, instead of booking one big FD for the long term.

Suppose you want to make FD of ₹ 10 lakh. One way is to create one FD of ₹ 10 lakh and be done with it. But what to do if you expect interest rates to rise soon and don't want to lose out on that? You also don't want to keep waiting for rates to rise. This is where the FD laddering technique comes in handy.

FD rates have been quite low for a very long time. But now, the FD interest rates are all set to increase in India. So, this is a good time to consider laddering your FDs if you wish to keep money in fixed deposits.

2. Black Swan Event

What is Black Swan?

A Black Swan is an unpredictable event that is beyond what is normally expected of a situation & has potentially severe consequences. Black swan events are characterized by their extreme rarity, severe impact, and the widespread insistence they were obvious in hindsight.

Key Takeaways:-

- A Black Swan is an extremely rare event with severe consequences.
- It cannot be predicted beforehand, though after the fact, many falsely claim it should have been predictable.
- Black Swan events can cause catastrophic damage but even the use of robust modelling cannot prevent a black swan event.
- Reliance on standard forecasting tools can both fail to predict and potentially increase vulnerability to black swans by propagating risk & offering false security.
- The term was popularized by the book, The Black Swan by Nassim Nicholas Taleb.

3. Non-Fungible Tokens

Non-fungible tokens are cryptographic assets on a blockchain with unique identification codes and metadata that distinguish them from each other.

Unlike cryptocurrencies, they cannot be traded or exchanged at equivalency.

Key Takeaways :

- NFTs are unique cryptographic tokens that exist on a blockchain and cannot be replicated.
- NFTs can represent real world items like artwork & real estate.
- Tokenizing these real-world tangible assets makes buying, selling & trading them more efficient while reducing the probability of fraud.
- NFTs can also function to represent individual identities, property rights & more.
- In recent past, Jack Dorsey, co-founder of Twitter made NFT of his first tweet which was sold for $ 2.9 million.
- Bollywood celebrity Amitabh Bachchan also made NFTs of of several digital photographs & related pics which got sold for ₹ 7.18 Crore in 2022.

Rahul Jain
Zonal Office, Bengaluru

इंद्रधनुष

विस्तृत अनंत आसमान में बिखरती छटा
सूर्य के विपरीत इस आकाश में है डटा.
प्रकृति का आवरण अपने अंदर समेटे,
मनमोहक सतरंगी दिखती यह घटा.

धनुष के आकार में कितना सुंदर दृश्य है.
मानो सूर्य को मोहित करने का परिदृश्य है.
टपाटप बूंदे गिरती महान धरती पर,
विज्ञान का रहस्यमय यह विशेष है.

हृदय में समा जाए इसका अनुपम रूप.
कहीं पर बादल की घटा कहीं पर धूप.
मन को रोमांचित करती यह तस्वीर,
दिलों को भा जाए इंद्रधनुष का यह रूप.

सभी की निगाहें असीमित क्षितिज पर.
कभी पूरब कभी पश्चिम दिशा विपरीत पर.
रंगों के परिवर्तन का यह विस्मयी खेल,
आंखों में छुप जाए आश्चर्य घटना जागृत पर.

अनेकता में एकता का यह जीवंत प्रतीक.
भारत जैसे देश के लिए है कितना सटीक.
अनेक भाषाएं, विभिन्न बोलियां एवं संस्कृति,
फिर भी राष्ट्रीय एकता की होती जीत.

इंद्रधनुष हमारे लिए प्रेरणादायक है.
सभी प्रांतों एवं क्षेत्रों का जननायक है.
एकजुटता से करें हम देश के प्रति समर्पण.
भारत बनता विश्व में महानायक है.

इंद्रधनुष सा अनुपम, अद्भुत अपना देश.
समृद्ध विरासत, इतिहास का हर भेष.
जय हो इंद्रधनुष की, जय भारत की,
विश्व मंच पर सदैव बिखेरता नवोन्मेष.

कौशल किशोर शुक्ला
क्षे.का. पटना

परिंदे की चाह

पंछी बनकर मैं उड़ना चाहता हूँ
बादलों पर सवार हो कर अब जीना चाहता हूँ
साँसों के साथ मैं खेलना चाहता हूँ
कहीं दूर जाकर अब खोना चाहता हूँ

न कोई बंदिश हो, हो बस मेरी उड़ान
इस दुनिया से अलग हो मेरी पहचान
हवा में आज मैं भी उड़ना चाहता हूँ
एक पंछी की तरह दुनिया घूमना चाहता हूँ

पानी से ठंडक को ले धूप में जलना चाहता हूँ
गांव की धूल लेकर शहर में जाना चाहता हूँ
मैं पंछी इन लम्हों को जीना चाहता हूँ
अपनी किस्मत का सट्टा लगाना चाहता हूँ

पानी की धार में पर कट गए
सूरज की गर्मी से हौसले जल गए
आज मैं पिंजरे में कैद हूँ
आज भी आशयां की खोज में हूँ

तपन बिलखीया
क्षे. का. आणंद

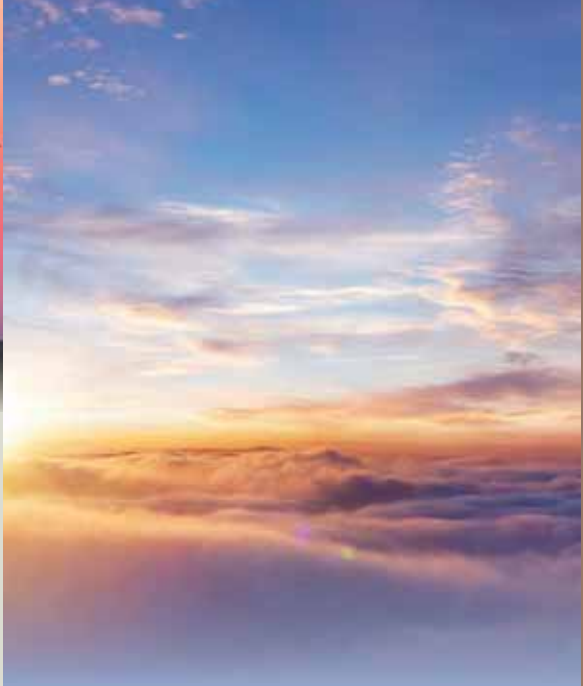

THE SKY...

If freedom has a shape.
It would be the Sky!!
It's clouds flying free,
To wherever they wanna be.
It's stars shining brightest,
On the nights that feel darkest.
It's orange sunsets,
Making the birds blush.
It's secret galaxies,
And floating rocks,
The burning sun and dozens of moons,
The pitch dark nights,
And sunny blues,
Countless mystics the sky holds,
An infinite cosmos!
Scary! yet beautiful.
It's vast emptiness,
Feeling like an eternal hug
Reassuring that the universe
is always with you !!

K Alekhya
Kalyan Nagar Branch

शौर्य की गाथा

लिखते-लिखते, कहते-कहते,
शौर्य की गाथा गाएंगे

सर उठा कर गाएंगे,
गाते ही हम जाएंगे
..... शौर्य की गाथा

सत्तावन की क्रांति से हम,
सीखते ही जाएंगे

महारानी लक्ष्मी को भी हम,
शीष झुकाते जाएंगे
..... शौर्य की गाथा

वीर शिवाजी के शौर्य,
बापू के धैर्य की भी गाथा गाएंगे

वीर पुरुष के बलिदानों को,
ज़ाया नहीं गवाएंगे
..... शौर्य की गाथा

देश में फैले अन्धकार को,
मिटाते ही जाएंगे

जाते-जाते कहते-कहते,
दिये जलाते जाएंगे
..... शौर्य की गाथा

इंच मात्र सी धरती पर भी,
हक से लड़ते जाएंगे

नहीं किसी को देंगे इसको,
रक्षक हम बन जाएंगे
..... शौर्य की गाथा

रक्त बहा उनका हम,
धरती मां की शान बढ़ायेंगे
..... शौर्य की गाथा

गद्दारी न माटी से हो,
तिलक लगाते जाएंगे

गद्दारों को मिटा-मिटा कर,
लड़ते ही हम जाएंगे
..... शौर्य की गाथा

राशि जैन
क्षे. का. भटिंडा

कौन हो तुम ...

सब पूछ रहे हैं आखिर कौन हो तुम ....
जिंदगी की ऊहापोह में गर्म तकिया सी हो तुम,
जलते हुए रेगिस्तान में एक बगिया सी हो तुम.
सब पूछ रहे हैं आखिर कौन हो तुम ....
रात आलस में डूबी आँखों के लिए चाय सी हो तुम,
मेरे हर एक गलत फैसले की सही राय सी हो तुम.
सब पूछ रहे हैं आखिर कौन हो तुम .....
मेरी जिंदगी की हर हार के बाद खड़ी जीत सी हो तुम,
मेरे जन्मों की मीत सी हो तुम.
मेरी उलझनों में दवा सी असरदार हो तुम,
मेरी जिंदगी के हिचकोले थामें एक पतवार हो तुम.
सब पूछ रहे हैं आखिर कौन हो तुम .....
मेरी लिखी प्रत्येक पंक्ति की, नायिका सी हो तुम,
मेरी बेसुरी जिंदगी की गायिका सी हो तुम.
सब पूछ रहे हैं आखिर कौन हो तुम .....

विशाल अवस्थी
क्षे का पंजागुट्टा - हैदराबाद

Travel Diaries: Munnar

I want to lose my soul and forget the rest of the world in this mystical place once more,
Where mountains always appear kissing the sky under the veil of floating clouds and where tea plants blanket the place with their own colour.

I want to feel the breath of the tea leaves to know how they breathe to look so fresh all the time.
I want to hold the entire tea plantation in my palms to steal all warmth from them on this wintry day to warm my shivering soul.

Hey beautiful #Munnar, born in god's own county, call me one more time to your abode.
I will come rushing to you to relive some beautiful memories, make new, carry some in my heart and leave some for you to compel you to remember this unknown visitor all the time.

Now when I see the selfies, the family pictures, the bills, the belongings bought from vendors and feel the good times and the memories remind me of your endless magnificence.

My body still shivers when I feel that touch of winds
My eyes still glow with light when I feel your beauty spread.

Can you still see my foot marks that I left behind when running there out of ecstasy ?
Can you hear my, laughter, happiness,

Archana Senapati
ZO, Bhubaneswar

Climate Risk and Sustainable Finance

Definition : Climate risk refers to risk assessments based on formal analysis of consequences, and responses to the impact of climate change and how societal constraints shape adaptation options. Common approaches to risk assessment and risk management strategies are based on natural hazards and have been applied to climate change impacts although there are distinct differences. Based on a climate system that is no longer staying within a stationary range of extremes, climate change impacts are anticipated to increase the coming decades despite mitigation efforts. Ongoing changes in the climate system complicates assessing risks. Applying current knowledge to understand climate risk is further complicated due to substantial differences in regional climate projections, expanding numbers of climate model results, and the need to select a useful set of future climate scenarios in their assessments.

One of the primary roles of the Inter-governmental Panel on Climate Change (IPCC), which was created by the United Nations Environment Programme (UNEP) and the World Meteorological Organization (WMO) in 1988, is to evaluate climate risks and explore strategies for their prevention and publish this knowledge each year in a series of comprehensive reports. International and research communities have been working on various approaches.

Natural disasters and diseases : According to the IPCC Fifth Assessment Report: "Impacts from recent climate-related extremes, such as heat waves, droughts, floods, cyclones, and wildfires, reveal significant vulnerability and exposure of some ecosystems and many human systems to current climate variability".

The following future impacts can be expected:

1. Temperature increases
2. Extreme weather
3. Bumper crops and crop failure
4. Polar cap melting
5. Changes to Earth's eco-systems
6. Epidemics
7. Disruption of the North Atlantic current

Introduction : Mr. Kofi Annan, the erstwhile Secretary-General of the UN, remarked at the Paris Climate Agreement, "The world is reaching the tipping point beyond which climate change may become irreversible. If this happens, we risk denying present and future generations the right to a healthy and sustainable planet - the whole of humanity stands to lose". These words ring truer today than ever before. There is no denying the fact that the climate of Earth has varied throughout its history given the vagaries of the forces of nature. However, multiple independent lines of investigation have provided increasingly compelling evidence that anthropogenic activities have significantly exacerbated the process of climate change since the industrial revolution.

As per the report of the UN's Inter-governmental Panel on Climate Change dated August 9, 2021, the emissions of greenhouse gases (GHGs) from human activities are responsible for 1.1°C of warming since pre-industrial times. While this change is seemingly small, the current temperatures are unprecedented in comparison to the levels over the past 12,000 years affecting living conditions in many parts of the world.

Closer home, the latest annual report by the India Meteorological Department (IMD) on the country's climate stated that 2021 was not only the fifth warmest year since 1901, but in the last decade, 2012-2021, was also the warmest on record. Moreover, 11 of the 15 warmest years on record were between 2007 and 2021. The rise in average temperatures could have a cascading effect on extreme weather events, crop patterns and urban disaster management. India recorded 756 instances of natural disasters (landslides, storms, earthquakes, floods, droughts, etc.) since 1900, with a total of 402 and 354 events recorded during 1900-2000 and 2001-2021

respectively, indicating the preponderance of tail events of late.

A report of the Ministry of Earth Sciences, Government of India has concluded that since the middle of the twentieth century, India has witnessed a rise in average temperature; a decrease in monsoon precipitation; a rise in extreme temperature, droughts, and sea levels; as well as increase in the frequency and intensity of severe cyclones. There is compelling scientific evidence that human activities have influenced these changes in regional climate. These developments pose challenges for humanity and warrant an immediate, large-scale and rapid reduction in GHGs.

Concurrently, climate change is increasingly being recognized globally as a source of financial risk for banks. The uncertainty about the timing and severity of climate-related and environmental risk certainly threatens the safety, soundness and resilience of individual Regulated Entities (REs) and, in turn, the stability of the overall financial system. It is therefore recognized that the REs should steadily manage the risks and opportunities that may arise from climate change and environmental degradation. Further, with the increasing threat of climate change and the associated physical damage, change in market perception and shift in preferences towards more environmental-friendly products and services, the financial, reputational and strategic risk implications are becoming increasingly prominent.

Furthermore, recognizing climate-related financial risk may pose risks to global financial stability, Financial Stability Board (FSB) has chalked out a roadmap to ensure that climate risks are properly reflected in all financial decisions. The roadmap supports international coordination by bringing together the work of international organisations and national authorities on the various initiatives in this area. The FSB will focus on four pillars namely, disclosures, data, vulnerabilities analysis, and regulatory and supervisory approaches. More specifically, it would be monitoring and helping to support progress in the achievement of consistent climate related financial disclosures.

Strategy on Climate Change : Globally the efforts to address climate change have been growing across jurisdictions and an increasing number of central banks are either contemplating or are in the process of taking action on this aspect as part of their mandates. Further, climate change risk is also ascending the hierarchy of threats to financial stability across advanced and emerging economies alike and consequently, the need for an appropriate framework to identify, assess and manage climate related risk has become imperative. Notwithstanding the need to mitigate the risks arising out of extreme climate events, there is an increasing need for the financial system to move towards green financing, keeping in mind the social and developmental objectives of the country.

Therefore, keeping in view our national commitments and priorities, the Reserve Bank intends to prepare a strategy based on global best practices on mitigating the adverse impacts of climate change, learnings from participation in standard-setting bodies and other international fora. The broad thrust of the strategy is presented under the following heads:

1. Overview of climate related risk and its unique characteristics as applicable to REs
2. Broad guidance for all REs to have (i) appropriate governance (ii) strategy to address climate change risks and (iii) risk management structure to effectively manage them from a micro-prudential perspective
3. Exploring how forward-looking tools like stress testing and climate scenario analysis can be used to identify and assess vulnerabilities in REs
4. Climate risk related financial disclosure and reporting for REs
5. Capacity Building
6. Voluntary Initiatives

Banks must learn to factor in : On July 24, 2022 RBI Governor Shaktikanta Das announced that the central bank will soon issue a consultation paper on climate risks for banks and financial sector.

The intent is to seek stakeholder views and suggestions for a more informed and measured approach towards preparing the banking sector to internalise climate risk.

The endeavour is in line with RBI's April 2021 decision to join as a member of Network for Greening the Financial System (NGFS) — a coalition that brings together central banks and supervisors working on climate and green finance issues from across the globe.

Climate risk, even a decade back, was not a prerogative of either the policymakers, regulators, or the businesses. However, with the countries becoming increasingly exposed to climate related catastrophe (like wildfires in California, Australia, and Brazil) and extreme weather events (droughts or floods) often causing severe disruption in supply chain or hampering business continuity, the issue of climate change has come to the fore.

The risk is further compounded by mitigation related regulatory policies (say due to a carbon tax or cap on fossil fuel usage or banning of diesel cars) that imposes high adjustment costs for the businesses.

Growing awareness : According to the 11th Annual EY/ IIF (Ernst & Young Global Ltd. / Institute of International Finance) bank risk management survey released in 2021, over 91 per cent of the Chief Risk Officers (CRO) and 96 per cent of the board members viewed climate change as the top emerging risk in the next five years.

Climate risks in the BFSI (Banking, Financial Services and Insurance) sector can be classified into two major categories: (a) risks arising from economic costs and financial losses due to physical impacts of climate change (physical risks) and (b) risks precipitated by significant losses or cost of adjustment because of transition to a low-carbon trajectory (transition risks).

Both these risks, arising out of climate related factors may eventually get manifested through traditional risk channels namely: (1) credit risk either due to reduced borrower's ability to repay and service debt or bank's inability to fully recover the loan because of default ; (2) market risk, say, due to reduction in the financial value of assets, and/or re-pricing of securities and derivatives due to stringent climate regulation; (3) liquidity risks on account of banks' reduced access to stable source of funding because of changing market conditions; (4) operational risk due to legal and compliance risk pertaining to climate-sensitive investment; and finally (5) reputational risk due to changes in market and consumer sentiment due to changing consciousness on climate.

As traditional risk management approaches are not appropriate for measuring climate risks, regulatory authorities and businesses have opted for stress tests to assess the extent of a firms' vulnerability to climate change.

Global experience : The frontrunners in that direction include The Netherlands, France, Banking Union in Europe, the UK, Australia, Singapore, and Canada.

In Asia, the Hong Kong Monetary Authority has also started publishing climate risk guidelines and announcing future climate stress tests. The scenario in the BFSI sector globally is also progressively transforming to align with the imperative of internalising climate risk.

Climate risks also find ample recognition in the European Central Bank's (ECB) supervisory risk assessment and in the Climate Financial Risk Forum (CFRF) established by the Prudential Regulation Authority (PRA) and the Financial Conduct Authority in UK.

In May 2021 SEBI mandated top 1,000 listed companies in India by market capitalisation to report Business Responsibility and Sustainability Report (BRSR) starting from the financial year 2022-23.

The reporting is expected to bring in greater transparency and enable market participants to identify and assess sustainability-related risks and opportunities, including climate risks. In the slew of these developments, a recent proposal by SEC (Securities and Exchange Commission) floated in March 2022 in the US on climate-related disclosure rules for public companies, which includes banks and other financial services groups, also deserves special mention.

Although the wind has started to blow in the right direction, a critical question that remains to be explored in the Indian context is whether the stakeholders in the BFSI sector, especially the banks, are ready to internalise climate risk.

A recent survey in March 2022 by Climate Risk Horizons (CRH), a think-tank, analysed 34 largest scheduled commercial banks in India by market capitalisation on the Bombay Stock Exchange (BSE) representing ₹26.81 trillion as on March 31, 2021. They inferred that only a handful of Indian banks have factored in climate risk, albeit only partially, in their business strategies.

Challenges for banks : Internalisation of climate risk factors by banks is very much on the agenda especially with RBI taking up the cudgels. However, given the complexity in climate risk modelling, the biggest challenge for a bank would be to measure the impact of climate risk while undertaking lending and investment decisions and further integrating that risk in the existing risk and valuation frameworks.

According to a recent Bloomberg survey for European banks, most banks reported that they could only confine themselves to a qualitative assessment of climate risks during the loan approval processes, which could at best be considered as subjective. The quantification of climate risk, albeit crucial, may require quality data that is not always available due to inadequate and at times inconsistent corporate disclosure.

The second challenge that a bank faces is dearth of standardised industry models to embed climate risk into enterprise risk management framework.

The third critical challenge is the lack of skilled professionals who have clear understanding of both the worlds - climate risk and finance.

Arun Kumar Gupta
Staff Training Centre-Mangaluru

स्वर्ण आभूषण के बदले ऋण संबंधी अनुपालन

प्रस्तावना : आज भारतीय बैंकिंग जटिल प्रतिस्पर्धा के दौर से गुजर रही है. हर बैंक अपने कारोबार में अधिकाधिक वृद्धि के द्वारा अपना परिचालनगत लाभ/ आय और निवल लाभ में वृद्धि के साथ ही साथ बाजार में अपनी अधिकाधिक हिस्सेदारी सुनिश्चित करना चाह रहा है. एक ओर जहाँ ऋण प्रदान करना बैंकों का सर्वाधिक प्रमुख कार्य है, वहीं आय अर्जन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत भी है. बैंकों द्वारा जमा पर जो ब्याज दिया जाता है, ऋण पर उससे अधिक ब्याज प्रभारित किया जाता है. ऋण पर प्रभारित ब्याज और जमा पर प्रदत्त ब्याज का अंतर अर्थात यह ब्याज अंतर ही बैंकों के लिए आय है. साथ ही प्रलेखीकरण शुल्क, प्रसंस्करण शुल्क, निरीक्षण शुल्क इत्यादि के रूप में भी बैंकों को आय की प्राप्ति होती है. यही कारण है कि आज हर बैंक ऋण पर बहुत अधिक ज़ोर दे रहा है और इसीलिए ऋण की मात्रा में वृद्धि के लिए एक ओर ऋण की प्रक्रिया को सरल, सुगम और त्वरित बनाया गया है तो दूसरी ओर प्रसंस्करण शुल्क एवं ब्याज दर को यथासंभव कम किया गया है तथा कतिपय मामलों में प्रसंस्करण शुल्क में पूरी तरह छूट दी गयी है. साथ ही ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए उनकी आवश्यकता एवं सुविधा के अनुरूप विभिन्न ऋण उत्पादों को तैयार किया गया है.

स्वर्ण आभूषण के बदले ऋण का महत्व : ऋण प्रदान करना और उससे आय प्राप्त करना इतना आसान नहीं है. किसी ऋण की सार्थकता तभी तक ही है जब तक कि उसका मूलधन और ब्याज या मासिक किस्त का भुगतान समय पर और नियमित रूप से हो. इसके विपरीत जब किसी ऋण का मूलधन और ब्याज या मासिक किस्त का समय पर भुगतान नहीं किया जाता है तो वह ऋण अनर्जक आस्ति में परिवर्तित हो जाता है और ऐसी स्थिति में उस ऋण से एक ओर जहाँ आय का अर्जन बंद हो जाता है, वहीं दूसरी ओर उसके लिए अलग से प्रावधान करना पड़ता है. ऐसी स्थिति में स्वर्णाभूषण के बदले ऋण किसी चमत्कार से कम नहीं है. इसे सामान्यत: स्वर्ण ऋण (गोल्ड लोन) के नाम से भी जाना जाता है. यह ऋण स्वर्ण आभूषण के बदले दिया जाता है तथा यह स्वर्ण आभूषण बैंक की अभिरक्षा में होता है और साथ ही स्वर्ण के मूल्य में उत्तरोत्तर एवं निरंतर वृद्धि होती है जिससे ऋण नहीं चुकाने की स्थिति में ऋण राशि की पूरी वसूली की जा सकती है. अन्य ऋणों की भांति इस ऋण में भी प्रसंस्करण शुल्क, मूल्यांकन शुल्क और अभिरक्षा शुल्क के रूप में बैंक को आय की प्राप्ति होती है. यही कारण है कि स्वर्ण आभूषण के बदले ऋण (स्वर्ण ऋण) को सर्वाधिक सुरक्षित ऋण माना जाता है.

अनुपालन की आवश्यकता : अन्य ऋणों की तरह स्वर्ण आभूषण के बदले ऋण में भी अनुपालन संबंधी कई प्रावधानों का सामना करना पड़ता है ताकि ऋण सुरक्षित रहे तथा नियामक संस्थाओं द्वारा जारी दिशानिर्देशों का पूर्णत: पालन किया जा सके. स्वर्ण आभूषण के बदले ऋण संबंधी अनुपालन को सामान्यत: पाँच भागों में बांटा जा सकता है:

1. आधारभूत संरचना संबंधी अनुपालन
2. प्रलेखीकरण संबंधी अनुपालन
3. स्वर्ण मूल्यांकन संबंधी अनुपालन
4. स्वर्ण आभूषण संबंधी अनुपालन
5. अन्य प्रमुख अनुपालन

1. आधारभूत संरचना संबंधी अनुपालन - स्वर्ण आभूषण एक अत्यंत बहुमूल्य वस्तु है, अतएव उसका रखरखाव एक अतिरिक्त सजगता, सुरक्षा और व्यवस्था का विषय है. स्वर्ण आभूषण के बदले ऋण के मामले में आधारभूत संरचना संबंधी प्रमुख अनुपालन निम्नांकित हैं:

1) स्वर्ण आभूषण को तोलने हेतु इलेक्ट्रानिक तुला मशीन की व्यवस्था
2) स्वर्ण आभूषण को रखने हेतु स्ट्रांग रूम में अतिरिक्त अलमारी/ सुरक्षा वाल्ट/ सेफ की व्यवस्था
3) हर उधारकर्ता के स्वर्ण आभूषण को अलग - अलग रखने हेतु पाउच या थैले की व्यवस्था
4) स्वर्ण आभूषण को तोलने हेतु इलेक्ट्रानिक तुला को रखने के लिए एक टेबल और एक शाखा अधिकारी, एक स्वर्ण मूल्यांकक और उधारकर्ताओं/ उधारकर्ता के बैठने के लिए कुर्सियाँ और पर्याप्त स्थान
5) शाखा परिसर में सी सी टी वी कैमरा जो स्वर्ण आभूषण के बदले ऋण देने के लिए निर्धारित स्थान तथा स्वर्ण आभूषण को निर्धारित स्थान पर ले जाने और निकालने पर निगरानी रख सके

2. प्रलेखीकरण संबंधी अनुपालन - किसी भी वित्तीय लेन - देन को विधिसम्मत बनाने के लिए प्रलेखीकरण आवश्यक है. ऋण के मामले में यह और भी आवश्यक है ताकि पुनर्भुगतान न होने की स्थिति में उक्त ऋण की वसूली की जा सके. किसी भी ऋण का प्रलेखीकरण उस ऋण की प्रकृति के अनुरूप होता है और स्वर्ण आभूषण के बदले ऋण के मामले में प्रलेखीकरण संबंधी प्रमुख अनुपालन निम्नांकित है:

1) ऋण संबंधी आवेदन को पूरी तरह भरा जाना और कोई भी आवश्यक कॉलम को रिक्त नहीं छोड़ना

2) आवश्यक केवाईसी को प्राप्त करना और मूल प्रति द्वारा सत्यापन संबंधी टिप्पणी के साथ शाखा अधिकारी का हस्ताक्षर एवं मुहर लगाना

3) आवेदन पत्र में निर्दिष्ट स्थान पर उधारकर्ता की फोटो चिपकाना और फोटो के एक किनारे में शाखा की मुहर लगाना

4) मूल्यांकक द्वारा फॉर्म में निर्धारित स्थान पर स्वर्ण आभूषण का विवरण, वजन, मूल्य, पात्र ऋण की मात्रा और प्रदत्त ऋण की राशि जैसे विवरण को लिखकर उसके नीचे हस्ताक्षर करना और हस्ताक्षर के नीचे अपना एवं फर्म का नाम लिखना

5) आवश्यक स्टाम्प राशि प्राप्त करना

6) फॉर्म में निर्धारित स्थान पर नॉमिनी विवरण भरना

7) अगर कृषि के लिए ऋण दिया जा रहा है तो भू स्वामित्व का प्रमाण पत्र और फसल का विवरण प्राप्त करना

8) अगर उक्त ऋण एमएसएमई के लिए दिया जा रहा है तो उद्यम पंजीयन प्राप्त करना

9) ऋण स्वीकृति नोट में उक्त ऋण की स्वीकृति हेतु अनुशंसा करने वाले ऋण अधिकारी और शाखा प्रबन्धक का हस्ताक्षर तथा हस्ताक्षर के नीचे उनका नाम लिखा जाना

3. स्वर्ण मूल्यांकक संबंधी अनुपालन - स्वर्ण आभूषण के बदले दिए गए ऋण को सुरक्षित बनाने के लिए यह आवश्यक है कि उस आभूषण के वास्तव में स्वर्ण होने की संपुष्टि हो और संपुष्टि का यह कार्य स्वर्ण ऋण मूल्यांकक द्वारा किया जाता है. ऐसी स्थिति में मूल्यांकक की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है किन्तु मूल्यांकक द्वारा धोखाधड़ी की संभावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता है. मूल्यांकक संबंधी प्रमुख अनुपालन निम्नांकित है:

1) क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा स्वर्ण आभूषण के बदले ऋण देने के लिए अपनी अंचलाधीन शाखाओं का चयन करना और चयनित शाखाओं हेतु अनुभव, योग्यता और वित्तीय स्थिति (सिबिल) के आधार पर दो स्वर्ण मूल्यांककों का चयन

2) चयनित स्वर्ण ऋण मूल्यांककों से रु. 25000/- की राशि सुरक्षित जमा के रूप में प्राप्त करना और बैंक द्वारा इस आशय से निर्धारित फॉर्म में करार करना

3) वार्षिक निष्पादन के आधार पर स्वर्ण ऋण मूल्यांककों के कार्य की समीक्षा तथा तदुपरान्त नवीकरण

4) स्वर्ण ऋण मूल्यांककों के साथ हुए करार की प्रति को शाखा में भी रखा जाना

4. स्वर्ण आभूषण संबंधी अनुपालन - स्वर्ण आभूषण के बदले दिया गया ऋण तभी सुरक्षित है जब वह आभूषण वास्तव में सोने का हो और वसूली न होने की स्थिति में इसकी बिक्री द्वारा ऋण की राशि को वसूल किया जा सके. इसीलिए स्वर्ण आभूषण संबंधी अनुपालन अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाता है जो निम्नांकित है:

1) 22 कैरेट के सोने के आभूषण के मामले में निर्धारित मूल्य का अधिकतम 75% राशि और 22 कैरेट के कम मानक वाले सोने के आभूषण के मामले में अधिकतम 65% राशि ऋण के रूप में स्वीकृत करना

2) अगर ऋण राशि रु. 25 लाख से अधिक हो तो न्यूनतम 650 सिबिल स्कोर होने पर ही उस पर विचार करना और अगर शाखा प्रबन्धक को उक्त ऋण प्रदान करना उपयुक्त लगे तो अपने क्षेत्रीय कार्यालय से इसकी अनुमति प्राप्त करना

3) अगर ऋण राशि रु. 3 लाख से अधिक हो तो परवर्ती तिमाही में उस स्वर्ण आभूषण का पुनर्मूल्यांकन करना जिसके बदले ऋण स्वीकृत किया गया है.

4) स्त्रीधन के मामले में पति/ पत्नी को सह आवेदक बनाया जाना

5) स्वर्ण आभूषण के बदले ओवर ड्राफ्ट प्रदान करने की स्थिति में स्वर्ण आभूषणों का दो अलग - अलग स्वर्ण मूल्यांककों द्वारा मूल्यांकन

6) अगर एक ही उधारकर्ता स्वर्ण आभूषण के बदले दो या अधिक ऋण ले रहा हो तो उन स्वर्ण आभूषणों का दो अलग - अलग स्वर्ण मूल्यांककों द्वारा मूल्यांकन

7) बैंक द्वारा विशेष रूप से डिजाइन किए गए पाउच में ही स्वर्ण आभूषणों को रखना और उस पाउच में निर्धारित स्थान पर आवश्यक सभी विवरण लिखना

8) स्वर्ण आभूषण वाले पाउचों को दो अधिकारियों की संयुक्त अभिरक्षा में सुरक्षित वाल्ट/ स्ट्रांग रूम में रखा जाना

5. अन्य प्रमुख अनुपालन - अनुपालन के उपरोक्त चार प्रकार के अलावा कुछ अन्य अनुपालन ऐसे हैं जो स्वर्ण आभूषण के बदले दिए गए ऋण के लिए आवश्यक है जिनमें प्रमुख निम्नांकित हैं:

1) स्वर्ण आभूषण के बदले ऋण के मामले में सीबीएस में विशिष्ट अल्फा न्यूमरिक संख्या की प्रविष्टि सुनिश्चित करना

2) "यहाँ स्वर्ण आभूषण के बदले ऋण उपलब्ध है", संबंधी बैनर शाखा परिसर में प्रदर्शित करना

निष्कर्ष : आकस्मिक वित्तीय संकटों से निपटने और विवाह, चिकित्सा, सामाजिक/ धार्मिक/ सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन, उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं की खरीद इत्यादि कई ऐसे अवसर हैं जब लोग स्वर्ण आभूषण के बदले ऋण लेना अधिक उचित और आसान समझते हैं. साथ ही बैंकों के लिए भी यह जोखिम रहित या न्यूनतम जोखिम युक्त ऋण है. यही कारण है कि स्वर्ण आभूषण के बदले ऋण की लोकप्रियता बहुत तेजी से बढ़ रही है. किन्तु हाल में जिस प्रकार इस ऋण क्षेत्र में भी धोखाधड़ी की घटनाएँ बढ़ी हैं उससे इस ऋण से संबंधित अनुपालन की सार्थकता और अनिवार्यता स्वत: बढ़ जाती है.

ओम प्रकाश बर्णवाल
अंचल कार्यालय, रांची

Team Building Skills

A group of individuals working together for a common objective is called a team. Teams are normally formed to accomplish complicated and difficult tasks. The members of a team who come together strive hard to achieve a set of objectives. When these individuals work as a single unit towards a common predefined goal, a team is formed.

In order to form a team, the essential capabilities required for a leader are team building skills. These skills will help the leader form an interactive, supportive and highly functioning team. The basic purpose of these skills is to support teamwork and team development. The various team building skills are:

1. Goal Setting
2. Role Assigning
3. Communication
4. Listening
5. Reflecting
6. Matchmaking
7. Problem Solving
8. Delegating
9. Giving & Getting Feedback
10. Organizing
11. Resolving Conflicts

Goal Setting:

The primary task of a leader is to define a goal and map out a way to get everyone there. In order to set a goal, the following steps may be followed:

Need to start with the desired result and work backwards

- Need to be specific about the end result
- Choose measurable targets
- Set deadlines to achieve the above targets
- Track the progress on a periodical basis
- Stay Flexible to make changes whenever required
- Discuss everything with the team
- Make the goals public

Role Assigning:

The next step in the process is to assign different roles to the team members to achieve the goal set. Based on the role assigned to each individual team member, they should be given specific goals. The leader should ensure that all the team members know and understand the assigned responsibilities. Having clear roles and a clear end point in mind avoids confusion and increases harmony within the team.

Communication:

Communication is the lifeline of any successful team. When the teammates fail to communicate with each other, the whole group gets handicapped. Synchronisation of the team cannot occur if one part of the group has no idea about what the other part is working on. Teams should be able to communicate on the following aspects:

- Goals
- Responsibilities
- Ideas
- Progress
- Results

To encourage effective communication among the group members, the leader needs to facilitate regular team meetings, create team channels, and take necessary steps to build trust and share skills amongst themselves.

Listening:

Listening is one of the greatest team building skills,

a leader needs to develop. Talking and listening are equally important team traits. Without listening skills, teams just make a lot of noise. Lack of listening can lead to frustration. By acknowledging ideas and making efforts to understand, a leader can avoid conflict within the team at later stages.

Reflecting:

When working in a team, each member should know his own strengths and weaknesses and learn to be honest. Individual self-awareness is important, at the same time teams also need to be collectively self-aware. Just as we analyse ourselves as part of the team, we can also analyse the team as a whole. All teammates should take time to reflect on the team's strengths and weaknesses. Self-aware teams act with more integrity and speak more openly. Reflective teams are better equipped to avoid conflicts and reach compromises. A team leader needs to be more reflective for his team to succeed.

Matchmaking:

In a party the hosts normally introduce guests and encourage attendees to mingle, so that the party does not get boring. In the same way a leader needs to foster relationships among team members to make the project successful. Matchmaking is one of the most essential interpersonal skills for team builders. A true leader needs to recognize skills, traits, and patterns within teams, and use this trait to link members together into winning combinations.

Problem Solving:

Problem solving is an important teambuilding skill. In a group setting, problem solving means discussing issues and brainstorming resolutions. When teams unite to tackle challenges, no one person bears the burden alone. All group members analyse a problem and propose solutions. Team members share responsibility for the end result. Working together requires a lot of trust. Individual workers should know to reach out to the team for help. A team is a great resource and support system. A leader needs to encourage his team members to brainstorm together for efficient problem solving.

Delegating:

Delegating is true collaboration skill. A great leader teaches his teams to self-delegate. He should assess the skill sets of individual team members, the current workload and should assign tasks accordingly. The team members should also be allowed some sort of flexibility to claim projects. Ultimately, the workload should be discussed as a group, and the team members should be allowed to divide the work evenly among the group.

Giving & Getting Feedback:

A team leader should always encourage feedback. He should also make sure that everyone in the team gets equal opportunities to give and receive feedback. If the team is still developing each other's trust and is not yet ready to speak candidly, then the leader needs to always solicit anonymous feedback and deliver it to each employee in a tactful way.

Organizing:

Organizational skills are vital team building skills. Team members have different tasks, deadlines, and schedules, and things can easily fall by if nobody takes the reins. So the leader should create systems to organize and coordinate amongst the team members. The same needs to be communicated to all the team members so that everyone in the team knows where to post and look for relevant information when in need.

Resolving Conflict:

Conflict in a team is unavoidable. Hence, Conflict resolution is another important team building skill. Disagreement is not always a bad thing. It means that the team is passionate and able to consider different angles of the problem. Great teams do not avoid conflict altogether, but they know how to handle the same effectively when it arises. A leader's role in this aspect is to facilitate the resolution amongst the team members in a more efficient manner.

A great leader is one who works well with others – both within his or her own department and across departments – who can help spread knowledge and resources, develop new leaders and contribute to the organization's success. Leaders can demonstrate strong teambuilding skills by promoting collaboration, acting as mentors or coach their employees and empower their team members to learn, grow and advance. Great leaders take responsibility of bringing individual employees together as a cohesive team. In fact, the ability to build teams is a valuable leadership quality.

R. Narayanan
Staff College, Bengaluru

प्रसिद्ध कवि एवं गीतकार – गोपालदास "नीरज"

गोपाल दास नीरज एक प्रसिद्ध एवं विख्यात हिन्दी गीतकार, साहित्यकार, शिक्षक, गजल लेखक एवं उच्च दर्जे के कवि ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्हें शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा दो-दो बार सम्मानित किया गया, पहले पद्म श्री से, उसके बाद पद्म भूषण से. यही नहीं, फ़िल्मों में सर्वश्रेष्ठ गीत लेखन के लिए उन्हें लगातार तीन बार फिल्म फेयर पुरस्कार भी मिला.

गोपाल दास 'नीरज' का जन्म 04 जनवरी, 1925 को उत्तर प्रदेश राज्य के इटावा जिले के प्रखंड महेवा के निकट पुरावली गाँव में हुआ था. उनके पिताजी का नाम बाबू ब्रजकिशोर सक्सेना था. मात्र 06 वर्ष की आयु में उनके पिताजी गुजर गए. वर्ष 1942 में एटा से हाई स्कूल परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की. उन्होंने शुरुआत में इटावा की कचहरी में कुछ समय टंकक के रूप में काम किया उसके बाद सिनेमाघर की एक दुकान पर नौकरी की. लम्बी बेरोज़गारी के बाद दिल्ली जाकर सफाई विभाग में पुन: टंकक की नौकरी कर ली. वहाँ से नौकरी छूट जाने के पश्चात उन्होंने कानपुर के डी.ए.वी कॉलेज में किरानी की नौकरी की. इसके पश्चात बाल्कट ब्रदर्स नाम की एक प्राइवेट कम्पनी में पाँच वर्ष तक टंकक के रूप में काम किया. वे बचपन से ही बहुत मेधावी थे जिसका परिणाम हुआ कि नौकरी करने के साथ वे प्राइवेट परीक्षाएँ देकर सन् 1949 में इण्टरमीडिएट, 1951 में स्नातक और 1953 में प्रथम श्रेणी में हिन्दी साहित्य से स्नातकोत्तर उत्तीर्ण किया.

उन्होंने मेरठ कॉलेज, मेरठ में हिन्दी प्रवक्ता के पद पर कुछ समय तक अध्यापन कार्य भी किया किन्तु महाविद्यालय प्रशासन द्वारा उन पर कक्षाएँ न लेने व रोमांस करने के आरोप लगाए गए जिससे कुपित होकर नीरज ने स्वयं ही नौकरी से त्यागपत्र दे दिया. उसके बाद वे अलीगढ़ के धर्म समाज कॉलेज में हिन्दी विभाग के प्राध्यापक नियुक्त हो गए और मैरिस रोड जनकपुरी अलीगढ़ में स्थायी आवास बनाकर रहने लगे.

कवि सम्मेलनों में अपार लोकप्रियता के चलते नीरज को बम्बई (अभी मुंबई) के फिल्म जगत ने गीतकार के रूप में नई उम्र की नई फसल के गीत लिखने का निमन्त्रण दिया जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया. पहली ही फ़िल्म में उनके लिखे कुछ गीत जैसे "कारवाँ गुजर गया गुबार देखते रहे" और "देखती ही रहो आज दर्पण न तुम, प्यार का यह मुहूरत निकल जाएगा" बेहद लोकप्रिय हुए जिसका परिणाम यह हुआ कि वे बम्बई में रहकर फ़िल्मों के लिए गीत लिखने लगे. फिल्मों में गीत लेखन का सिलसिला जारी रहा. इसी क्रम में उन्होंने "मेरा नाम जोकर", "शर्मीली" और "प्रेम पुजारी" जैसी अनेक चर्चित फिल्मों में कई वर्षों तक गीत लिखे तथा फिल्म जगत में अपनी अलग पहचान बनाई. किन्तु बम्बई की ज़िन्दगी से भी उनका मन बहुत जल्द ही उचट गया और वे फिल्म नगरी को अलविदा कहकर फिर अलीगढ़ वापस लौट आए.

अपने बारे में उनका यह शेर आज भी मुशायरों में फरमाइश के साथ सुना जाता है:

इतने बदनाम हुए हम तो इस ज़माने में,
लगेंगी आपको सदियाँ हमें भुलाने में.
न पीने का सलीका न पिलाने का शऊर,
ऐसे भी लोग चले आये हैं मयखाने में.

हिन्दी साहित्यकार सन्दर्भ कोश के अनुसार नीरज की कालक्रमानुसार प्रकाशित कृतियाँ इस प्रकार हैं:

संघर्ष (1944), अन्तर्ध्वनि (1946), विभावरी (1948), प्राणगीत (1951), दर्द दिया है (1956), बादर बरस गयो (1957), मुक्तकी (1958), दो गीत (1958), नीरज की पाती (1958), गीत भी अगीत भी (1959), आसावरी (1963), नदी किनारे (1963), लहर पुकारे (1963), कारवाँ गुजर गया (1964), फिर दीप जलेगा (1970), तुम्हारे लिये (1972), नीरज की गीतिकाएँ (1987)

पुरस्कार एवं सम्मान: गोपालदास नीरज को कई पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुए, जो निम्नलिखित हैं.

विश्व उर्दू परिषद पुरस्कार, पद्म श्री सम्मान (1991), भारत सरकार, यश भारती एवं एक लाख रुपये का पुरस्कार (1994), उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, पद्म भूषण सम्मान (2007), भारत सरकार, फिल्म फेयर पुरस्कार.

गोपालदास नीरज को फ़िल्म जगत में सर्वश्रेष्ठ गीत लेखन के लिए सन् 1970 के दशक में लगातार तीन बार पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया- 1970: काल का पहिया घूमे रे भइया (फ़िल्म: चंदा और बिजली), 1971: बस यही अपराध मैं हर बार करता हूँ (फ़िल्म: पहचान), 1972: ए भाई! ज़रा देख के चलो (फ़िल्म: मेरा नाम जोकर)

हिंदी काव्य जगत के ध्रुवतारा, फिल्मी दुनिया के प्रसिद्ध गीतकार पद्म श्री एवं पद्म भूषण से सम्मानित कवि, गीतकार गोपालदास 'नीरज' ने दिल्ली के एम्स में 19 जुलाई 2018 की शाम लगभग 8 बजे अन्तिम सांस ली. आज नीरज हमारे बीच नहीं रहे परंतु उनकी रचनाएं हमें मंत्रमुग्ध करती हैं. आज भी हम उनके लिखे गीत गुनगुनाने के लिए मजबूर हो जाते हैं. उनकी लेखनी में वह ताकत थी कि शब्द से सीधे विषय पर प्रहार होता था. वे हम सबके लिए सदैव प्रेरणा के स्रोत रहेंगे.

रविनेश कुमार
क्षे. का., पटना

प्रतियोगिता / Contest - 165

फोटो - **दिव्या ओ**
अंचल कार्यालय, बेंगलूरु

स्लोगन लिखें / Write a Slogan

क्या यह तस्वीर आपको कल्पना की उड़ान भरने या अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित कर रही है? तो फिर इंतजार कैसा? फौरन अपने की-बोर्ड पर उंगलियाँ चलाना शुरु करें और इस तस्वीर से संबंधित बढ़िया-सा स्लोगन, एक या दो पंक्तियों में लिखकर क्षेत्र के संवाददाता को ईमेल करें.

सभी संवाददाता अपने क्षेत्र से प्राप्त प्रविष्टियों को समेकित कर दि. 20.06.2023 तक हमारे ई-मेल आईडी uniondhara@unionbankofindia.bank पर प्रेषित करें.

स्लोगन अंग्रेजी या हिंदी में भेजा जा सकता है. दोनों श्रेणियों के लिए अलग-अलग पुरस्कार रखे गए हैं. कृपया नोट करें कि यह प्रतियोगिता बैंक के सेवारत कार्मिकों के लिए ही है.

हमारे स्तर पर चयनित उत्कृष्ट हिंदी और अंग्रेज़ी स्लोगनों को परिपत्र क्रमांक 7869 दिनांक 19.12.2022 के अनुसार पुरस्कृत किया जाएगा.

जल्दी करें, प्रविष्टियाँ प्राप्त करने की अंतिम तिथि 20 जून, 2023 है.

Does this photograph fire your imagination or spontaneously inspire you to express your feelings? Then what are you waiting for? Start keying in and email a superb, slogan in one or two lines relating to the photograph to the correspondent of your Region.

All correspondents are requested to consolidate the entries of their Region and send them to our email id uniondhara@unionbankofindia.bank by 20.06.2023.

The slogan can be sent in English or Hindi. Both the categories shall be rewarded separately. Please note that this contest is open only for the staff members presently in service of the Bank.

Best Hindi and English slogans selected at our end shall be rewarded in terms of circular no 7869 dated 19.12.2022.

Hurry as, the last date to receive entries is 20th June, 2023.

यूनियन धारा प्रतियोगिता क्रमांक 164 - 'कविता लिखें'

पुरस्कार	हिन्दी खण्ड	अंग्रेजी खण्ड
प्रथम	**निशि सिन्हा** क्षे. का. बेंगलूरु (दक्षिण)	**अन्नपूर्णा के कुमार** क्षे. का. बेंगलूरु (दक्षिण)
द्वितीय	**शीतल राठौर,** क्षे. का., इन्दौर	**श्रीकला बी,** क्षे. का. एर्णाकुलम
तृतीय	**अमिताभ अस्थाना,** कें. का. मुंबई	**अंजु,** क्षे. का. तिरुवनन्तपुरम
प्रोत्साहन	**अमर शर्मा,** कें. का. मुंबई	**सबरी सुकुमारन नायर** क्षे. का. तिरुवनन्तपुरम

Increasing Dominance of the Indian Rupee In International Markets

The Indian rupee (INR) has long been considered a minor currency on the global stage, but recent developments suggest that the currency may be gaining prominence. The Rupee's increasing dominance in the international market is attributed to various factors such as the growth of the Indian economy, the government's policy measures and the currency's stability. As India continues to grow in economic power, the INR is increasingly being used in international trade and investment and there are indications that the currency could become a major player in the global financial system.

The government has introduced policies to promote foreign investment, reduce the fiscal deficit and enhance economic stability. These measures have helped build investor confidence in the Indian market and boosted the value of the Rupee in the international market.

The country's robust economic performance and growing middle class have increased domestic consumption and investments, attracting foreign investors to the Indian market. This has resulted in a higher demand for the Rupee, thereby boosting its value in the international market. As a result, there is a growing demand for the currency in international markets, as buyers seek to pay for Indian goods and services using local currency.

In recent years, the Reserve Bank of India (RBI) has also taken measures to increase the Rupee's use in international transactions. The RBI has increased the number of countries where Indian firms can raise funds through External Commercial Borrowings (ECBs) and has also relaxed the rules on the use of Indian currency for trade transactions. These measures have helped increase the Rupee's acceptance in the international market.

The RBI has signed currency swap agreements with several countries, allowing for the exchange of INR for foreign currencies. The government has also relaxed restrictions on the use of INR in cross-border transactions, making it easier for businesses and individuals to conduct international transactions using INR.

Another factor contributing to the INR's increasing importance is India's status as a major exporter. As one of the world's largest producers of goods and services, India has a significant presence in the global economy and many of these transactions are conducted in INR.

India is also attracting increasing amounts of foreign investment. Foreign companies are investing in Indian businesses, while Indian firms are investing overseas. This trend has led to an increase in the use of INR for international financial transactions, as investors seek to avoid the costs and risks associated with currency conversion.

Another factor contributing to the INR's growing importance is India's rise as a regional economic power. India is increasingly playing a leading role in South Asia region's economic development.

The growing dominance of the Rupee in the international market has several advantages for the Indian economy. It reduces the country's dependence on other currencies and strengthens its economic sovereignty. It also reduces the currency risk for Indian companies operating in the international market.

In addition to the above, Unified Payments Interface (UPI) was launched in 2016 by the National Payments Corporation of India (NPCI) as a means of facilitating peer-to-peer payments and other financial transactions through mobile devices in real-time, without the need for traditional banking infrastructure. Due to this, UPI has also emerged as a major player in the country's financial landscape, enabling quick and easy digital payments for millions of Indians. In recent years, the impact of UPI has also started to be felt beyond India's borders.

The success of UPI has been remarkable. According to Outlook India the UPI closed the year 2022 on a high note as the number of transactions reached a record 7.82 billion in December and totalled Rs 12.82 trillion, also a record high. According to NPCI data, approximately 74 billion transactions worth Rs 125.94 trillion were conducted using UPI in the calendar year 2022. The platform handled more than 38 billion transactions totalling Rs.71.54 trillion in 2021. As a result, nearly 90 percent more transactions took place on the platform in a year and their average value increased by 76 percent.

Perhaps more importantly, UPI has become a model for other countries looking to develop their own digital payment systems and has sparked interest from international players in the fintech space. In 2020, Google launched its Google Pay service in the US, based on the UPI platform. This development has brought UPI to the attention of a wider global audience and has helped to establish India as a leader in the development of digital payments infrastructure.

Another major development has been the launch of the NPCI's international arm, NPCI International Payments Limited (NIPL), which is tasked with taking UPI and other NPCI payment systems to the global market. NIPL has already signed agreements with several countries, including Bhutan, UAE and Singapore, to enable UPI-based payments and is in talks with other countries as well.

The expansion of UPI beyond India's borders has the potential to bring significant benefits to the country's economy. By enabling easy and affordable cross-border payments, UPI could help to boost India's international trade and investment and could also provide a new revenue stream for Indian companies operating overseas.

However, there are challenges that need to be addressed for the Rupee to increase its dominance further.

- Lack of liquidity in the Rupee market. The RBI has taken steps to increase liquidity by allowing foreign investors to trade in Rupee futures, but more needs to be done to deepen the market.
- The currency remains subject to fluctuations in value due to international factors
- The Indian government also faces challenges in maintaining macro-economic stability, which can impact the value of the currency.
- Regulatory and legal frameworks in different countries may vary significantly, which could pose obstacles to the adoption of UPI-based payments. There is also the risk of increased competition from other digital payment platforms in the international market.

Despite these challenges, the increasing impact of UPI in international markets is a positive development for India's fintech industry and the country's economy. As UPI continues to gain traction beyond India's borders, it has the potential to become a truly global platform for digital payments and to establish India as a leader in the development of innovative financial technology.

It is likely that the INR will continue to gain importance on the global stage, contributing to India's rise as a major economic power in the world.

In conclusion, the Indian Rupee's increasing dominance in the international market is a positive development for the Indian economy. It reflects India's growing economic clout and policy measures to promote stability and attract foreign investment. However, the challenges need to be addressed to ensure that the Rupee becomes a truly dominant currency in the international market.

CA Parteek Jain
Union Learning Academy,
Corporate & Treasury, Gurugram.

Currency: A Journey through Ages

Money represents value or importance of a product or Service that people place in them. Currency is used to measure that value by representing a unit of that value. Currency provides a mechanism or system of measurement of value of a product or service. This enables human race to compare different products or services based on their value.

We all need money for our day-to-day activity. Money is used in the form of coins, notes, plastic cards, credit & debit cards, digital wallets & virtual currency. Money has always been part of human history in one form or the other. In today's modern world, every country has its own currency. These currencies are used to measure money. This wasn't always the case. Currency got its current form after a very long journey.

Barter System

Humans started their journey as hunters and gatherers in search of food, shelter & other material objects to fulfil their needs. This need gave birth to the practice of exchange. One group of hunters and gatherers carrying a set of items – fish, meat, leather skin etc. on their journey meets another group carrying another set of items – fruits, seed, herbs etc. This group exchanges its abundance/excess with the needed items from the other group. This practice of exchanging one item for another item, is known to us today as barter system.

This barter system gained momentum as humans started settling & societies developed. Now people needed to build house for shelter, wear clothes to protect them from natural elements & large quantities of food & water for survival. This increase in the material needs could not be satisfied with the natural resources available in nearby areas. To fulfil its need one settlement started exchanging their abundance with the needed items from nearby settlements on regular basis. This gave birth to market places & formal purchase & sale of one item with other item in the form of exchange. However the system wasn't very efficient.

The Big Question

Barter had its limitations. The big question was how to match the value of one item with the value of another item. In other words, How to measure the value of an item? Later in time, this term "value of an item" received a formal name called "Money". Let's come back to our original question "How to measure the value of an item? Or How to measure money?"

With time, the barter system got standardized in terms of metals or cowrie shells. People started using metals or cowrie shells in exchange for other items. Both Metal - Bronze, Copper etc. and shells had intrinsic value. Metals were desired for their strength & ability to take different shapes & shells were desired for their beauty. Over time people started using small metal coins of different shapes & sizes for purchase and sale activity. These coins represented some units of "Money" or "Value". This was the start of a system of measurement of "Money" or "Value".

Metal Money – Coins

A facility where currency is created is called "Mint". Chinese archaeologists with the state University of Zhengzhou made an announcement in August 2021 that they had discovered the world's oldest known, securely dated coin minting site. This facility is located at Guanzhuang in the Henan Province of China. Radio carbon-dating indicates that this minting site was developed around 640–550 BC. Archaeologists have found clay moulds for casting spade coins.

The first metal money dates back to 1000 BCE. In China, these coins were made from stamped pieces of valuable metal – bronze & copper. Sometime around 650 BCE,

these early forms of coins were also used by ancient Greeks. With time, these coins would evolve into coins minted from silver & gold, a form of modern era currency. Coins were a colossal milestone for human civilization as they allowed people to pay or receive by count – number of coins, rather than weight.

Paper Money – Bills / Notes

Metal coins became a major part of trade, but their weight posed some issues in their usage in large quantities in big trades. People tried to overcome this limitation by improvising – instead of actual goods people started using claims on goods, a bill of exchange. A bill of exchange is essentially a written order that one person or group will pay a specified amount of money on demand. In fact, in Mesopotamia & in China in the eleventh century, they started using paper currency.

The first paper currency was created in China in 700 to 800 AD. but it took a while before paper currency was widely used. China started using paper currency on a common basis during the thirteenth century. The light weight of paper currency allowed significant increase in international trade but it came with its own problems – distrust as paper has no intrinsic value & currency wars – and opportunities – the ability to trade at farther distance in new places for new commodities.

By the mid 15th century, China stopped using its paper currency. Metal coins once again became the most popular form of money in the country & in the world. Countries were minting gold & silver coins for general use. Gold being very high intrinsic value metal was used only in very large trade. Paper currency was not done and many countries tried to issue paper currency in the form of banknotes, but banknotes were mistrusted due to little intrinsic value & possibility of counterfeit.

To enforce public trust in banknotes, European countries devised a system known as "Silver Standard". Now each banknote issued was backed by certain amount of silver deposited with the issuer. This gave paper currency i.e. banknote some sort of value and stability. Gold was functioning as a medium for high value trade & in international trade. Gold was measured at a floating exchange rate to silver. In 17th & early 18th century, European countries were running large trade deficit with China, which drained out most of the silver from Europe. Discovery of new gold mines in South America during the same period increased the supply of gold to Europe many folds.

In 1717, Sir Isaac Newton functioning as Master of Royal Mint, set the exchange rate of silver to gold very low. This low exchange rate had huge impact and silver coins went out of circulation & were replaced by gold coins. In 1816, gold became the standard of value in England. Each banknote issued represented a certain amount of gold. This limited the number of banknotes issued. By 1900, The United States followed suit & issued Gold Standard Act. During the period of great depression (1929 – 1939), due to depression & devaluation of gold many countries including The United States moved away from Gold Standard to exchange control-based system.

The Era of Internet: Digital Currency

The invention of Computer, mobile phone and internet took the human race to a new era of instant communication. Advertising of products & services was no longer bound by distances & boundaries of nations. People no longer needed to meet each other for buying & selling required products & services. Payments for these products & services started happening on computers & mobiles in electronic mode within a fraction of seconds. However these payments were limited by payment gateway & exchange rates between different currencies of different nations.

Development of new technologies led to the creation of digital or virtual currency known as "Crypto Currency". The first virtual currency was created in 2009 by the pseudonymous Satoshi Nakamoto. The crypto currencies were decentralised & distributed. It was for the first time in modern era that a currency was not controlled by any central regulatory body & was based on distributed ledger system. These crypto currencies very quickly gained popularity due to their decentralised nature & ability to be used in payments across the globe. In a very short span of time, eleven years to be exact, crypto currencies crossed 3% of total world's money.

The immense popularity & sheer size of the crypto currencies forced many nations to consider launching digital format of their own currency. Digital form of currencies issued and regulated by central banks are called "Central Bank Digital Currency - CBDC". China is the first country to launch digital form of its currency. Other countries are trying to follow suit.

Asheesh Singh
Digitalisation Vertical,
Central Office, Mumbai

Digital Transformation & Our Bank's Initiatives

Introduction : In today's information age, technology has transformed every aspect of our lives, including the way we conduct financial transactions. Banks are no exception to this and are increasingly investing in digital transformation to meet the evolving needs of customers. Digital transformation is integrating technology into all areas of business, which allows for automation of processes, improved efficiency, and creation of novel business models.

Digital Transformation in Banks : Digital transformation in banks involves the use of technology to improve customer experience, automated processes, and reduce costs. Banks have been using technology for decades, but the rapid advancement in digital technology has forced them to adopt new technologies to stay competitive. In recent years, banks have been investing heavily in digital technologies to improve their services and customer experience. Digital transformation in banks can be divided into three main areas: customer experience, operations, and business models.

Customer Experience : Digital technology has enabled banks to offer customers more convenient and personalized services. Customers can now access their accounts online or through mobile applications, which allows them to check their balances, make payments, and transfer funds from anywhere at any time. This has eliminated the need for customers to visit bank branches, which has reduced wait time and made banking more convenient.

Another way banks are using digital technology to improve customer experience is through the use of chatbots and virtual assistants. These tools allow customers to interact with the bank's services using natural language, which makes banking more accessible to customers who may not be familiar with financial jargon. Chatbots and virtual assistants can also provide personalized recommendations to customers based on their transaction history and spending patterns.

Operations : Digital transformation in banks has also improved their operations. Banks have been able to automate many of their processes, which has reduced costs and improved efficiency. For example, banks can now use artificial intelligence (AI) and machine learning algorithms to analyze customer data and detect fraudulent transactions. This has reduced the need for manual intervention and has improved the accuracy of fraud detection.

It has also enabled banks to reduce their reliance on paper-based processes. Banks can now store customer data in digital formats, which has eliminated the need for paper-based records. This has reduced storage costs and improved data security.

Business Models : Digital transformation in banks has also enabled the creation of new business models. Banks can now offer new products and services that were not possible before the advent of digital technology. For example, banks can now offer online-only accounts that have lower fees and higher interest rates than traditional accounts. These accounts are attractive to customers who prefer to conduct their banking online and do not require the services of a physical bank branch.

Digital transformation has also enabled banks to enter new markets. Banks can now offer their services to customers in different geographic locations without the need for physical branches. This has enabled banks to expand their customer base and increase revenue.

Why is Digital Transformation Important in Banks? Digital transformation is important in banks for several reasons. Firstly, it enables banks to offer better services to their customers. In the past, banks were limited by physical locations and business hours, which made it difficult for customers to access their services. Digital transformation has changed this by enabling banks to offer 24/7 services through digital channels. Customers can now access their bank accounts, make transactions, and apply for loans from the comfort of their homes, using their smartphones or computers.

Secondly, digital transformation has enabled banks to streamline their operations and reduce costs. In the past, banks had to rely on manual processes for many of their operations, such as opening accounts, processing transactions, and managing customer data. This was time-consuming and expensive, and it often resulted in errors and delays. Digital transformation has automated many of these processes, which has made them faster, more accurate, and less costly.

Thirdly, digital transformation has enabled banks to improve their risk management capabilities. Banks are required to comply with strict regulations, and failure to do so can result in severe penalties. Digital transformation has enabled banks to implement more robust risk management systems, which can identify and mitigate risks in real time. This has made banks more resilient to cyber-attacks, fraud, and other risks.

Fourthly, digital transformation has enabled banks to gain a competitive advantage. Banks that have embraced digital transformation are better equipped to meet the changing needs and expectations of their customers. They can offer

personalized services, such as targeted marketing campaigns and customized investment advice. They can also leverage data analytics to gain insights into customer behavior, which can inform their product development and marketing strategies.

Finally, digital transformation has enabled banks to innovate and develop new products and services. Banks that are agile and innovative can respond quickly to changing market conditions and customer needs. They can develop new products and services that meet emerging customer demands, such as digital wallets, mobile banking apps, and blockchain-based solutions.

Challenges of Digital Transformation in Banks : Despite the benefits of digital transformation, there are also significant challenges that banks face when implementing digital transformation initiatives. One of the main challenges is legacy systems. Many banks have outdated IT systems that are not designed for modern digital services. These legacy systems can be difficult and expensive to replace or upgrade, which can limit the scope of digital transformation initiatives.

Another challenge is cultural resistance to change. Digital transformation requires a fundamental shift in how banks operate, which can be challenging for employees who are used to traditional ways of working. Banks need to invest in training and education programs to help their employees adapt to the new digital environment.

Another challenge is cybersecurity. Digital transformation has increased the risk of cyber-attacks, and banks need to implement robust cybersecurity measures to protect their customers' data and assets. Banks also need to comply with data privacy regulations, which can be complex and time-consuming.

Finally, another challenge is customer adoption. While many customers are comfortable with digital channels, there are still some who prefer traditional channels. Banks need to ensure that their digital services are user-friendly and accessible to all customers, regardless of their technological proficiency.

Union Bank of India's Digital Transformation Journey – Project Sambav : Project Sambav is a digital transformation initiative launched by Union Bank of India (UBI) in 2022. The project aims to leverage technology to improve customer service, increase operational efficiency, and enhance the overall competitiveness of the bank.

As part of the initiative, UBI implemented a range of digital solutions, such as mobile banking, internet banking, and e-wallets, which enable customers to access banking services anytime and anywhere. The bank has also introduced a range of new products and services, such as personal loans, home loans, and credit cards, to cater to the evolving needs of its customers.

One of the key features of Project Sambav is its focus on analytics and data-driven decision-making. Bank has invested in advanced analytical tools to gain insights into customer behavior, preferences, and needs. The bank uses this information to personalize its services, tailor its marketing campaigns, and develop new products and services.

Another important aspect of Project Sambav is its focus on automation and process optimization. UBI has implemented a range of automation tools, such as robotic process automation (RPA) and artificial intelligence (AI), to streamline its operations and reduce costs. For example, the bank has automated several back-office processes, such as account opening, KYC verification, and loan processing, which has made these processes faster, more accurate, and less costly.

Project Sambav has also enabled UBI to improve its risk management capabilities. The bank has implemented advanced fraud detection tools and cybersecurity measures to protect its customers' data and assets. UBI has also introduced a range of financial literacy programs and initiatives to educate its customers on the importance of financial security and risk management.

The results of Project Sambav have been impressive. UBI has seen a significant increase in customer satisfaction, with customers praising the bank's digital services and personalized approach. The bank has also achieved significant cost savings through automation and process optimization. In addition, UBI has seen an increase in revenue, with new products and services contributing to its growth.

Overall, Project Sambav is a successful example of digital transformation in the banking sector. It demonstrates the importance of leveraging technology to improve customer service, increase operational efficiency, and enhance competitiveness. UBI's focus on analytics, automation, and risk management has enabled it to stay ahead of the curve and provide innovative solutions to its customers.

Conclusion : Digital transformation is essential for banks to remain competitive in today's digital age. It enables banks to offer better services, streamline operations, improve risk management, gain a competitive advantage, and innovate. However, digital transformation also presents significant challenges, such as legacy systems, cultural resistance to change, cybersecurity, and customer adoption. Banks that can overcome these challenges and embrace digital transformation are well-positioned to succeed in the digital age.

With Project Sambav, we as a Bank have embarked on a transformative journey of creating a Digital Bank within the Bank with a bouquet of digital journeys for both asset and liability products and various financial services.

Eldhose George
Digitization Vertical,
Central Office, Mumbai

समय की कीमत

कहते हैं कि, "जैसे सोने का प्रत्येक धागा मूल्यवान होता है, उसी तरह समय का प्रत्येक क्षण भी मूल्यवान होता है". समय निरंतर गतिमान है, न तो वह कभी रुकता है और न कभी लौट कर वापस आता है.

29 जनवरी 2014, मुझे अभी भी याद है वह दिन जब मैं नागपुर-पुणे गरीब रथ एक्सप्रेस से रेलगाड़ी से पुणे जाने वाली थी. दूसरे दिन मेरा पुणे में दोपहर 1:00 बजे बैंक का इंटरव्यू था. गाड़ी छूटने का शाम को 6.35 बजे का समय था. मैं वैसे तो भंडारा की रहने वाली हूं, परंतु रेलगाड़ी नागपुर से थी तो मुझे भंडारा से बस से आना था. बहुत दिनों से मेरे मम्मी पापा मुझे बोल रहे थे कि तू इंटरव्यू के दो दिन पहले का आरक्षण कर ले परंतु, मैंने उनके बातों को नजरअंदाज किया और उस दिन भी उन्होंने मुझे जल्दी निकलने की जिद की, लेकिन मैंने अनसुना कर दिया था. भंडारा से नागपुर बस स्थानक आने के लिए डेढ़ घंटा लगता है. मैं दोपहर 4:00 बजे के करीब भंडारा से निकली परंतु बीच में ही मेरी बस खराब हो गई थी. वहां से दूसरी बस मिलने में मेरा आधा घंटा निकल चुका था. मुझे बस स्थानक पहुंचते-पहुंचते शाम के 6.10 बज चुके थे. जैसे- तैसे बस स्थानक से ऑटो मिलते ही रेलवे स्टेशन पहुंचने पर मेरे 15 से 20 मिनट बर्बाद हो चुके थे. रेलवे स्टेशन पहुंच गई तो मुझे मेरी रेलगाड़ी निकलते हुए नजर आयी. मैं रेल गाड़ी के पीछे दौड़ रही थी. उस वक्त मैं बहुत घबराई हुई थी. मानो ऐसे लग रहा था कि, बैंक में नौकरी लगने का मेरा सपना मुझसे दूर जा रहा हो. तभी गाड़ी में आखरी डब्बे में हरी झंडी दिखाने वाले गार्ड ने मुझे दौड़ते हुए देखा और जोर से बोला कि रिजर्वेशन है क्या? मैंने दौड़ते-रोते हुए हाँ बोला. वैसे ही गार्ड ने चेन खींची और अचानक गाड़ी रुक गयी. मुझे आखरी डब्बे में ले लिया गया. मानो सब सपने जैसा लग रहा था परंतु सारी हकीकत थी. उस गार्ड को पूछा गया कि चेन क्यों खींची तो उसने वीआईपी का आदमी ऐसे बोल कर जवाब दिया था. थोड़ी देर में गाड़ी चल पड़ी मैं अचंभित रह गयी थी. घबराने की वजह से धड़कनें बहुत तेज हो गईं थीं. उस गार्ड ने मुझे पानी दिया. लगभग एक बोतल पानी मैं खत्म कर चुकी थी. उस गार्ड ने मुझे शांत होने के लिए बोला. सूरज शर्मा ऐसे उनका नाम था मैंने उनसे सारी हकीकत बयां कर दी और उनको हाथ जोड़ते हुए बोला कि, आप भगवान की तरह हो, अगर आप आज न होते तो शायद मैं कल बैंक का इंटरव्यू नहीं दे पाती. अगला स्टेशन आते ही उन्होंने एक आदमी को मेरे साथ भेज कर मुझे मेरे आरक्षण सीट तक पहुंचाया.

दूसरे दिन समय पर पहुंचकर मेरा बैंक का इंटरव्यू अच्छा गया था. लेकिन रेलगाड़ी का वह पल मुझे बार-बार याद आ रहा था और आंखों से आंसू आ रहे थे. रोते हुए मैंने मम्मी पापा को फोन किया और सारी हकीकत बयां कर दी और उनसे माफी भी मांगी. सच में मुझे उस दिन समय का महत्व क्या होता है वह समझ में आ चुका था. कुछ महीने बाद मुझे यूनियन बैंक ऑफ इंडिया तेल्हारा शाखा में तैनाती मिली. मगर उस आदमी को मैं कैसे भूल सकती हूं जिन्होंने यहां तक आने में मेरी मदद की थी. मैं मिठाई का डब्बा लेकर उनसे मिलने नागपुर रेलवे स्टेशन गयी और उनके पैर छूते हुए उनको धन्यवाद बोली और कहा कि, अगर आप उस दिन रेलगाड़ी न रुकाते तो आज मुझे यूनियन बैंक ऑफ इंडिया में तैनाती न मिलती. उनको याद था और मुझे मिलकर उनको बड़ी प्रसन्नता हुई थी. उन्होंने मुझे समझाते हुए कहा कि, उस दिन तुम बहुत घबराई हुई थी इसलिए मैंने तुमसे कुछ कहा नहीं, लेकिन ऐसे हमेशा कोई तुम्हारी मदद करने नहीं आएगा. आज तुम बैंक में लगी हो तो उसमें भी समय का पालन करना बहुत जरूरी है. इसलिए समय की कीमत को थोड़ी गंभीरता से लो. यदि एकबार समय चला जाए, तो कभी वापस नहीं आता. यह हमेशा आगे की ओर सीधी दिशा में चलता है न कि पीछे की ओर. इस संसार में सब कुछ समय पर निर्भर करता है, समय से पहले कुछ भी नहीं होता है. समय बहुत कीमती है और हमें इसे किसी भी तरह से बर्बाद नहीं करना चाहिए. इसी तरह, हम जो पैसा खर्च करते हैं, उसे कमा सकते हैं, लेकिन हम अपने खोए हुए समय को वापस नहीं पा सकते. तो, यह समय को पैसे से अधिक मूल्यवान बनाता है. इसलिए, हमें समय का सदुपयोग करना चाहिए. यह दुनिया की सबसे मूल्यवान और कीमती चीज है. साथ ही, हमें इसका उपयोग अपने अच्छे के साथ-साथ अपने आस-पास के अन्य लोगों के लिए भी करना चाहिए. इससे हमें और समाज को बेहतर कल की ओर बढ़ने में मदद मिलेगी. वह दिन मुझे बहुत कुछ सिखा गया. मेरे इतने महत्वपूर्ण काम के लिए मुझे दो दिन पहले ही पहुंचना चाहिए था. समय की बर्बादी की वजह से आज मेरा भविष्य बर्बाद हो जाता. उस दिन मुझे एक अच्छी सीख मिल गयी थी. जिंदगी में सफलता प्राप्त करने के लिए समय के महत्व को समझना और उसका सम्मान करना जरूरी है.

"समय पर वाहन आते जाते, मंजिल पर सबको पहुंचाते
समय का करता जो अपमान, होता उसका नुकसान
समय के साथ चलना सीखें, जीवन ही हो जाएगा आसान
समय का सदुपयोग करें, बनें एक अच्छा इंसान".

जयश्री खापरे
क्षे. का., नागपुर

प्रधानमंत्री आवास योजना से सामाजिक एवं आर्थिक बदलाव

किसी भी देश की बढ़ती अर्थ व्यवस्था में उस देश की आवासीय क्षमता तथा स्थिति एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्तम्भ है. यदि देश में आवास की स्थिति में किसी भी प्रकार की कमी है तो उस देश की अर्थव्यवस्था में यह अत्यंत दुष्प्रभावी है. यदि किसी देश में आवास करना लोगों के लिए भयपूर्ण है (जैसे आतंकवाद का डर, अत्यधिक प्राकृतिक आपदाओं का डर आदि) ऐसी स्थिति में लोग उस देश की ओर कभी भी अपना मन नहीं मनाएंगे. अपितु उस देश में रहने वाले व्यक्ति स्वयं उस देश से पलायन करने के ध्यान में मग्न रहते हैं और ऐसी स्थिति में देश की अर्थव्यवस्था चरमराने लगती है.

हमारे भारत देश में आवास स्थिति में ऐसी कोई भी भयावह स्थिति नहीं है. किन्तु एक समय था जब देश में लोगों के लिए अपना स्वयं का मकान होना बहुत मुश्किल था. क्योंकि अपना मकान लेने के लिए हर किसी के पास इतने पैसे होना संभव नहीं था. इसलिए लोग सोचते थे कि जिसके पास अपना खुद का घर है वह व्यक्ति बहुत ही अमीर होगा या फिर वह उसके पुरखों का मकान होगा जो कि उसे मिल गया. मकान के लिए दलालों को, बिल्डरों को, मजदूरों को, सबको पैसा देने के बारे में सोचना भी एक गरीब व्यक्ति के लिए अपनी जान से भी ज़्यादा महंगा लगता था. उस समय अनेक बिल्डरों और दलालों की अपनी मनमानियों की वजह से ही देश में आवास महंगा होने लगा था. हर गरीब या मध्यमवर्गीय व्यक्ति अपना स्वयं का घर होने का केवल सपना ही देख सकता था.

ऐसी स्थिति में लोग सोचते थे कि कोई जादू की छड़ी घूम जाए और हम भी अमीर लोगों की तरह अपने खुद के घर में रह सकें - और ऐसा हुआ भी. सच में एक जादू की छड़ी घूमी, और ऐसी घूमी कि वो लोग जो इसको नामुमकिन बताते थे-उस छड़ी के साथ-साथ उनके दिमाग ही घूम गए. इस जादू की छड़ी का नाम था-'प्रधान मंत्री आवास योजना'. सरकार द्वारा गरीबों के लिए अनेक योजनाएँ लागू की गईं जैसे प्रधान मंत्री जन-धन योजना, प्रधान मंत्री सुरक्षा बीमा योजना, प्रधान मंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, अटल पेंशन योजना, उज्ज्वला योजना आदि. इन सब योजनाओं की कड़ी में एक और महत्वपूर्ण कड़ी थी- प्रधान मंत्री आवास योजना. इस योजना का उद्देश्य वर्ष 2022 तक सभी परिवारों को आवास. जून 2015 में इस उत्कृष्ट योजना का उद्घाटन किया गया जिसके अंतर्गत सरकार द्वारा वर्ष 2022 तक 20 लाख घरों का निर्माण करवाया जाना था. इनमें से 18 लाख मकान झुग्गियों-झोपड़ियों वाले इलाकों में तथा बाकी के 2 लाख मकान शहरों के गरीब इलाकों में बनवाने की योजना बनाई गई.

सरकार ने इस योजना को 3 चरणों मे बांटा है-

1. पहले चरण के अंतर्गत मार्च 2017 तक 100 से भी अधिक शहरों में घरों का निर्माण करने का लक्ष्य रखा गया था और उसे पूर्ण किया गया.

2. दूसरे चरण की शुरुआत अप्रैल 2017 से हुई. इस चरण में मार्च 2019 तक 200 से अधिक शहरों में गृह निर्माण का लक्ष्य रखा गया.

3. अंतिम चरण में वर्ष 2022 तक बाकी बचे सभी शहरों में गृह निर्माण करके आदरणीय प्रधानमंत्री जी के सभी के लिए आवास का सपना साकार हुआ.

प्रधान मंत्री योजना को स्वच्छ भारत योजना के साथ भी जोड़ा गया है. इसके अंतर्गत बनने वाले शौचालयों के लिए स्वच्छ भारत योजना के तहत अलग से राशि आबंटित की जाएगी. इसके अतिरिक्त प्रधान

मंत्री ग्रामीण आवास योजना के अंतर्गत यदि लाभार्थी चाहे तो 70 हजार रुपये का लोन भी ले सकता है जिस पर उसे कोई ब्याज नहीं देना होगा. इस राशि को लाभार्थी को किश्तों के रूप मे भरना होगा जो कि उसे विभिन्न वित्तीय संस्थाओं से मिल सकता है. शहरी क्षेत्रों में उम्मीदवार 70 हजार से अधिक का लोन ले सकता है जो कि बहुत ही किफ़ायती ब्याज दरों में उपलब्ध होगा.

इस योजना के अंतर्गत मकानों को 4 अलग अलग वर्गों में बांटा गया है-

i. **(ईडब्ल्यूएस) आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग** - यह मकान उन परिवारों के लिए हैं जो आर्थिक रूप से अत्यंत कमजोर हैं तथा उनकी इतनी क्षमता नहीं है कि वे कोई महंगा मकान खरीद सकें. ऐसे परिवार जिनकी वार्षिक आय रु. 3 लाख या उससे कम हो, वे इस वर्ग में आते हैं.

ii. **(एलआईजी) निम्न आय समूह** - यह मकान उन लोगों के लिए है जो कि आर्थिक रूप से अधिक सक्षम नहीं हैं. उनके पास आय का स्रोत तो है किन्तु वह आय उनकी रोज़मर्रा की ज़िंदगी से अतिरिक्त कोई खर्च करने पर उन्हें तकलीफ दे सकती है. ऐसे परिवारों की वार्षिक आय 3 लाख से 6 लाख रुपये तक होती है.

iii. **(एमआईजी) मध्यम आय समूह** - यह मकान है देश के मध्यमवर्गीय लोगों के लिए जिनके पास उनकी आमदनी का स्रोत है, किन्तु मकानों की कीमतें तथा लोन की ब्याज दरें इतनी हैं कि उन्हें अपना घर लेने का सपना पूरा करने से रोक रही हैं. इन परिवारों को प्राय: 2 भागों में बांटा गया है-

   a. एमआईजी-I - ऐसे परिवार जिनकी वार्षिक आय 6 लाख से 12 लाख रुपये है.

   b. एमआईजी-II - ऐसे परिवार जिनकी वार्षिक आय 12 लाख से 18 लाख रूपये है.

iv. **एचआईजी (उच्च आय समूह)** - यह आर्थिक रूप से मजबूत वर्ग है, जिनकी पारिवारिक आय रू. 18 लाख से अधिक है. ऐसे लोग जिनके पास आय का बड़ा स्रोत है, तथा उन्हें अपनी बचत का पैसा महंगे मकानों पर फिजूल नहीं गंवाना है अपितु उसे अपनी सुविधा अनुसार निवेश करना है, उनके लिए यह मकान सर्वोच्च है.

इस योजना द्वारा लोगों का सबसे बड़ा सपना सच हुआ. अब हर व्यक्ति अपने खुद के घर में रहने के न ही सिर्फ सपने देख सकता है, अपितु उस सपने को सच भी होता हुआ देख सकता है. इससे देश में रियल इस्टेट कंपनियों, बिल्डरों आदि की मनमानियाँ न झेलते हुए सीधे सरकार से ही मकान प्राप्त कर सकते हैं. इससे लोगों की आर्थिक स्थिति में मजबूती आएगी. क्योंकि जो मकान किसी बिल्डर से लेने पर जिस लागत में मिलता है, सरकार द्वारा वही मकान उससे बहुत कम लागत में मिल जाता है. इसके अतिरिक्त किसी भी बैंक से ऋण लेने की स्थिति में उस पर लग रहे ब्याज पर भी सरकार द्वारा सब्सिडी दी जा रही है.

जब देश में हर व्यक्ति के पास अपना खुद का मकान होगा तो देश आर्थिक रूप से अत्यधिक ऊंचा उठ जाएगा. और इसकी शुरुआत होती भी दिख रही है.

जिस देश में हर व्यक्ति अपने खुद के घर में रहता हो, वहाँ मानसिक रूप से गरीबी बहुत दूर हो जाती है. और जहां मन से गरीबी का ख्याल हट जाये, तो व्यक्ति अपनी रोज़मर्रा की चिंता भूलने लगता है, क्योंकि उसकी सबसे बड़ी चिंता तो दूर हो चुकी है. ऐसे में व्यक्ति अपने आस-पास, अपने समाज में हो रही समस्याओं की ओर ध्यान दे सकता है और उनके निवारण हेतु प्रयत्न कर सकता है. इससे देश की अनेक समस्याओं का निवारण हो सकता है और हम एक उज्ज्वल समाज का निर्माण कर सकते हैं. जब देश आर्थिक तथा सामाजिक, दोनों रूपों से मजबूत होगा तो विदेशों में भी हमारे देश के प्रति अभिरुचि बढ़ेगी और लोग हमारे देश में निवेश करना अधिक पसंद करेंगे. इससे हमारे देश की अर्थव्यवस्था नित नई-नई ऊंचाइयों की ओर बढ़ेगी और हम विकासशील देशों की सूची से हट कर विकसित देशों की सूची में आ जाएंगे. और वह दिन भी दूर नहीं होगा जब हमारा देश विश्व की सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था वाला देश बन जाएगा.

राहुल लखानी
सरोना शाखा
क्षे. का., रायपुर

Role of AI & ML in Banking

Introduction : Artificial Intelligence (AI) and Machine Learning (ML) are rapidly transforming the banking industry. With advancements in data processing, machine learning algorithms, and computing power, AI is changing the way banks operate, compete, and serve their customers. AI and ML technologies have the potential to enhance operational efficiency, risk management, and customer engagement in the banking sector. We explore the role of AI and ML in the banking industry, highlighting the benefits and challenges of these technologies.

Benefits of AI and ML in Banking

1. **Fraud Detection and Prevention :** AI and ML technologies can help banks detect and prevent fraud more efficiently than traditional methods. Fraudsters are becoming more sophisticated, and it is becoming increasingly difficult for banks to detect fraudulent activities. AI and ML can detect suspicious patterns in real time and alert the bank's fraud prevention team. Additionally, AI algorithms can learn from historical data and identify patterns of fraudulent activities, making it easier for banks to prevent future fraud.
2. **Customer Service and Personalization :** AI and ML can help banks provide personalized services to customers. By analyzing customers' transaction history, browsing patterns, and other data, banks can provide personalized recommendations, alerts, and offers. This personalization can improve customer satisfaction and loyalty, as customers feel that their needs are being met.
3. **Credit Scoring and Risk Management :** AI and ML can help banks analyze customer data to make more informed decisions on lending and credit scoring. With these technologies, banks can analyze a wider range of data than traditional credit scoring methods, such as social media data, and make more accurate predictions on creditworthiness. Additionally, AI and ML can help banks manage risk by detecting early warning signs of financial distress and predicting potential credit defaults.
4. **Operational Efficiency :** AI and ML can help banks automate various back-office tasks, such as data entry and processing, document management, and compliance. This automation can save bank's time and reduce the risk of human errors. Additionally, AI and ML can help banks optimize their processes and workflows, improving efficiency and reducing costs.
5. **Investment and Trading :** AI and ML can help banks make more informed investment and trading decisions. These technologies can analyze market data, identify patterns, and make predictions on market trends. Additionally, AI and ML can help banks manage their investment portfolios by monitoring risks and adjusting investments accordingly.

Challenges of AI and ML in Banking

1. **Data Quality and Privacy :** The quality of data is essential to the effectiveness of AI and ML algorithms. Inaccurate or incomplete data can lead to inaccurate predictions and decisions. Additionally, the use of customer data raises concerns about privacy and security. Banks must ensure that customer data is collected and used ethically and in compliance with data protection regulations.
2. **Integration with Legacy Systems :** Most banks have legacy systems that were not designed to work with AI and ML technologies. Integrating these technologies with legacy systems can be challenging and time-consuming. Additionally, the lack of expertise in AI and ML among bank employees can make the integration process more difficult.
3. **Bias and Fairness :** AI and ML algorithms can be biased if they are based on biased data. This bias can lead to unfair decisions, such as discrimination against certain customer groups. Banks must ensure that their algorithms are trained on diverse data sets and are regularly audited to identify and mitigate any bias.
4. **Regulatory Compliance :** The use of AI and ML in banking must comply with various regulations, such as GDPR and Basel III. Banks must ensure that the use of technologies is transparent, explainable, and auditable to comply with. Additionally, the use of AI and ML in areas such as credit scoring and risk management raises concerns about fairness and discrimination, which must be addressed to comply with regulatory requirements.

Conclusion : AI and ML are transforming the banking industry, offering many benefits, including enhanced fraud detection, personalized customer service, improved credit scoring and risk management, operational efficiency, and better investment and trading decisions. However, the adoption of these technologies also comes with challenges, such as data quality and privacy, integration with legacy systems, bias and fairness, and regulatory compliance.

To address these challenges, banks must invest in data quality and privacy measures, provide training and resources for employees to develop expertise in AI and ML, ensure algorithms are transparent and auditable, and regularly audit algorithms to detect and mitigate any bias. Additionally, regulatory compliance must be a priority for banks, and they must ensure that their use of AI and ML complies with all applicable regulations.

In conclusion, the role of AI and ML in the banking industry is crucial in improving efficiency, customer satisfaction, and risk management. However, the benefits and challenges of these technologies must be carefully weighed, and their implementation must be done responsibly and ethically. With proper implementation and management, AI and ML can help banks thrive in the digital age, providing better services to their customers and improving their overall performance.

Vikram Singh
Digitization Vertical,
Central Office, Mumbai

Insolvency Resolution and Bankruptcy Process Against Personal Guarantors

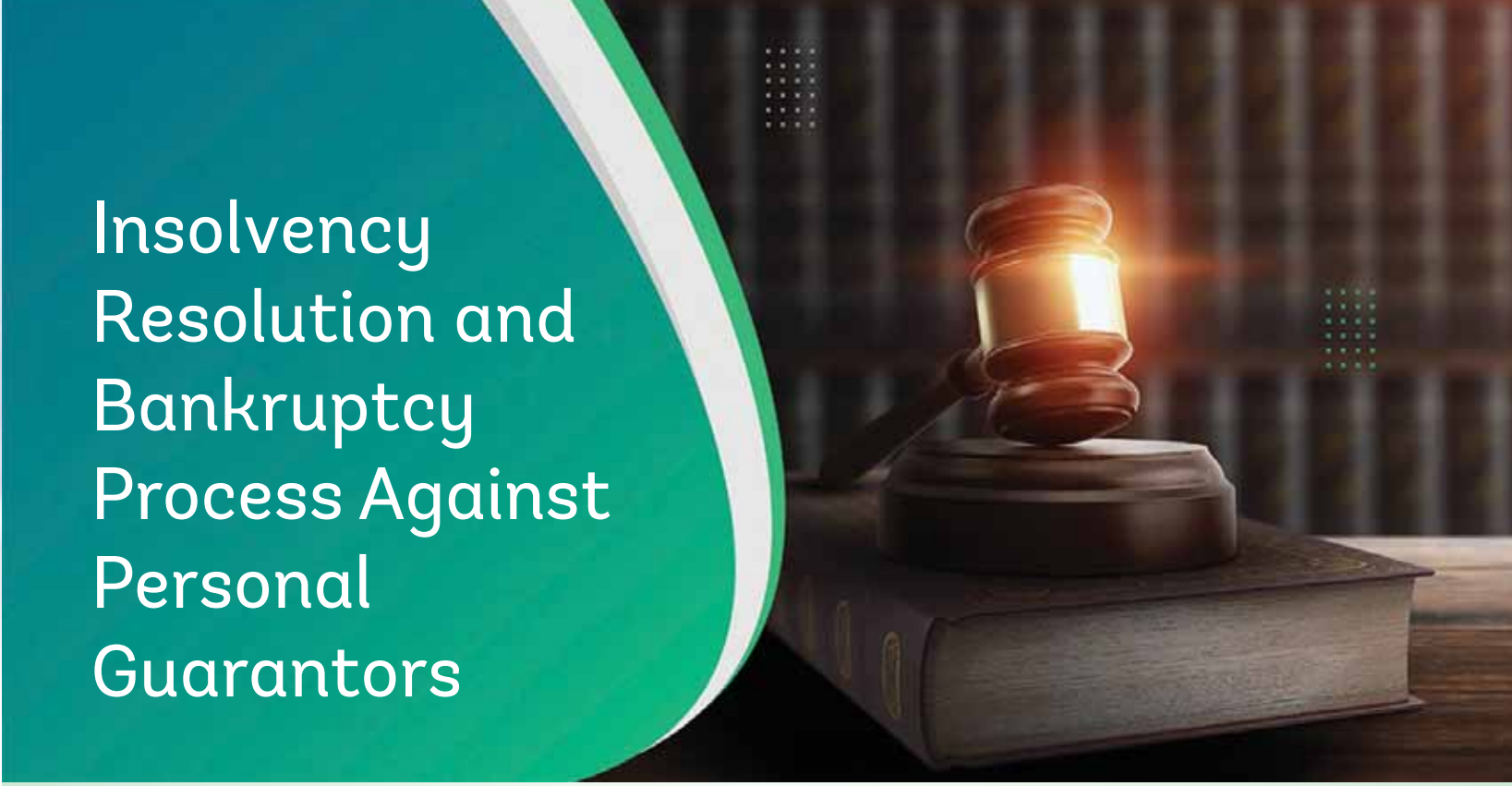

Insolvency provisions under IBC were initially not enforced against non-corporates which include individuals and partnerships. However, the Central Government has included individuals, who stood as a guarantor to corporates to repay debt issued by the creditor under a contract of guarantee. Personal guarantor does not include partnership firms .

Sec 128 of the Contract Act provides that, the liability of the guarantor is co-extensive with the liability of the Principal Debtor unless otherwise provided by the terms of the contract of guarantee. Further, U/s 137 of the Contract Act mere forbearance on part of the creditor to sue the Principal Debtor or to enforce any remedy against the Principal Debtor does not discharge the guarantor. Thus, a creditor has the right to proceed against both since the guarantor and debtor are equally liable to the creditor.

Liability of Guarantors under the Insolvency and Bankruptcy Code

The creditor's right to initiate insolvency provision against Personal Guarantor was enforced under IBC by the Central Government through a notification dated 15.11.2019 effective from 01.12.2019.

In pursuance to the aforesaid notification the Central Government has also enacted various Rules and Regulations with effect from 1st December, 2019 Viz.,

(i) The Insolvency and Bankruptcy (Application to Adjudicating Authority for Insolvency Resolution Process for personal Guarantors to Corporate Debtors) Rules, 2019 (" Insolvency Rules")

(ii) The Insolvency and Bankruptcy ((Application to Adjudicating Authority for Insolvency Bankruptcy Process for personal Guarantors to Corporate Debtors) Rules, 2019 (" Bankruptcy Rules")

(iii) The Insolvency and Bankruptcy Board of India (Insolvency Resolution Process for Personal Guarantors to Corporate Debtors) Regulations, 2019 ("Insolvency Regulations")

(iv) The Insolvency and Bankruptcy Board of India (Bankruptcy Process for Personal Guarantors to Corporate Debtors) Regulations, 2019 ("Bankruptcy Regulations")

The validity of the above notification was challenged before the Supreme Court in Lalit Kumar Jain v Union of India[2021] and the Apex court ruled that the notification is legal and not ultra vires the Code. The judgement also confirmed the liability of personal guarantors under IBC.

In pursuance of the afore mentioned notification our Bank has issued SOP for invoking Guarantee and highlights of SOP are as under:

- Identification of accounts: All NPA accounts having outstanding balance of Rs. 1,00,00,000/- and above shall be identified for initiation of IRP against the Guarantors.

- Permission for filing IRP against the Guarantors: as per the delegated powers as provided under Recovery Management Policy for initiating CIRP process shall be followed. Completion of SARFAESI process against the guarantor's property shall be ensured before providing permission. Format for seeking permission is annexure 'A' to the SOP.

- Issuance of Demand Notice: is a prerequisite for initiating IRP against the guarantors. Therefore, Branch must issue notice as per format (Annexure B to SOP) calling upon the guarantor to pay up the defaulted unpaid debt within 14 (fourteen) days.

- Service of Demand Notice: Demand notice may be sent by means of Registered Post, Speed Post, Courier or electronic form which can be produce or generate an acknowledgment of receipt of such communication.

- Identification/selection of advocate: Advocate may be identified by the Legal Department , RO from the existing panel.

- Approval of Draft Application for initiation of IBC process: Application for claim amount to Rs. 50 Cr. shall be vetted by Law Officer at Regional Office. Application for claim amt. above Rs. 50 crore shall be vetted by Law Officer (SM and above) a posted at FGMO.

- Filing of Application before the NCLT: on receipt of approval, Branch shall file application before the NCLT either through the Resolution Professional or Advocate in the prescribed format (Annexure C to SOP).

- Interim Moratorium: An interim moratorium shall commence on the date of the application in relation to all the debts and it shall continue till admission of application. During the interim-moratorium period, all pending legal actions or proceedings in respect of any debt shall be deemed to have been stayed; and the creditors of the debtor shall not initiate any legal action or proceedings in respect of any debt.

- Service of Application filed before the NCLT to Guarantor: Simultaneously the Branch shall through the dealing Advocate or Resolution Professional serve the copy application, within 7 days, filed before the NCLT to guarantor and the corporate debtor for whom the guarantor is a personal guarantor.

- Admission Process: within 7 days of filing application, NCLT shall direct the IBBI for confirmation of appointment of Resolution Professional in turn within 10 days IBBI either confirm or nominate another RP. Thereafter, within 10 days of his appointment, RP shall examine and submit report to NCLT recommending approval or rejection of the application. Thereafter, within 14 days of submission of report by the RP, NCLT may pass an order either admitting or rejecting the application. In cases of admission, on request of RP NCLT may issue instructions for the purpose of conducting negotiations between the debtor and creditors and arriving at a repayment plan. Moratorium commences from the date of admission for 180 days. In case of rejection based of report submitted by the RP, the creditor is entitled to file for a bankruptcy order. Withdrawal of application is permitted with the permission of NCLT by the applicant. However, after admission, application can only be withdrawn with consent of 90% of creditors.

- Resolution process: Public Notice by the NCLT shall be issued within seven days of admission inviting claims from all creditors within twenty -one days of such notice. Branch shall submit its claim along with proof to the resolution professional in Form B, on or before the last date mentioned in the public notice issued under section 102. Form B is required to be filed in respect of Insolvency and Bankruptcy process initiated against the guarantors by our Bank as well by other creditors or by the guarantors themselves. RP shall prepare the list of Creditors within 30 days from the date of public notice. Thereafter, Resolution process and Bankruptcy process is concluded in accordance with IBC code.

Whether proceeding against the personal guarantor can be initiated even before filing CIRP against the corporate debtor?

U/s 95 of the Code, the creditor can initiate an application against the Personal Guarantor invoking insolvency provisions. The creditor's right to invoke personal guarantee contracts during insolvency proceedings, allows the creditor to recover the debt incurred to it as a last resort. In Sanjeev Shriya vs. State Bank of India, the court interpreted u/s 60(2) and acknowledged the creditor's freedom to proceed against the corporate debtor's guarantor. The Court observed that "an application relating to the insolvency resolution or bankruptcy of a personal guarantor of such corporate debtor shall be filed before such NCLT" clearly brings out the intention of the legislature that the guarantor is

equally liable for the debts of the debtor.

The judgement in State Bank of India vs V. Ramakrishnan and anr. gave credence to the confusion regarding whether proceeding against the personal guarantor can be initiated even before filing CIRP against the corporate debtor. Further, the Apex court noted that the moment any proceeding against the corporate debtor is initiated, any proceeding pending against the personal guarantor shall be transferred to the same NCLT or if any proceeding against the corporate debtor is existing then the proceeding against the personal guarantor shall be filed before the same NCLT.

The Hon'ble Supreme Court in the decision of Mahendra Kumar Jajodia vs. State Bank of India held that the Financial Creditors, especially Banks, may now initiate Insolvency Proceedings directly against the Personal Guarantors of Corporate Debtors, irrespective of pending proceedings in the Court against the Corporate Debtor under Code. Such clarification was given by interpreting u/s 60(1) of the code that no prerequisite initiation of CIRP against a corporate debtor is required to initiate IRP against a personal guarantor and only if CIRP or Liquidation Proceeding of a Corporate Debtor is already pending before 'a' NCLT then the application relating to Insolvency Process of a Corporate Guarantor or Personal Guarantor should be filed before 'such' NCLT. Thus, it is now settled law that an application to start insolvency proceedings against a personal guarantor cannot be denied only on the basis that the corporate debtor does not have an ongoing insolvency resolution or liquidation proceedings. By this, the Corporate Creditor recovers from the Personal Guarantor and Corporate Debtor can continue to run the company; in this scenario the existence of the Corporate Debtor allows the Corporate Guarantor to invoke rights of subrogation.

Whether right of subrogation is available to Guarantors

The guarantor's right to step into the shoes of the creditor and recover the amount settled on behalf of the creditor is founded on the notion of equity. The Supreme Court in Krishna Pillai Rajasekharan Nair (D) by Lrs. and Ors. vs. Padmanabha Pillai (D) by Lrs. and Ors. observed that;

"A subrogation rests upon the doctrine of equity and the principles of natural justice and not on the privity of contract. One of these principles is that a person, paying money which another is bound by law to pay, is entitled to be reimbursed by the other. This principle is enacted in U/s 69 of the Contract Act, 1872. Another principle is found in equity: 'he who seeks equity must do equity'".

The Supreme Court in Bank of Bihar vs. Damodar Prasad has observed that it is the duty of the surety to pay the debt, and on such payment, the surety is entitled to recover the entire amount from the principal debtor. The right of surety is not founded on the principles of contract but is rather based upon the principle of natural justice.

Whether approval of resolution plan discharge the Guarantors

In the matter of Lalit Kumar Jain the Apex Court held that approval of a resolution plan does not ipso facto discharge a personal guarantor (of a corporate debtor) of her or his liabilities under the contract of guarantee. As held by this Court, the release or discharge of a principal borrower from the debt owed by it to its creditor, by an involuntary process i.e. by operation of law, or due to liquidation or insolvency proceeding, does not absolve the surety/guarantor of his or her liability, which arises out of an independent contract.

Whether a Guarantor against whom insolvency initiated can be a resolution applicant

The Supreme Court in Bank of Baroda Vs. MBL Infrastructure Ltd. (Civil Appeal no. 8411/2019) delivered an important judgment dated 18.01.2022 interpreting the scope of Section 29 A(h) of IBC Code, 2016 (sec29 A specifies the categories of persons who are not eligible to be resolution applicants). The Court held that a guarantor whose guarantee stands invoked by any creditor barred from giving Resolution Plan, though Insolvency initiated by another creditor.

Conclusion: As a consequence of the notification, the class of Personal Guarantors to Corporate Debtor got picked up as a special class of individuals who could now be dealt with by the creditors alongside the insolvency resolution process undertaken by them (the creditors) under part II of code against the Corporate Debtor itself. They could be brought to book and made to account before the same adjudicating and appellate authorities under IBC as applied to Corporate debtors viz NCLT and NCLAT.

Banne Khan
Chief Manager, ZO-Ranchi

Meesapulimala, Kerala

There is nothing more refreshing than exploring the silent serene valley and the mountains. Deep in the jungle some birds chirp, melodious sounds of water flowing though rocks adds some soothing effect, warm yet refreshing breeze makes the moment pleasent, and the saga goes on. That may be the reason people keep visiting mountains despite the hardship it poses. Meesapulimala second highest peak of South India, situated near Munnar, Idukki district of Kerala, towering at a height of 2659 mtrs above sea level and the trek to peak traverse through vivid colours of Rodo valley with beautiful glimpses of surrounding areas. Kerala Forest Development

Corporation through its variety of basecamp arranges treks. Sunrise and Sunset from the basecamp is a view beyond imagination. Throughout the year the temperature is cool and in monsoon season gushing rains are common. Travelling from Munnar to the base camp via the forest dept provided jeeps is an additional adventure for the explorer.

Though the pictures don't describe the view to its fullest, it's a peek to have an idea of what to expect. These pictures make us think how wonderful nature is.

Prashanth M
Senior Manager Operations,
CO Annex, Mangaluru

Indian National Flag

The National flag is a horizontal tricolor of saffron(kesaria) at the top, white in the middle and green at the bottom in equal proportion. In the center of the white band is a navy blue wheel which represents the Ashokacharka. Officially the National Flag was adopted by the Constituent assembly on 22nd July, 1947. The amount of inspiration it provides has shaken the very grounds of colonial rulers which converted the struggle for independence into one of the largest democracy.

Genesis : There have been many movements and struggles to free the country from the shackles of slavery. The thirty month journey of flag designing brought them all together. The Indian Tiranga/ Tricolour was designed by Pingali Venkayya in 1921 uniting billions of people in the struggle for independence. There are many interesting factors behind the invention of National Flag and one such incident which inspired Pingali Venkayya was during the 22nd All India Congress General Assembly in 1906, that they had to pay homage to the British Aational flag before the opening of the conference. That's when it came to mind that a race needs a flag for its movement. This prompted Pingali Venkayya to design our own national Flag.

Although many leaders were instrumental in designing different national flags, they were not popular with general public. It was the flag designed by Pingali Venkayya that became the compass for the national movement and became the flag of our Nation. The National Flag made by Pingali Venkayya was first hoisted at the Indian National Congress meeting in Lucknow in 1916. The flag initially designed by Pingali Venkayya had a red and green carousel logo. However, subsequent changes were suggested with a spinning wheel marker between red, green and white.

In the 1931 congress general assembly, some objections were raised. A committee was formed comprising Pandit Jawaharlal Nehru, Bhogaraju Pattabhi Seetharamaiah and Tara Singh Master, who made changes, which was approved by the constituent assembly. It was suggested to replace the Spinning wheel with Ashoka Chakra. Except for that, the flag designed by Pingali Venkayya was adopted.

The Country has so far traversed many milestones without compromising on Sovereignty and Integrity of our Nation.

As the design still remains intact physically and psychologically, the mind and heart put in by our freedom fighters clearly displays that though divided by many religions and caste boundaries, we as a country remain one by heart. All Indian citizens must pledge to respect the Indian national flag and protect its dignity at all costs. The Flag is a great reminder of the times of struggle during the British rule.

G V C GOWTHAM
ZO Vijayawada

Konark Sun Temple, Odisha

Konark Sun Temple is located at Konark, about 35 km northeast of Puri on the coast of Odisha situated on the banks of the Chandrabhaga river. It is a spectacular enormous temple dedicated to the revered Hindu deity Surya and is one of the major tourist destinations in India. A large number of pilgrims including foreign tourists come to see this ancient marvellous sculpture. Konark is made up of two words 'kona' and 'arka'. Where the 'Kona' means Corner and the 'Arka' means Sun and can be called Sun of the Corner. This temple is also known as the Black Pagoda as the tower of the temple looks black. The Sun Temple of Konark is recognized by UNESCO as a World Heritage Site.

This temple was constructed in the 13th century by King Langula Narasimhadeva I (1238–1250 CE) of the Eastern Ganga Dynasty in reverence to the Sun, God Surya. According to mythology, Lord Krishna's son Samba suffered from leprosy due to a curse from his father. Samba did penance for 12 years at Konark at the ocean confluence of the Chandrabhaga River at Mitravan and pleased the Sun God, who cured his illness. Expressing gratitude towards him, samba decided to build a temple in reverence of lord Surya. The next day while bathing in the river, he found a statue, which was given shape of the Sun God by Vishwakarma. Samba installed this idol in the temple built by him at Mitravan. The place has since been considered sacred and known as the Sun Temple of Konark.

The Sun Temple of Konark is a vast convergence of artistic splendor and excellence of engineering & architecture. The great ruler of the Ganga dynasty, King Langula Narasimhadeva-I, built the majestic Sun Temple of Konark with the help of 1200 artisans during his reign. Since the rulers of the Ganga dynasty venerate the God Sun, the temple was constructed in the Kalinga style where the God Sun seated on a chariot in the Jagmohan (Sanctum sanctorum) of the temple and the stones are carved beautiful. This temple is built of red sandstone and black granite stones. The entire temple has been carved in such a beautiful style which gives an appearance of seven horses with twelve pair of wheels dragging a chariot showing the Sun God seated.

A heavy magnet was placed on the top of the main temple and every two stones of the temple are equipped with iron plates. The statue seated in the sanctum sanctorum is said to be floating in the air due to the magnets. The Sun God is considered a symbol of energy and life. The Sun Temple of Konark is considered to be the best for treating diseases and fulfilling wishes.

The speciality of Sun Temple of Konark is that 12 pairs of wheels are located at the base of this temple. In fact, these wheels are unique because they also express time. The exact time of day can be estimated by seeing the shadow of these wheels. The Konark temple wheels have 8 wider spokes and 8 thinner spokes. The distance

between two wider spokes is of 3 hours (180 minutes). The thinner spoke between two wider spokes is of 1.5 hours (90 minutes). There are 30 beads between one wider spoke to the next thinner spoke and each bead represents 3 minutes. The Sun dial shows time in anti-clockwise and the top centre wider spoke represents 12 o' clock midnight.

There is an iron sheet between each two stones in this temple. The upper floors of the temple are constructed of iron beams. 52 tonnes of magnetic iron have been used in the construction of the main temple crown. The entire structure of the temple is believed to be able to withstand the movements of the sea due to this huge magnet. It is believed that the first ray of sun falls directly on the main entrance in the Konark temple. The rays of the sun cross the temple and reflect brightly on the diamonds in the center of the statue. Two giant lions are installed at both side of the entrance of the Konark Sun Temple.

The Madala Panji (a kind of calendar) of Puri Jagannath temple describes how Kalapahada attacked Orissa in 1568. Including Konark temple, he broke most of the Hindu temples in Orissa. Though it was impossible to break the Sun temple of Konark, the stone walls of which are 20 to 25 feet (7.6 m) thick, he somehow managed to displace the Dadhinauti (The crown stone of the temple) and thus made way for the temple to collapse. He also broke most of the images and other side temples of Konark. Due to displacement of the Dadhinauti, the temple gradually collapsed and the roof of the Mukhasala (entrance) was also damaged, due to the falling down of stones from the temple top. The main temple at Konark no longer exists, however the damaged remains of the entrance temple still exists.

When the construction of the temple was nearing completion, the chief architect Bisu Maharana and his workers faced difficulty of fixing up the Dadhinauti (temple crown stone) in its proper position and the crown stone fell down many times. In the mean time the chief architect's son 'Dharmapada' came to see his father as he was away from his home for a long time. Dharmapada was born a month after his father's departure and by that time twelve years had elapsed. His mother also never told him much about his father. On his 12th birthday he asked his mother a gift and his mother told him about his father and his responsibility to build the Sun Temple of Konark near the sea.

Dharmapada proceeded to the site where his father Bishu Maharana identified him. After meeting his father and other artisans he came to know that they were not happy and facing a major problem. Though Bishu Maharana was glad to see his son, he could not conceal the fact of his not being able to put the Dadhinauti (crown stone) properly despite several attempts and the dadhinauti (crown stone) used to fall down. He said, 'my boy, though the construction work is almost complete, we are experiencing difficulties in putting the kalasha (crown stone). If we fail to do it within 7 days, the king will detach our heads from our body'. On hearing this the boy immediately got up and discovered something wrong in the work. He immediately rectified the defect and fired the crown stone into its proper position.

The work was completed, but the artisans were still thinking of their fate, that if the king comes to know that a 12 year kid installed the crown stone whereas 1200 efficient artisans failed to do so, he will certainly think that the artisans were not doing their job properly, which a little boy had done in such a short time. Dharmapada never wanted glory, name or fame for his achievements. He was happy that he saved so may lives by completing the temple for Sun God. Dharmapada was very shocked and to cover up the matter, he climbed onto the temple top and jumped off into the deep blue waters of the sea to sacrifice his life.

A young boy who achieved the ultimate glory by completing the greatest temple ever built, sacrificed his life to save the life of others. After hundreds of years, the Sun Temple is ruined but Dharmapada is alive in the legend and in the ambition of every artisan of Odisha.

Sidharth Das
Treasury Department,
Central Office, Mumbai

उच्च कार्यपालक वेतनमान VII में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई !

पी. कृष्णन
महाप्रबंधक

उच्च कार्यपालक वेतनमान VI में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई !

सीवीएआर शर्मा
उप महाप्रबंधक

सोनालिका
उप महाप्रबंधक

विजेन्द्र बिहारी सहाय
उप महाप्रबंधक

ज्ञान शंकर नारायण
उप महाप्रबंधक

सत्यम सिंहय्या पलुगुला
उप महाप्रबंधक

वेंकट रजनीकांत उय्याला
उप महाप्रबंधक

मार्कण्डेय यादव
उप महाप्रबंधक

आंजनेयुलु दासारी
उप महाप्रबंधक

राजेश तिवारी
उप महाप्रबंधक

सुरेश दक्षिणामूर्ति गंजाम
उप महाप्रबंधक

प्रशांत देसाई
उप महाप्रबंधक

हम आपके नेतृत्व में बैंक के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं.

वी. ब्रह्मानंद रेड्डी
मुख्य महाप्रबंधक

बडातला श्रीनिवास राव
महाप्रबंधक

बिनोद कुमार पट्टनायक
महाप्रबंधक

राम कुमार
महाप्रबंधक

नूतन मिलिंद पाटिल
उप महाप्रबंधक

विकास कुमार सिन्हा
उप महाप्रबंधक

सुरेश कुमार अंगुराल
उप महाप्रबंधक

मंगेश रमेश महाले
उप महाप्रबंधक

एम रमेशचन्द्र प्रभु
उप महाप्रबंधक

तट्टी श्रीनिवास
उप महाप्रबंधक

अखिलेश्वर चौधरी
उप महाप्रबंधक

अजित वसंत मराठे
उप महाप्रबंधक

ए. रवींद्र
उप महाप्रबंधक

के वी एस सत्यनारायण मूर्ति
उप महाप्रबंधक

हम आपके सुखद एवं सक्रिय सेवानिवृत्त जीवन की कामना करते हैं.

Meet Beauty with Brain and Golden Heart – Mrs Priyanka Khanna

Mrs. India Fashion Icon, 2022 – Mrs. Priyanka Khanna is presently working as a Manager in our JC Road Branch under Bengaluru (south) Region. She has participated in the Mrs. India contest in Feb 2022. She is an epitome of beauty & grace and a kind human being. She shares her journey and future aspirations with our readers through our correspondent Ms. Pooja Verma in this interview.

1. Tell our readers about yourself?

I was born and brought up in Kolkata, and did my schooling there completing my Masters in Administration from Kolkata Itself. I joined Union bank of India in 2015, We are three sisters and one brother, I am the second child of my parents.

2. When and how did you join our bank?

I was in the private sector before I joind Union Bank. My father liked the working of Banks and wanted me to join a Bank.

3. What inspired you to participate in the Mrs. India contest?

Actually I liked modelling, and took one modelling assignment and it was a hit. I tried for an airhostess job too but God had better plans for me, so after modelling I wanted to be Ms. India and make my country proud. There were a few criteria and one of them was height which I was not able to fulfill. I am a very positive person, so when I told my fiancé about my dream , he was very

happy and the first thing I did after I got married was to participate in the Mrs. India contest. So you can say I got married for my dream! (Just kidding.)

4. How did you prepare yourself for this competition?

Since it was my childhood dream it came very naturally to me, as I was conscious, even in my busy schedule. I would always take time out for gymming and worked hard. After being shortlisted they gave us training and sessions for different rounds like ramp walking, questions and answer round, talent round. Apart from this my husband supported and encouraged me in my journey.

5. How was your experience during the competition?

I had an awesome experience. I look young for my age. Competitions of both Miss India and Mrs India were going on simultaneously and many people feel that I was to participate in Ms. India category. so that itself was a big compliment to me, as beautiful girls from all over India were there and I was looking like a teenager among all Mrs. India participants. During my first ramp walk I did very well, I was like a professional, though it was my first walk. So I felt very proud and blessed to be there.

6. Apart from beauty what were the other criteria?

Actually its not only about outer beauty but also about inner beauty, what you can give back to society. I have started an NGO with my friend. It is not yet registered but we are in the process. The NGO takes care of old age people and animals also. Last year we raised funds for an animal ambulance. They had an ambulance but it was for small animals. We have donated a bigger ambulance which can take care of cows, buffalos and other big animals, and we have raised funds and donated water coolers to an orphanage. We try our level best to give whatever we can.

7. Who is your role model?

My role models are my parents. We are three sisters and one brother. My parents always encouraged me to follow my dreams. They have full faith in me. They always wanted that we should live our lives to the fullest and fulfill our dreams.

8. After winning the third prize, what's your next move?

To be very honest, I want to bounce back this year, I want to comeback with the main crown. According to rules I cannot participate in the subsequent year. I have to wait for a year to apply again. So this year I want to go back with full preparation and I will come back to Union Bank of India with Mrs. India Crown.

9. How do you keep balance between work/office and your passion?

Its always about what you think and what your priorities are. If you want to do anything you have one reason. If you don't want to do anything you have 110 reasons. First our parents take care of us but as we grow up, we take care of ourselves. We get married we take care of our partner also, then kids we take care of them too. So we have 24 hrs only to manage our responsibilites. This is my priority, no matter how busy I am, I take time out for my passion.

10. Please share your achievements?

I am Mrs. India Finalist and represented My state in 2022.

I wore the crown of Mrs. India fashion Icon 2022,

Recently I won the record of India book of records for maximum weight of 125 kgs. balanced by a female in wall sit position

I have always won laurels in Union Bank of India for my contribution in Official Language Implementation and its no less than a reward for me.

11. Any expectations from the management for support of staff members' who are doing something extra apart from banking?

Whatever I am today is because of Union Bank of India. Management has always being very supportive. They even felicitated me after my victory. However for doing something extra we need to take time out from work. In that case management should give special leave or other facilities like flexi working hours, work from home facility etc. Apart from this I also have a suggestion. When I wanted to go for this competition, I was already prepared but there are many staff who are very talented, brilliant and want to achieve something for themselves and for the bank too. They don't have any idea how and whom to contact. I have seen that we have a talent pool in Face in the Union Bank crowd. They can be made a single point of contact so that others also take benefit and guidance from these acheivers.

12. Any mantra for our readers?

Success is not final, failure is not fatal, it is the courage to continue that makes life worth living.

Pooja Verma
RO. Bengaluru (South)

शिक्षा का बाजारीकरण

जिस तरह प्यासे को पानी की जरूरत होती है, ठीक उसी तरह अज्ञानी को ज्ञान की जरूरत होती है. शिक्षा, वह भाव बोध है जो उम्र, जाति, धर्म, अमीरी गरीबी की पराकाष्ठा से परे है. शिक्षा मानव सभ्यता की जननी है. सर्वप्रथम माँ से शुरू होकर शिक्षा का उन्नत वृक्ष जीवन पर्यन्त अटल रहता है. शिक्षा मानव को समाज में अच्छे- बुरे काम, सही-गलत का अर्थ आदि से परिचित कराती है. शिक्षा अनमोल है फिर भी समय चक्र के साथ-साथ इसका मूल्य लाभ हानि के तराजू में तौला जा रहा है. आधुनिक समाज, शिक्षा का एक बड़ा बाजार बन चुका है. पूर्वकाल में शिक्षा का मूल्य शिष्य की आर्थिक क्षमता के अनुरूप गुरुदक्षिणा समर्पित करने से गुरुकुलों में मिल जाया करती थी किन्तु आज शिक्षा प्राप्त करने के लिए मोटी रकम शुल्क के रूप में चुकानी पड़ती है. बढ़ती स्कूल कॉलेजों की फीस आम आदमी की रीढ़ कमजोर कर देती है. शिक्षा का मंदिर व्यापार में कब बदल गया पता ही नहीं चला.

सबसे पहले शिक्षा के महत्व पर हम प्रकाश डालेंगे. शिक्षा सभ्यता की जननी है. जीवन के मूल्यों का सार है. शिक्षा, न्याय-धर्म का बोध है शिक्षा, सत्य - असत्य की पहचान है शिक्षा. शिक्षा से हम उन्नति एवं जीवन में सफलताएँ प्राप्त करते हैं. शिक्षा सर्वव्यापी है, तभी तो स्वामी विवेकानन्द जी ने वर्ष 1893 में आर्ट इंस्टीट्यूट ऑफ शिकागो में सफल भाषण देकर विश्व को मंत्रमुग्ध कर दिया था. शिक्षा का महत्व एक छोटे से श्लोक में लिखा गया है -

"विद्यां ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम् ।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुखम्"।।

अर्थात विद्या विनय देती है; विनय से पात्रता, पात्रता से धन, धन से धर्म, और धर्म से सुख प्राप्त होता है. शिक्षा का अर्थ सिर्फ नौकरी पाना या अन्य लक्ष्य तक ही सीमित रहना नहीं है बल्कि एक अच्छा व्यक्तित्व धारण करना भी है. शिक्षा का सदुपयोग भी अपने आप में एक शिक्षा है. ज्ञान का अनुचित उपयोग विनाश का कारण बन जाता है. शिक्षा कई चरणों में अध्ययन के द्वारा प्राप्त की जाती है जिससे हमारा मस्तिष्क आयु के साथ विकसित होता है, हमारा सूचनातंत्र मजबूत होता है और हम अपने आसपास सभी गतिविधियों को समझ लेते हैं. वास्तव में देखा जाए तो शिक्षा के बिना सुखी जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है. हमारा सामर्थ्य शिक्षा से ही बढ़ता है.

यह तो सच है कि शिक्षा हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. आज के युग में पाठशालाएँ एक बड़े बाजार के रूप में उभर रही हैं. आधुनिक शिक्षा दिखावे की नाव में गोते लगा रही है. मूलभूत शिक्षा प्रणाली, बाजारीकरण के चलते कमजोर होती जा रही है. जिन बच्चों के सिर पर भविष्य का बोझ है उन्हें आज के शिक्षण तंत्र ने ग्राहक के तौर पर देखना चालू कर दिया है. इन बच्चों की नींव कमजोर होती जा रही है. बढ़ती प्रतिस्पर्धा के चलते आज के अभिभावकों के लिए उन्नत शिक्षण केंद्र का चयन कर पाना संभव नहीं है. मुख्य शिक्षा की धारा से हटकर अन्य विषयक ज्ञान आज अति महत्वपूर्ण दिखने लगा है. शिक्षा वह होनी चाहिए जिसमें संस्कृति का मेल हो, भाषा का रूपक हो, सभ्यता की प्रतिमाएँ हों, सत्य की राह हो. जबकि आज इसके विपरीत समाज एक ही दिशा में दिखावे की राह पर चलते दिख रहा है. बढ़ती स्कूलों की फीस अभिभावकों के लिए अति व्यय का साधन लगने लगा है और आम आदमी की पहुँच से शिक्षा दूर होती जा रही है शिक्षा. जिसके पास जैसी आमदनी वैसी उसकी दिलाने की शक्ति. आज पैसे तय करते हैं कि आपको क्या पढ़ना है और कितना पढ़ना है. हम कितना ज्यादा शिक्षा में व्यय करते हैं, अब इस पर हमारा जीवन निर्भर करता है. हाँ लेकिन एक बात तो है कि यदि ठान लें तो यह बाजारीकरण भी शिक्षा प्राप्त करने वाले का कुछ नहीं कर सकती. कई अपवाद हैं जो बिना साधनों के महापुरुष बने.

आजकल बाजारीकरण के कारण जगह-जगह कोचिंग की मण्डी हैं, उनका एक अलग मार्केट है, ज्ञान का मेनू कार्ड है, सबके अलग अलग मूल्य हैं. आपको डॉक्टर बनना है तो अलग शुल्क, और इंजीनियर बनना है तो अलग शुल्क. आपका हुनर नहीं बल्कि आर्थिक स्थिति शिक्षा के बाज़ार में आपका स्थान निर्धारित करता है. जिसको इंजीनियर बनना था आज वह लिपिक बन गया क्योंकि उसका सामर्थ्य धन से तय हुआ न कि उसके हुनर से. तभी तो किसी को कुछ बनना हो और कुछ बन के रह जाता. अक्सर सुनने को मिलता है कि - "हम तो ये बनना चाहते थे पर ये बन कर रह गए."

शिक्षा तो अनंतकाल से ही महत्वपूर्ण रही है पर इसका बाजारीकरण अब चरम पर है. शिक्षा प्रणाली को नियंत्रित करने की आवश्यकता है. गुरुकुलों से निकल कर आज आधुनिक सुपर मार्केट जैसे स्कूलों तक आ पहुंचे हैं. परिवर्तन अच्छी बात है, परंतु शिक्षा का स्तर गिर जाना यह सही नहीं है. हमें यदि हर क्षेत्र में विकास करना हो तो शिक्षित समाज की नींव रखना बहुत जरूरी है. शिक्षा का स्तर और शिक्षण केन्द्रों की बढ़ती फीस का संतुलन बनाने के लिए सरकार को नियामक तंत्र का गठन करना चाहिए, जिससे सभी को समान मूल्यों में शिक्षा प्राप्त हो सके. हमारा समाज तभी मजबूत बन पाएगा जब शिक्षा नीति अमल में लाई जाएगी. शिक्षा आधुनिक हो पर इतनी न हो कि आम आदमी की पहुँच से दूर हो जाए. सभी को शिक्षा का समान अधिकार मिलना चाहिए. शिक्षा जैसी महत्वपूर्ण चीज सबके बस की बात हो हम ऐसी कामना करते हैं.

अंशुल कुमार दुबे
धुले 03 शाखा, क्षे.का. नासिक

The Goldfish Theory

There is a famous proven theory that the growth of a Goldfish is proportionate to the size of the fish tank that it is kept in. Further it does not grow as much in a fish tank as it does in a river. A goldfish will keep growing provided the following three conditions are fulfilled.

1. It has clean water.
2. It is properly fed.
3. The tank is large enough to sustain its growth.

This analogy is also applicable for the growth of employees in an organization.

Clean water: Every organization needs to provide a safe and healthy environment for their employees to grow. It not only indicates industry and government-mandated safety standards but also related to the psychological safety environment. Psychological safety is the belief that you will not be punished or humiliated for speaking up with ideas, questions, concerns, or mistakes. At work, it's a shared expectation held by staff that teammates will not embarrass, reject, or punish them for sharing ideas, taking risks, or soliciting feedback. Psychological safety does not mean that everyone is nice to each other, but it means that everyone can ask bold questions, voice their opinions, speak freely to bring innovative ideas, and take calculated risks for the betterment of the organization.

The psychological safety of the workplace can be improved by listening to the employees and paying attention to what they need to be most effective. This in turn encourages them to voice their opinion. It can also be improved by promoting healthy disagreement where employees can raise their concerns. This enables organizations to have a different perspective on the problems.

Properly Fed: Properly fed, means feeding physical and mental wellness to the employee of the organization and giving them the energy to prosper. One way of doing this is by creating a physical wellness program for employees which includes creating infrastructure or creating a culture of well-being among employees. Along with physical wellness mental wellness of employees is also important. The happiest and most productive employees are those who find purpose in their work. According to a report by the Mental Health Foundation, there is strong evidence that workplaces with a high level of mental well-being program are more productive and addressing well-being at the workplace increases employee productivity by 12%. The following measures can be adopted for this purpose.

- Providing a vision - explain the mission of the company beyond financial success. How individual employee's effort contribute to the community, to the economy and to the greater good of society.
- Show recognition - employees who know their efforts are appreciated are more likely to be happy, loyal, and productive.
- Culture of empathy - people want to know that they matter, and the best way to show care is a willingness to listen to the employees' concerns.

Big Tank : Once the organization has created an environment of well-being and provided them with inputs to perform, the organization should also keep in mind that according to the goldfish theory the tank should remain sufficiently big for the fish will remain active and productive. If an employee doesn't have room to grow within the organization, then he or she can become unproductive and disruptive. This can be avoided by taking a few measures. One of them is to provide career growth for employees within the organization by developing different career paths. Another way is by investing in the professional and personal development of employees. Organizations should develop a mentoring program that can work towards achievement of the same. This will not only enable the professional and personal development of employees but will also contribute towards the individual's personal growth and eventually will keep them engaged and motivated towards achievement of the common goal.

Conclusion : Just like our goldfish theory, where a goldfish's growth is directly related to clean water, proper feed and a tank with sufficient space to grow, an organisation after creating the environment and providing the employee with the necessary tools to grow, should keep monitoring the environment, and create sufficient space to grow. This will lead to a healthy and prosperous organization.

Mani Bhushan Kumar
ULA Risk Excellence, Mangaluru

जलवायु परिवर्तन से जूझती धरती

भारत की जलवायु ट्रापिकल मानसूनी प्रकार की है जहां चार महीने की शीत ऋतु और आठ महीने की ग्रीष्म ऋतु होती है. वर्षा ग्रीष्म ऋतु के बाद साल के चार महीनों में होती है. अमूमन मध्य के दो महीने सावन-भादों यानी जुलाई-अगस्त में ही लगभग 80 प्रतिशत वर्षा हो जाती है. शेष अन्य महीनों में वर्षा लौटते मानसून एवं चक्रवातीय तूफानों द्वारा होती है. समतल भूमि के करीब 60 प्रतिशत कृषि भूमि के अंतर्गत आने एवं 65 प्रतिशत लोगों के तीनों समय के भोजन की व्यवस्था एवं कृषि आधारित उद्योगों के संवर्धन के लिए यह यथेष्ट रूप से जिम्मेदार है. यदि मानसूनी वर्षा पर्याप्त होती है तो यहाँ की कृषि विकास दर उच्च हो जाती है लेकिन इसकी कमी या अधिकता से इस पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है. यह स्थिति देश के लिए खतरनाक हो जाती है. इसलिए भूगोलवेत्ताओं ने मानसून को भारतीय कृषि के साथ जुआ कहा है. यह परिस्थिति ही जलवायु परिवर्तन का द्योतक है जिसका सामना भारत सहित पूरा विश्व कर रहा है.

ऐसा माना जाता है कि धरती के निर्माण के समय से ही यहाँ की जलवायु बदलती रही है लेकिन पहले जो परिवर्तन एक शताब्दी में होता था, अब वह एक दशक में ही होने लगा है. 1985 में पहली बार तापमान में वृद्धि को रिकॉर्ड किया गया था. फिर बताया गया कि 1961 की अपेक्षा 1995 सर्वाधिक गर्म वर्ष रहा. यदि ऐसा ही रहा तो 2030 तक विश्व के औसत तापमान में 1 डिग्री सेंटीग्रेट की बढ़ोतरी हो सकती है. यह मानव सभ्यता के लिए भयावह दौर होगा.

1950-60 दशक के बाद अनेक देशों की स्वतंत्रता के फलस्वरूप स्वास्थ्य सुविधाओं में विस्तार के कारण जीवन प्रत्याशा बढ़ने से विश्व की जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई है. इसके फलस्वरूप आर्थिक विकास और रोजगार के लिए अनेक देशों में औद्योगिक प्रतिष्ठानों की भारी वृद्धि हुई.

21 वीं सदी आते-आते आवास, उद्योग, रेलवे, हाइवे, एयरपोर्ट आदि की स्थापना के लिए करोड़ों हेक्टेयर जंगल साफ किए गए. आज विश्व में लगभग 10 लाख हेक्टेयर जंगल प्रतिवर्ष काटे जा रहे हैं. इन सभी का दुष्प्रभाव हमारे पर्यावरण पर ही पड़ा है.औद्योगिक प्रतिष्ठानों से कार्बन डाइआक्साइड, मीथेन, नाइट्रस आक्साइड, क्लोरोफ़्लोरो कार्बन, सल्फर डाइआक्साइड जैसी ऊष्माशोषी गैसें निकलती हैं जो वायुमंडल के तापमान में वृद्धि के लिए जिम्मेदार हैं. ये ग्रीनहाउस गैस कहलाती हैं. वायुमंडल के औसत तापमान के लिए इनकी जरूरत है, लेकिन अत्यधिक मात्रा में उपस्थिति से विश्व का तापमान बढ़ने लगा है. यह ग्लोबल वार्मिंग (वैश्विक तापवृद्धि) कहलाती है. ये तत्व पृथ्वी द्वारा विकरित ऊष्मा को अंतरिक्ष में नहीं जाने देते हैं. यही कारण है कि 1870 में पृथ्वी की गर्माहट -0.3 डिग्री से बढ़ कर 1990 में 0.03 डिग्री हो गई है.

ग्लोबल वार्मिंग की स्थिति के लिए मुख्य रूप से कार्बन उत्सर्जन ही जिम्मेदार है. संसार के 5 विकसित देशों जैसे अमेरिका, चीन, रूस, जापान एवं जर्मनी द्वारा कुल कार्बन उत्सर्जन का 52 प्रतिशत उत्सर्जित किया जाता है. पर्यावरण असंतुलन एवं जलवायु परिवर्तन में इन्हीं विकसित देशों की भूमिका अधिक है लेकिन ये देश सदैव इसका दोष विकासशील देशों को देते हैं. आर्थिक विकास एवं रोजगार का हवाला देकर स्वयं कार्बन उत्सर्जन में कटौती नहीं करते हैं लेकिन विकासशील देशों पर अनावश्यक दबाव जरूर डालते हैं. वे विकासशील एवं अविकसित देशों द्वारा चूल्हे पर लकड़ी, उपला जलाने को ही ग्लोबल वार्मिंग का कारण बताते हैं. गाँव से लेकर दुनिया तक ताकतवर लोगों की राजनीति का स्वरूप एक समान ही दिखता है.

इंटरगवर्नमेंटल पैनल आन क्लाइमेट चेंज की रिपोर्ट 1994 के अनुसार समस्त ग्रीन हाउस गैसों में कार्बन डाइआक्साइड की सांद्रता सर्वाधिक है. 1980 में 280-290 पीपीएम था, जो 1988 में 350 पीपीएम हो गया है. 2007 में 383 पीपीएम हो गया और संभावना व्यक्त की गई है कि यही वृद्धि दर रहने पर 2050 तक 500-700 पीपीएम हो सकता है.

ग्लोबल वार्मिंग के फलस्वरूप जलवायु परिवर्तन का साफ असर दिखना शुरू हो गया है. समय पर वर्षा नहीं हो रही है या बहुत अधिक हो रही है जिससे निचले इलाकों में प्रलयकारी बाढ़ की स्थिति बन गई है. पहाड़ों पर बादल फटने से अत्यधिक बाढ़ और भूस्खलन से भारी जान माल की क्षति हो रही है. दरअसल पहाड़ों पर मानवीय गतिविधियों में वृद्धि, विकास योजनाओं के संचालन एवं डायनामाइट से पहाड़ों के तोड़ने से पहाड़ों की मूल संरचना में परिवर्तन आया है और ये कमजोर हो गए हैं, इसलिए जलधारा एवं हिमानी के बहाव में बह रहे हैं.

बढ़ते तापमान के कारण 2080 तक समुद्री जलस्तर में 18 मीटर वृद्धि होने की संभावना है. इससे बहुत से भूभाग जल में समा सकते हैं. अंटार्कटिका के ग्लेशियर तेजी से पिघलते जा रहे हैं और पीछे खिसकते जा रहे हैं. इस संबंध में भारतीय भू विज्ञान सर्वेक्षण लखनऊ के एक अध्ययन के अनुसार गंगोत्री हिमानी जो पहले 10 मीटर की दर से खिसक रही थी, वहीं अब 26-27 मीटर प्रति वर्ष की दर से खिसक रही है. सर्वाधिक क्षति वायुमंडल के ओजोन परत की हुई है. यह परत पृथ्वी का रक्षा कवच है जो सूर्य की पराबैंगनी किरणों को अवशोषित कर उसे जलाने से बचाती है. पहली बार 1997 में अंटार्कटिका पर ओजोन छिद्र का प्रमाण मिला था. यदि विश्व के लोगों ने समय रहते इस समस्या पर विचार नहीं किया तो यह मानव जाति के लिए महाविनाश का कारण बनेगा. इसलिए दुनिया की सरकारों को जलवायु परिवर्तन पर सम्मेलनों में गंभीरता से प्रयास करना चाहिए ताकि पृथ्वी के संसाधनों का संरक्षण करते हुए मानव समाज को अक्षुण्ण रखा जा सके.

शारदा साव
क्षे.का., राँची

Mobile Banking Apps

Mobile Banking services were introduced in the year 2008 and UPI services were launched in the year 2017 with the objective of providing customers safe and secure alternate channel of service delivery for their day to day banking activities. With the advent of digital age, customer's preference for digital banking has increased day by day, given its convenience, comfort, security and complete absence of time constraints apart from removal of geographical boundaries.

Bank's Mobile banking application is operating as "Vyom", which is a milestone in the banking sector. Vyom provides customers a secure and convenient means of banking from anywhere, anytime.

With the rise of smart phones, mobile apps have penetrated practically every market segment. Users quickly adopt mobile banking trends due to the simplicity and freedom of handling their accounts.

Meanwhile, the banking industry is undergoing a fast transition as a result of the general use of innovative technology. Financial institutions may automate laborious and repetitive procedures, improve client happiness, and maintain data security and regulatory compliance by implementing software solutions. For instance, transferring money to other accounts, paying bills, making purchases and many other tasks are now easier and faster.

Understanding what Mobile Banking is about

Before we get into the benefits of mobile banking, let's look at what it is and how it works. The process of providing banking and financial services through cell phones is known as mobile banking. If we look back at the history of mobile banking, we can see that the service was previously reliant on SMS.

The banking apps are used for a variety of things, including cashless transactions, statement checking, address updates, and more. Mobile banking's advantages are only available because of technological advancements. More mobile banking services will emerge as smart phone technology and app trends advance.

Features of Mobile Banking App.

- **Improved security -** Mobile banking apps are safer than ATMs and traditional banking operations. Every transaction in these apps necessitates a user authentication. As a result, the risks of a security breach are lowered. However, being an internet-based business, it has some drawbacks. Security methods such as SSL and TLS are critical when designing mobile banking apps. Banks are also using fintech blockchain technology to add an extra layer of protection.
- **Trading and investments options -** The use of mobile financial applications is not restricted to banks. Currently, customers can invest their money directly through these stock trading apps. Furthermore, the stock market is accessible to customers via apps, with features such as trading.
- **Notifications and alerts -** Banking apps have enabled consumers to receive real-time account warnings. In other words, users can rapidly learn about events such as transactions and account adjustments, among other things.
- **Integrated bill payments -** As the commercial sector increasingly adapts to the culture of cashless payments, almost all financial mobile applications execute this function. This functionality can be

used to pay utility bills, phone recharges, and other services. Banks use high-security measures to ensure that bill payments are secure when designing mobile financial apps. These mobile payment apps are projected to become more popular over a period of time.

- **Account history and statements -** One of the most significant advantages of mobile banking is accessing account statements and records while on the road. Users may see the amount and time of each transaction, as well as the specifics of each transaction.
- **InstaAccount services –** The InstaAccount function of mobile banking apps allow users to open bank accounts instantaneously, as the name implies. Furthermore, customers have the option of completing the verification procedure by providing relevant papers online.

Some may view these features as benefits. However, the advantages of mobile apps in banking are far-reaching and beyond these features. Let's dive into some of them.

Importance And Benefits of Mobile Banking Apps

Expedient Banking Services: Banking apps have made banking services more accessible to people. Users no longer need to travel or hunt for nearby branches to complete tasks which can be accomplished with the help of apps and the internet. One of the most important advantages of mobile banking apps is the speed of processing.

Surge in Cashless Transactions: The growing quantity of cashless transactions is one of the outstanding achievements of mobile banking apps. The trouble of finding ATMs to withdraw money is no longer an issue for users, and transactions are completed with a simple scan. Furthermore, compared to ATM cards, financial mobile apps are more secure. Likewise, with the use of IoT in banking, apps may complete cardless withdrawals. Financial mobile apps are also safer from illegal transactions because they require user authorization through the app to approve transactions.

Round The Clock Banking Access: Banking services are now available on the go, thanks to banking applications. Users can get their withdrawals or passbook updates regardless of a maintenance update or a long queue. "Time is money!" they say, and banking apps are designed with this goal in mind, allowing customers to have a more convenient and speedier banking experience. During the Covid, the best benefit of banking apps was seen. Even in the event of a global epidemic, users might retain control and access to their funds. It assisted them in avoiding numerous unpleasant events that could have occurred due to a shortage of funds.

Better Grip of Expenses: Users can keep track of their money and manage it more easily with transparent transactions. Users may monitor where their money is moving with the current data of credits and debits Furthermore, smart banking apps can assist users in tracking their spending habits. Financial bodies allow you to immediately freeze your debit and credit cards if you misplace them.

Instant Transfer of Funds: Money orders are no longer in use. Users can instantly send money to persons in other countries using peer-to-peer mobile payment apps. Thanks to banks like Wells Fargo, users may utilize mobile banking apps to make international or domestic transactions with ease. Furthermore, users must go through the verification process for security reasons to complete the transaction.

It's pretty impressive to consider how far the banking sector has come thanks to technological innovations. The horizon looks brighter due to the trends emerging today.

Trends that will define Mobile Banking in the future

With the possibilities of solving business specific challenges through bespoke applications, there are leading trends to look out for in the finance and banking industry in the near future.

1. AI-enabled Chatbots
2. Cardless ATM Transactions
3. Biometric Security
4. Voice Payments
5. Machine Learning Apps
6. Blockchain Technology

Vipul Deshmukh
RO Amravati

दि. 23/03/2023 को आयोजित HYBIZ TV महिला नेतृत्व पुरस्कार समारोह में श्रीमती सी.एस. जननी क्षेत्र प्रमुख, सिकंदराबाद और श्रीमती बी.ए.एल. कामेश्वरी, स.म.प्र. (ऋण), पंजागुट्टा को वर्ष 2023 हेतु सरकारी सेवाएँ वर्ग में सम्मानित किया गया.

श्री आनंद भास्कर, शाखा प्रमुख, कल्लूर शाखा के सुपुत्र बी. श्रीनिकेश ने 10 वर्षीय 23 वर्ग में स्वर्ण पदक हासिल किया.

श्री अनीश निर्मल, व.प्र. (आईटी), जेडसीसी, मंगलूरु के सुपुत्र कार्तिक ए. निर्मल ने इंडिया बुक ऑफ रिकाड्र्स और एशिया बैंक ऑफ रिकार्डस में "fastest to solve seven 3x3 Rubik's cubes" रिकॉर्ड हासिल किया है.

वर्ष 2023-23 के दौरान विभिन्न बैंकों द्वारा आयोजित अखिल भारतीय अंतर-बैंक हिन्दी प्रतियोगितायों के विजेता

विकास विश्वनाथ महांगरे,
अंचलीय ज्ञानार्जन केंद्र, भोपाल

संजीव तिवारी,
क्षेका, इंदौर

आरती कक्कड़,
मुल्लनपुर गरीबदास

सागर खंडेलवाल,
सिडको शाखा

मिताली मोनालिसा पांडा,
क्षेका सैफाबाद-हैदराबाद

विजय रामदास,
उलियारगोली शाखा

सिंपल कंवर,
क्षेका, दिल्ली दक्षिण

जयश्री गणेशराव भांगे,
क्षेका, नागपुर

दानिश गफ्फार,
बाज़ार गेट शाखा

Samuel Hahnemann - Father of Homeopathy

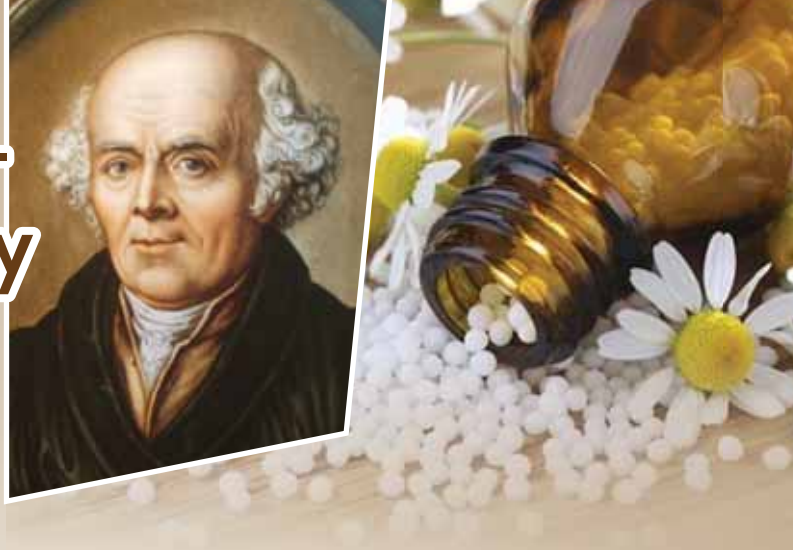

Christian Friedrich Samuel Hahnemann was born in Meissen, Saxony, Germany on 10th April 1755. His father Christian Gottfried Hahnemann was a painter. As a young man, Hahnemann became proficient in a number of languages, including English, French, Italian, Greek and Latin.

He eventually made a living as a translator and a teacher of languages, gaining further proficiency in Arabic, Syriac, Chaldac and Hebrew.

Hahnemann studied medicine for two years at Leipzig having clinical facilities. After one term of further study, he graduated MD at the University of Erlangen on 10th August 1779, qualifying with honors. Hahnemann's thesis was on the Dissertation on the Causes and Treatment of Spasmodic Diseases.

In 1781, Hahnemann took a village doctor's position in the copper-mining area of Mansfeld, Saxony and soon married Johanna Henriette Kuchler and eventually had eleven children.

Hahnemann was dissatisfied with the state of medicine in his time, and particularly objected to practices such as bloodletting. He claimed that the medicine he had been taught to practice sometimes did the patient more harm than good. The thought of becoming a murderer or malefactor towards the life of his fellow human beings was terrible to him, so terrible and disturbing that he wholly gave up his practice in the first years of his married life and occupied himself solely with chemistry and writing.

After giving up his practice around 1784, Hahnemann made his living chiefly as a writer and translator, while resolving to investigate the causes of medicine's alleged errors. While translating William A Treatise on the Materia Medica, Hahnemann encountered the claim that Cinchona the bark of a Peruvian tree, was effective in treating Malaria decease because of its astringency. Hahnemann believed that other astringent substances are not effective against malaria and began to research cinchona's effect on the human body by self-application. Noting that the drug induced malaria-like symptoms in himself, he concluded that it would do so in any healthy individual. This led him to postulate a healing principle: "that which can produce a set of symptoms in a healthy individual, can treat a sick individual who is manifesting a similar set of symptoms." This principle, "like cures like," became the basis for an approach to medicine which he gave the name Homeopathy. He first used the term homeopathy in his essay "Indications of the Homeopathic Employment of Medicines in Ordinary Practice," published in Hufelands's Journal in 1807.]

Development of homeopathy

Hahnemann tested substances for the effects they produced on a healthy individual, presupposing that they may heal the same ills that they caused. His researches led him to agree with the theory that the toxic effects of ingested substances are often broadly parallel to certain disease states, and his exploration of historical cases of poisoning in the medical literature further implied a more generalised medicinal "law of similars". He later devised methods of diluting the drugs he was testing in order to mitigate their toxic effects. He claimed that these dilutions, when prepared according to his technique of "potentization" using dilution and succussion (vigorous shaking), were still effective in alleviating the same symptoms in the sick. His more systematic experiments with dose reduction really commenced around 1800-01 when, on the basis of his "law of similars," he had begun using Ipecacuanha for the treatment of coughs and Belladonna for scarlet fever.

Hahnemann continued practicing and researching on homeopathy and had invented several medicines on the basis of law of similars, as well as writing and lecturing for the rest of his life. He died in 1843 in Paris, at 88 years of age. Yes, he is called the 'Faher of Homeopathy.'

I.U.B.V.N. Srinivasa Rao
Retired RO Secundrabad

बाबू जी

रमाकान्त, जो सरकारी बाबू थे, अपनी छोटी सी तनख्वाह में चार बच्चों का भरण पोषण कर रहे थे. उनकी पत्नी संध्या ने अपनी पूरी जिन्दगी घर की देखभाल में गुजार दी थी. बच्चों का पालन पोषण, पढ़ाई सब कुछ संध्या ने ही संभाला था. रमाकान्त की आदत हमेशा खुश रहने की थी. संध्या के बारे में सोचते-सोचते रमाकान्त को झपकी सी लग गई. तभी बेटे ने कहा : "पिता जी चाय पी लीजिए" रमाकान्त पलंग पर सिर टिका कर बैठ गए.

संध्या की तेरहवीं हो गई थी. मेहमान जा चुके थे बेटे ही अपनी पत्नियों के साथ रुके थे. रमाकान्त की आदत थी कि जो भी संध्या की चीजें थी उन्हें एक बक्से में रखते थे, बेटे यह समझते थे कि इसमें सोना रुपया पैसा होगा. अगर यह बक्सा खुल जाए तो हिस्सा-बांट हो जाए. लेकिन रमाकांत जी ने बक्सा नहीं खोला. सब लड़के चले गए और रमाकान्त अकेले रह गए. वह संध्या की यादों में दिन काटने लगे. वे सोच रहे थे : "माँ बाप एक-एक तिनका जोड़कर घरोंदा बनाते हैं और जब बच्चे बड़े हो जाते हैं तो माँ बाप को बोझ समझते हैं." बच्चों ने जाने के बाद रमाकान्त की कोई सुध नहीं ली. बीच बीच में जब संध्या की याद आती तो बक्सा खोल कर उसमें रखा सामान देख लेते.

एक दिन बच्चों को पड़ोसियों से रमाकान्त के देहान्त की खबर मिली तब वे पत्नियों के साथ आये. उनको उत्सुकता उस बक्से की थी जो बाबूजी ने अपने पास रखा था. आखिर बाबूजी के अंतिम संस्कार के बाद बेटों बहुओं ने बक्सा खोल कर देखा. उसमें टूटी हुई चप्पलें और बाबूजी के हाथ का लिखा हुआ कागज था. जिसमें लिखा था "बेटा हम बहुत गरीब थे और तुम लोगों को पढ़ाने, घर चलाने के लिए तुम्हारी माँ ने मेहनत मजदूरी कर के दो पैसे कमाए हैं, बेटा इन चप्पलों से बहुत लम्बा सफर तय किया है. सम्पत्ति के नाम पर तुम लोगों की पढ़ाई, नौकरी, शादी और यह दे कर जा रहा हूँ. इससे लड़कों को गुस्सा आ गया और उन्होंने माँ की चप्पलों को सड़क पर फेंक दिया और बड़बड़ाते हुए चले गए कि इतना पैसा खर्च कर के हम यहां बेकार ही आए. लेकिन बाबूजी फोटो में अपनी आदत के अनुसार अब भी मुस्कुरा रहे थे.

संतोष श्रीवास्तव
सेवानिवृत्त, स्टा.प्र.कें. भोपाल

भारतीय संस्कृति में समन्वय

आज की युवा पीढ़ी, नवचेतना की अग्रदूत,
आकाश की ओर मस्तक उठाये,
धरती को नाप रही है.
धरती उसके पैरों तले खिसक रही है।
पाश्चात्य सभ्यता में रंगी,
भारतीय संस्कृति विस्मृत कर,
स्वयं को श्रेष्ठ मान रही है
आज आवश्यकता है पूर्वोत्तर और पाश्चात्य
के समन्वय की,
भारतीय संस्कृति को जीवन्त करने की
पाश्चात्य संस्कृति उन्नति का आधार है,
पर क्या उन्नति अतीत के बिना शून्य नहीं है.
अतीत वर्तमान और भविष्य की नींव है.
नई सीख की नई राह है.
पुरातनता और नवीनता का समन्वय ही हमें,
सच्चा भारतीय बनायेगा.
देश के गौरव को फिर ऊँचा उठाएगा.
सुप्त भारतीयों को पुनः जगाएगा,
नई पीढ़ी को नई राह दिखाएगा.
मत सोच बन्दे सुख ही जीवन का आधार है,
त्याग व तपस्या भारतीय संस्कृति का मूल मन्त्र है.
व्यक्तिगत सोच को उदात्त करो,
पुरातनता और नवीनता में समन्वय करो.
यही नववर्ष का आपको उदबोधन है,
नववर्ष की यही मांग है.

डॉ. मीना कुमारी
सेवानिवृत्त
क्षे. का. दिल्ली (उत्तर)

Empower Her to Fly

Hands, that were said, are meant for running only the kitchen are capable of running the world as well.

Women empowerment is a topic which has been in discussion since a very long time. Its something many leaders around the world, many organizations encourage and support. However are women really empowered?. If yes, what % of women population around the world are empowered and in what sense are they empowered? There are many questions that are yet to be addressed and many answers that have to be found.

My article focuses on a very simple and personal opinion and thoughts on what simple things shape a girl child.

Coming straight to the point, financial independence is one the most important factors towards women empowerment but this alone will not be sufficient.

Women empowerment does not happen in a day. Many are striving hard to provide opportunities to women for their development, but it's upto us whether we are making use of that opportunity. The biggest question is, are we identifying the available opportunity? If yes, are we brave enough to make use of it?

Home is the first place where a girl at a young age can be taught to be independent and take small decisions. It does not mean that one has to be strict or train a girl. Kids are meant to be pampered, nurtured and allowed to live their childhood to the fullest. Children learn things by observing what is happening around them therefore an environment should be created where a boy respects a girl and a girl is given freedom to decide things on her own. Stop comparing between genders and start appreciating their achievements however small they may be. Parents tend to overprotect girl child thinking that she is delicate or sensitive and needs protection from society. This is the biggest mistake one can do. Yes all kids need protection but they can be taught to protect themselves as well. Teach a girl not to expect someone else to solve her problems, but to take a stand for herself whenever the need arises. Whatever might be the outcome, she will have your support. It is not the big things that influence her way of thinking, but the small things happening around her regularly and the way people around her act/react towards her, which shape her personality as an adult.

The journey from being a girl to a woman is the most important for empowering women in society.

Education is the most important means of empowering women by providing them with knowledge, skill set that gives them confidence to function in a competitive society.

Once the girl child grows up, that's when she actually start & interacting with society on her own and decisions she takes at this point will carve her path towards her future.

Women need to start taking decisions on their own. All the decisions might not be right but that is absolutely ok. It's ok to make mistakes but stopping ourselves because we made one mistake will be a blunder on our part. Introspect yourself where and why the decision has gone wrong and learn from it. We need to stop being afraid of being judged by others for our decisions. We are not here to impress anyone.

Most of us are scared of the thought "WHAT IF THIS GOES WRONG?" WHAT WOULD OTHERS THINK ABOUT ME?" etc. From childhood, in many of our homes, girls are taught to behave in a certain way, sit in a certain way, eat in a certain way and talk in a certain way. Fear of what others/society will think is inculcated into us. Girls/Women need to break that barrier of being scared of being judged.

Women empowerment contributes to the sustainable development of society. This can be achieved by the full participation and partnership of both men and women, wherein they equally share the responsibilities in and out of the house.

I dream of a day when women in society are capable enough to take the opportunities and empower themselves and where "Women Empowerment" is no more a topic that has to be specially discussed or addressed because women are already empowered by then, just like today where we do not specifically talk about Men Empowerment.

Do not search for excuses for not trying something or for not taking "that one step" because this world is already full of champions in making excuses, the only problem is, no one gives a medal for being such a champion.

Rane Priyanka
ZO, Vijayawada

उद्यमिता का नया दौर : महिला उद्यमिता

उद्यमिता नये संगठन आरम्भ करने की भावना को कहते हैं. किसी वर्तमान या भावी अवसर का पूर्वदर्शन करके मुख्यत: कोई व्यावसायिक संगठन प्रारम्भ करना उद्यमिता का मुख्य पहलू है. उद्यमिता में एक तरफ भरपूर लाभ कमाने की सम्भावना होती है तो दूसरी तरफ जोखिम, अनिश्चितता और अन्य खतरे की भी प्रबल संभावना होती है.

मानवीय सभ्यता के उद्भव एवं विकास में पुरुष और स्त्री दोनों ने समान रूप से ही योगदान दिया है. आदिम युग में स्त्री ने भी बच्चों के पालन-पोषण के साथ ही मानव की संतानों को संस्कृति का हस्तांतरण किया पर विडंबना यह है कि इस युग में पुरूष अपनी आदिम चेतना को भूल गया है, जिसमें पुरूष व स्त्री दोनों को ही समान अवसर प्राप्त थे.

नारी की महान शक्ति स्रोत को पहचान कर भारत ने सदा नमन किया है. वर्तमान सरकार ने भी भारतीय स्त्री को आर्थिक, शैक्षिक तथा भावनात्मक रूप से स्थिर और उन्नत बनाने के लिए सदैव ही प्रयास किए हैं और कई सहायता योजनाएँ जारी की हैं.

विश्वास अटूट है इनके यूं ,
पर्वत भी शीष झुका दे,
आत्म विश्वास की बात है,
जो पत्थर को पिघला दे.

क्यों बनती हैं महिलाएं उद्यमी ?

आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के लिए, समाज में अपनी पहचान स्थापित करने के लिए, अपने प्रयासों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए, खुद में आत्मविश्वास पैदा करने के लिए, जोखिम उठाने की क्षमता विकसित करना, समाज में समान स्थिति का दावा करने के लिए आदि ऐसे कई कारण हैं जिनके लिए आधुनिक महिलाएं उद्यमी बनने के लिए प्रेरित होती हैं.

महिला उद्यमियों को एक महिला या महिलाओं के समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो एक व्यावसायिक संस्था की शुरुआत, उसका आयोजन और संचालन करती हैं.

''महिला उद्यमी वे महिलाएँ हैं जो एक व्यावसायिक गतिविधि को नया रूप देती हैं, आरंभ करती हैं या अपनाती हैं''

- शुम्पीटर

महिलाओं के लिए यह आवश्यक है कि वे हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा को निखारें एवं विशेष परिस्थितियों में सुअवसर तलाश करें.

1) आर्थिक आवश्यकता:

व्यापार में, महिलाओं का प्रवेश अपेक्षाकृत एक नई घटना है.

संयुक्त परिवार प्रणाली के टूटने और मुद्रास्फीति या बढ़ती कीमतों को ध्यान में रखते हुए जीवन स्तर को बनाए रखने के लिए अतिरिक्त आय की आवश्यकता के कारण, महिलाओं ने व्यवसाय की सबसे अधिक प्रतिस्पर्धी दुनिया में प्रवेश करना शुरू कर दिया है. इस प्रकार, आर्थिक आवश्यकता के कारण, महिलाओं ने कुछ आय अर्जित करने और मुद्रास्फीति के आधुनिक दिनों में अपनी पारिवारिक आय बढ़ाने के लिए व्यवसाय के क्षेत्र में प्रवेश करना शुरू कर दिया है.

2) उच्च उपलब्धि की इच्छा:

महिलाओं को व्यवसाय की दुनिया में प्रवेश करने के लिए मजबूर करने वाली एक और प्रेरक शक्ति उनके जीवन में उच्च उपलब्धि के लिए उनकी प्रबल इच्छा है.

आधुनिक दिनों में, यद्यपि महिलाएं शिक्षित हैं, तथापि उन्हें बाजार में नौकरी नहीं मिल पा रही है या वे पारिवारिक समस्याओं के कारण कहीं और काम करने के लिए अपने घरों से बाहर नहीं जा सकती हैं.

इसलिए, एक महिला कुछ उच्च और मूल्यवान उपलब्धि हासिल करने की इच्छा से दृढ़ता से परीक्षा लेती है और खुद को परिवार के लिए एक शक्ति के रूप में साबित करती है.

एक महिला को उद्यमी बनने के लिए यह सबसे मजबूत प्रेरक शक्ति है.

3) सरकारी प्रोत्साहन:

सरकारी और गैर-सरकारी निकायों ने स्वरोजगार और व्यावसायिक उपक्रमों के माध्यम से महिलाओं की आर्थिक स्थिति पर अधिक ध्यान देना और प्रोत्साहन देना शुरू कर दिया है.

उन्होंने विभिन्न नीतियां और कार्यक्रम तैयार किए हैं और देश में महिला उद्यमियों को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं शुरू की हैं.

इस तरह की प्रोत्साहन योजनाओं ने महिलाओं को व्यावसायिक कदम उठाने के लिए प्रेरित किया है.

4) शिक्षा:

महिलाएं विभिन्न प्रकार की तकनीकी, व्यावसायिक, औद्योगिक, वाणिज्यिक और विशिष्ट शिक्षा ग्रहण कर रही हैं ताकि वे किसी प्रकार के व्यापार, व्यवसाय में स्वरोजगार के योग्य हो सकें.

महिलाओं को उन क्षेत्रों में भी सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं जहां वे विकसित हो सकती हैं और अपने आप में सफल व्यक्तियों के रूप में खिल सकती हैं. महिलाओं ने साबित कर दिया है कि वे दक्षता, कड़ी मेहनत या बुद्धि में पुरुषों से कम नहीं हैं या बल्कि वे कई क्षेत्रों में पुरुषों से आगे निकल सकती हैं.

5) मॉडल भूमिका:

पुरुषों की तरह महिलाएं भी अपने देश के आर्थिक विकास में अपना योगदान देने की इच्छुक हैं. भारतीय महिलाएं एक रोल मॉडल की भूमिका निभाती रहीं.

वे पहले से ही राजनीति, शिक्षा, सामाजिक क्षेत्र, प्रशासन आदि कई क्षेत्रों में प्रवेश कर चुकी हैं. अब उन्होंने व्यवसाय क्षेत्र में प्रवेश करना शुरू कर दिया है जहां वे अन्य क्षेत्रों की तरह अपना महत्व दिखा रही हैं.

6) पारिवारिक व्यवसाय:

पारिवारिक व्यवसाय एक महत्वपूर्ण कारक है जो एक महिला सदस्य को उसके पति और परिवार के अन्य सदस्यों के साथ पारिवारिक व्यवसाय में भाग लेने के लिए प्रेरित करता है.

महिलाओं को परिवार की आर्थिक गतिविधि या पारिवारिक व्यवसाय में अपने परिवार का समर्थन करने की बहुत आवश्यकता है ताकि पारिवारिक व्यवसाय के खर्च को कम किया जा सके और अपनी आय में वृद्धि की जा सके.

7) स्वयं की पहचान और सामाजिक स्थिति

महिलाएं समाज में कुछ सामाजिक स्थिति और मान्यता का आनंद लेना चाहती हैं.

व्यवसाय में प्रवेश करने वाली महिलाएं आत्म-पहचान और सामाजिक स्थिति की पहचान की ऐसी स्थिति प्राप्त कर सकती हैं क्योंकि वे उच्च स्तर के अधिकारियों, मंत्रियों, अधिकारियों और उच्च पदों पर आसीन अन्य लोगों के संपर्क में आती हैं.

वित्त किसी भी व्यवसाय का आधार होता है, चाहे वह पुरुष उद्यमियों द्वारा चलाया जाता हो या महिला उद्यमियों द्वारा. सरकार ने महिलाओं के लिए औद्योगिक क्षेत्र स्थापित किए हैं.

महिला उद्यम निधि, विपणन विकास कोष आदि जैसी कई वित्तीय योजनाएं केवल महिला उद्यमियों के लिए स्थापित की गई हैं. इसके अलावा, बैंक और विकास वित्त संस्थान भी महिला उद्यमियों को वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं.

जब महिलाओं को ऐसी सुविधाएं आसानी से उपलब्ध होंगी तो वे अपना खुद का व्यवसाय उद्यम शुरू करने के लिए प्रेरित होंगी.

क्या है महिला उद्यमिता के लाभ :

महिला उद्यमिता और व्यवसाय प्रशासन जैसे क्षेत्रों में महिलाओं के आने का समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है. जबकि धन सृजन एक आम पहलू है और पुरुषों के बीच साझा किया जाता है परंतु भारतीय समाज में नारी शक्ति स्वरूपा है, शक्तिपुंज है. स्त्री में मानसिक बल अधिक होता है. वह पुरुष के समान शक्ति का प्रदर्शन नहीं करती वरन् शक्ति को अपने अंदर समेट कर उसका सदुपयोग करती है.

नारी गौरव है, अभिमान है
नारी ने ही ये रचा विधान है
हमारा नतमस्तक इसको प्रणाम है
नारी शक्ति को प्रणाम है

गुणवंत जगताप
(परिचालन) क्षे. का., सूरत

Going Green: The Future of Sustainable Finance

Green finance is a rapidly growing area of the financial industry that is focused on financing projects and initiatives that have a positive impact on the environment and support sustainable development along with the transition to a low-carbon economy. Here's what we need to know about green finance.

One of the main drivers of green finance is the increasing awareness of the environmental impact of economic activities. Climate change is now widely recognized as a major global challenge, and the need for action to reduce greenhouse gas emissions is urgent. This has led to a growing demand for sustainable and environmentally friendly projects and investments, which has in turn created opportunities for green finance.

Green finance is important for several reasons. First, it helps to mobilize capital for sustainable development, which is essential for achieving the goals of the United Nations for Sustainable Development. Secondly, it provides investors with opportunities to invest in businesses and projects that are aligned with their values and have a positive impact on society and the environment. Further green finance can also help in reducing the financial risks associated with climate change and other environmental issues, such as water scarcity, depleting fossil fuel and increasing pollution.

India is among the World's largest emitter of greenhouse gases, and the country is highly vulnerable to the impacts of climate change. With a population of over 1.4 billion people and rapidly growing energy demand, the country is facing significant challenges in meeting its energy needs while also reducing its carbon footprint.

Therefore, in India, green finance is gaining momentum as the government and financial institutions recognize the importance of promoting environment friendly livable growth. The Indian government has introduced a range of initiatives to promote green finance, including the introduction of Green Bonds and Green Masala Bonds, which are rupee-denominated bonds that raise funds for renewable energy and other environmentally friendly projects.

One of the key areas of focus for green finance in India is renewable energy. The country has set ambitious targets for renewable energy, with a goal of reaching 500 GW of installed renewable energy capacity by 2030 which generates numerous opportunities in the area of green finance.

To create awareness and inculcate the habit of using green energy among people the government has introduced several financing schemes and incentives to promote investment in the renewable energy sector.

The Indian Renewable Energy Development Agency (IREDA) provides loans and other financial assistance for renewable energy projects, while the National Clean Energy Fund provides funding for research and development in clean energy technologies. In addition, the government has introduced various tax incentives and subsidies to promote the use of renewable energy.

Another important area of focus for green finance in India is energy efficiency. The government has introduced various schemes to promote energy efficiency, such as the Energy Conservation Building Code and the Perform, Achieve, and Trade (PAT) scheme. The PAT scheme is a market-based mechanism that incentivizes energy efficiency improvements in energy-intensive industries by providing tradable energy-saving certificates.

Green Finance includes a wide range of financial products, such as green bonds, green loans, and green investment funds. It is not only about investing in renewable energy projects, but also about financing sustainable agriculture, transportation, and other sectors that support in reduction of carbon emissions, and protect natural resources.

The Reserve Bank of India (RBI) has also taken steps to promote green finance in the country by introducing guidelines for banks and financial institutions to assess and report on the environmental and social risks associated with their lending and investment portfolios. The RBI has also launched a Green Channel for priority lending, which provides easier and faster credit to borrowers who are engaged in environmentally sustainable activities.

Some of the primary financial products of Green Finance includes:

Green Deposits: A green deposit means an interest-bearing deposit, received by the RE for a fixed period and the proceeds of which are earmarked for being allocated towards green finance.

Recently RBI has announced the framework for acceptance of Green Deposits (GDs) of regulated agencies (RA).

The idea behind the framework is to develop an ecosystem which stimulates and enriches the climate friendly industry in the country.

The framework for acceptance of green deposits shall be effective from June 1, 2023.

The framework is applicable to Scheduled Commercial Banks including Small Finance Banks excluding Regional Rural Banks, Local Area Banks and Payments Banks and all deposit-taking Non-Banking Financial Companies (NBFCs), including Housing Finance Companies.

Green Bonds: These are bonds issued by companies and governments to finance environmentally sustainable projects,

such as renewable energy and energy efficiency projects.

Green Loans: These are loans provided by banks and other financial institutions to fund sustainable projects, such as building retrofits and renewable energy installations.

Green Investment Funds: These are investment funds that focus on companies and projects that have a positive impact on the environment and society.

Carbon Markets: These are markets that allow companies to buy and sell carbon credits, which represent a reduction in greenhouse gas emissions.

Several Indian banks have launched green finance products such as green loans and green credit cards. Union Bank of India has also taken various green initiatives to promote sustainability and reduce its carbon footprint like

E-Waste Management: The bank has implemented a comprehensive e-waste management program, which includes the collection, segregation, and disposal of electronic waste in an eco-friendly manner.

Green Buildings: The bank is encouraging energy-efficient buildings that use natural light and ventilation, reducing the need for artificial lighting and air conditioning, installing e-toilets and sensor-based energy savers and creating the awareness among its employees for efficient use of power and other resources.

Paperless Banking: The bank has introduced various digital initiatives like online banking, mobile banking, and e-statements, which reduce the need for paper-based transactions.

Green Products: Union Bank of India offers various green products like Union Green Miles, Union Green Cards, Union Roof Top Solar Scheme etc; which encourage customers to adopt eco-friendly practices.

The Road Ahead: Green finance, which refers to financial instruments and services that promote sustainable and environmentally-friendly investments, faces several challenges that need to be addressed for it to be successful. Some of the key challenges in green finance include:

Lack of Awareness: One of the biggest challenges in green finance is the lack of awareness among investors and financial institutions about the importance of sustainable investments. Many investors are not aware of the long-term benefits of investing in green projects, while many financial institutions are not familiar with the concept of green finance.

Limited Availability of Green Investments: Another challenge is the limited availability of green investments. While several green investment options are available, the pool of green investments is relatively small compared to traditional investments, making it difficult for investors to diversify their portfolios.

High Investment Costs: Green projects often require significant investment costs, which can be a deterrent for some investors. The high cost of technology and infrastructure needed for green projects can make it difficult for companies to obtain financing.

Lack of Standardization: There is currently no universal standard for measuring the environmental impact of investments, making it difficult to compare the impact of different green investments. This lack of standardization can make it difficult for investors to assess the risks and rewards of green investments.

Regulatory Challenges: The lack of clear regulations and policies in some countries can make it difficult for investors to make informed decisions about green investments. In some cases, investors may not be able to access green investments due to regulatory constraints.

Market Risks: Green investments are subject to the same market risks as traditional investments, such as fluctuations in interest rates, inflation, and currency exchange rates. In addition, green investments may be exposed to additional risks, such as changes in environmental regulations and climate change.

Limited Access to Financing: Many green projects, particularly those in developing countries, have limited access to financing. This can be due to a lack of financial infrastructure, a lack of credit history, or other factors.

Addressing these challenges will require a concerted effort by governments, financial institutions, and investors. Governments can play a critical role in creating policies and regulations that support green investments, while financial institutions can develop innovative financial instruments and services that make it easier for investors to access green investments. Investors can also play a role by educating themselves about green finance and making informed investment decisions that support sustainability and the environment.

Overall, green finance is a critical element in the transition towards a more sustainable and low-carbon economy. It plays an important role in promoting environmentally friendly initiatives and reducing carbon emissions, while also providing opportunities for sustainable investment and economic growth. As the demand for sustainable and environmentally friendly projects and investments continues to grow, green finance is expected to become an increasingly important part of the financial landscape.

Gaurang Aggarwal
Union Learning Academy
Corporate & Treasury, Gurugram

Kintsugi

Have you heard of Kintsugi? It is a Japanese technique of repairing broken pottery with gold. This technique is over 400 years old, and instead of hiding the damage, it highlights the 'scars' as a part of the design. The idea is to embrace the flaws and imperfections, making the piece of art even more beautiful and unique.

To repair the broken pieces, one should use the sap from a native Japanese tree and glue them together carefully. The glued pieces are left to dry for a few weeks before being decorated with gold that runs along the cracks. Typically, it takes around three months to restore the broken pieces with gold. When we use this as a symbol for self-healing, we learn a valuable lesson: fixing broken things can create something even more exceptional, attractive, and strong. In a world where things are mass-produced and quickly discarded, we must learn to accept and appreciate our scars and imperfections. This lesson is about the importance of being both human and sustainable.

Kintsugi can transform our mindset towards challenges and inspire us to believe in our ability to conquer them. By embracing this technique, we can emerge from challenging situations even more resilient. To reach our full potential, it is essential to face difficult times. The Kintsugi technique follows the Japanese philosophy of Wabi-sabi, which appreciates the beauty of imperfections and embraces simplicity.

Wabi-sabi: Admire imperfection : It is natural for everyone to experience difficult times, and striving for a perfect life may not be realistic. In Japanese, "wabi" means loneliness, and "sabi" represents the passage of time. These two words teach us to accept both the good and bad aspects of ourselves and the asymmetry of life. When we embrace our imperfections, we learn to celebrate our strengths. We can adopt a more positive and empowering attitude by shifting our focus from striving for an unattainable ideal to recognizing our strengths.

We may consider incorporating the following Kintsugi practices into our daily life for guidance:

Gaman: Live with resilience : Gaman is the art of persevering, remaining patient and staying composed. We can develop the skill of mindfulness in our daily life by practicing meditation, visualization, or pausing to take a deep breath. By directing our attention to something as fundamental as our breath, we allow our minds to rest. We can cultivate resilience by choosing how we react to daily stressors. Practicing Gaman empowers us to connect with our inner strength and focus on our potential. By fortifying our internal resolve, we become more impervious to negativity.

Yuimaru: Care for our inner circle : Yuimaru believes in the healing power of friends and family. By caring for those closest to us, we can also learn to love and care for ourselves. Deepening our relationships can lead to greater self-kindness and a more robust support system, which can bring emotional rewards through giving and receiving.

Eiyoshoku: Nourish our body : Taking care of our bodies is the foundation for a positive mindset. We often make nutrition more complicated than it needs to be by overthinking what we should or should not eat. The food we eat directly impacts our body and mind connection. We benefit mentally and physically when we prioritize a simple, healthy diet. Neglecting our diet deprives us of the opportunity to refuel our bodies and minds. That is why nourishing from the inside out is crucial for self-care.

Kansha: Cultivate sincere gratitude : Gratitude is not just about the good things but also the demanding situations that make us better, more resilient, and more grateful. Expressing gratitude for both the good and the bad is called Kansha. This practice involves letting go of our ego and rethinking experiences to focus on the positive instead of the negative. Being grateful for what we have helps us heal faster and be more resilient. It also means living in the present moment and appreciating what we already have instead of wishing for more. To achieve wellness, we must practice resilience, overcome challenges, and strive to become the best version of ourselves, even with our imperfections.

Kintsugi, a pottery technique, teaches us to embrace fragility, build strength and resilience, and take pride in imperfections. We may adopt the Kintsugi Repair approach in our lives by:

1. Reflecting on our journey and where we currently stand.
2. Imagining a new lifestyle that acknowledges our past experiences.
3. Making the necessary changes with the proper support and acting on our choices.
4. Investing in our future with confidence and compassion.
5. Refreshing our mood and energy by adding some finishing touches.

Indu. P
Union Learning Academy
Strategy & Finance, Gurugram

व्यक्तित्व विकास के महत्वपूर्ण पहलू

आपके करियर की सफलता और जीवन की उत्कृष्टता इस बात पर निर्भर करती है कि आपका व्यक्तित्व कैसा है. किसी व्यक्ति के जीवन में उसके व्यक्तित्व का विशेष महत्व होता है. यही वह गुण होता है जिससे कोई व्यक्ति दूसरों से अलग होता है, उसकी व्यक्तिगत विशिष्ट पहचान होती है. यदि आपका व्यक्तित्व आकर्षक है तो आपका जीवन भी शानदार होगा. ऐसा माना जाता है कि सूरत भले ही अच्छी न हो लेकिन सीरत अच्छी होनी चाहिए अर्थात अच्छी सीरत ही आपका अच्छा व्यक्तित्व होता है. किसी भी व्यक्ति के जीवन में तथा उसके करियर में सफलता प्राप्त करने के लिए उसके व्यक्तित्व का विकास जरूरी होता है. व्यक्तित्व विकास से संबन्धित कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं को इस प्रकार देख सकते है :-

प्रत्येक भूमिका के साथ प्राथमिक उत्तरदायित्व महत्वपूर्ण होता है: - हम सभी को अपने जीवन में अपने कार्यों में कई भूमिकाओं का निर्वहन करना होता है. भले ही हम अन्य पक्षों में कितना कुछ भी क्यों न करें यदि हम उस महत्वपूर्ण भूमिका से जुड़े प्रधान दायित्व को पूरा नहीं कर पाते तो हम अपनी भूमिका का निर्वहन करने में असफल हैं. किसी प्रबंधक का प्रधान कर्तव्य होता है संसाधनों के उचित प्रबंधन के साथ कार्य को पूरा करवाना. इसमें किसी प्रकार के समझौते की स्वीकृति नहीं होती है. यदि हम अपने सहकर्मी के साथ अपना शत प्रतिशत योगदान नहीं करते और दोस्ती निभाते हैं तो वह आपसे दोस्ताना माहौल पर प्रश्न नहीं करेगा किंतु वह आपके प्रबंधन क्षमता पर प्रश्न निश्चित रूप से करेगा. जब आप एक प्रबंधक हैं, तो कार्यालय में पहले आपको प्रबंधन कार्य देखना चाहिए और अपने कार्यालय के बाहर दोस्ती निभानी चाहिए. किसी भी व्यक्ति को अपने जीवन की सभी भूमिकाओं में से पहले अपना प्रधान दायित्व पूरा करना चाहिए उसके बाद ही किसी अन्य बातों पर ध्यान देना चाहिए.

'समय की पाबंदी एवं अनुशासन' व्यक्तित्व विकास का अहम हिस्सा है: - अगर आप अपने करियर में आगे बढ़ना चाहते हैं तो आपको जीवन में समय की पाबंदी एवं अनुशासन रखना अत्यंत आवश्यक है. यदि आप लीडर बनना चाहते हैं तो आपको दूसरों के चरित्र में इस बदलाव के लिए अपने चरित्र का निर्माण करना होगा एवं उसका प्रदर्शन भी करना होगा. समय एवं अनुशासन पर निरंतर संवाद के बल पर किसी की मानसिकता बदली जा सकती है. जिस प्रकार मूर्तिकार नहीं जानता कि उसके हथौड़े की किस चोट के बाद पत्थर चटक जाएगा ठीक उसी प्रकार आप भी नहीं जानते हैं कि आपके संवाद के समय आपके कौन से वाक्य से सामने वाला प्रभावित हो और धीरे-धीरे उसकी मानसिकता बदल जाए. जीवन में आगे बढ़ने के लिए समय के मूल्य, समय की पाबंदी तथा अनुशासन के मूल्य को समझना एक अनिवार्य पहलू है.

कर्म के माध्यम से ही प्रगति संभव है :- अपने कर्म के माध्यम से ही हम प्रगति कर सकते हैं. कर्म से अधिक कोई भी वस्तु हमें विकसित नहीं कर सकती. इसका एक जीवंत उदाहरण है कि डेव एंडरसन और जिम मर्फी एक ही दिन अमेरिकन रेलवे में भर्ती हुए. 20 वर्षों के बाद भी डेव वही नौकरी कर रहे थे पर जिम रेलवे के चेयरमैन बन गए थे. डेव ने कहा मैं प्रति घंटा 1.75 डॉलर के लिए काम करने आता रहा और जिम अमेरिकी रेलवे के लिए काम करते थे. बस यही सबसे बड़ा अंतर बन गया. आप अपने लक्ष्य को पाने के दौरान जो प्राप्त करते हैं वह उसकी तुलना में बहुत तुच्छ होता है कि आप अपने लक्ष्य पाने के दौरान क्या बन गए और यह बात पुरस्कार और सम्मान की बात से बहुत ऊपर की होती है. जिस काम को करने से आपको आंतरिक अभिव्यक्ति और आंतरिक संतुष्टि प्राप्त होती है उसे ही वास्तविक खुशी माना जाता है. जब आपका काम और उसका परिणाम संसार के लिए उपयोगी हो जाता है तो आप अपने कर्मों के माध्यम से जीवन का उद्देश्य प्राप्त कर लेते हैं.

कठिन परिस्थितियां आपका व्यक्तित्व गढ़ती है: - जो भी अपने जीवन में उच्च शिखर पर गया है उसने कभी न कभी कठिन समय का सामना अवश्य किया है. वास्तव में एक अच्छे व्यक्तित्व के लिए कठिन परिस्थितियां एक प्रशिक्षण स्थल होता है, यहां आप जीवन में संघर्ष करते हैं और संघर्ष में प्रगति छिपी होती है. यदि आप असफल होते हैं तो असफलताओं से भी आप जीवन के कुछ बेहतर सबक सीखते हैं जो कि आप सफलता प्राप्त करने के साथ नहीं सीख सकते हैं. आप जिन बाधाओं का सामना करते हैं उसके साथ आपके चरित्र की दृढ़ता सामने आती है और आपके बेहतरीन चरित्र का निर्माण होता है तथा आप सफलता के बेहतरीन आयाम को प्राप्त करते हैं.

अपने व्यक्तिव विकास के लिए सुविधाजनक क्षेत्र से बाहर आना आवश्यक :- अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए आपको सुविधाजनक दायरों की दीवारों को तोड़ना होगा. सुविधाजनक दायरे से बाहर निकलने के बाद ही आप अपने जीवन के उच्च स्तर को प्राप्त कर सकते हैं. जो खुद में बदलाव नहीं ला सकता उसका विकास होना भी संभव नहीं है और जो विकास नहीं करता वह शीघ्र समाप्त हो जाता है. यदि इस पृथ्वी पर पहले आने वाले व्यक्ति अपने ही सुविधाजनक दायरे में बंधे रहने का निर्णय लिए रहते हैं तो हमारे पास जो सुविधाएं मौजूद हैं संभवत: वह आज नहीं होती. हम जब अपने सुविधाजनक क्षेत्र से बाहर आयेंगे, उसका विस्तार करेंगे तभी हम अपने जीवन का विस्तार कर सकते हैं.

वास्तव में जो व्यक्ति जीवन में कुछ करके दिखाना चाहता है यह संसार उस व्यक्ति की दृढ़ इच्छाशक्ति के लिए मार्ग बनाता है और उस व्यक्ति के रास्ते से सारी बाधाएं स्वयं ही हटने लगती हैं. जब आप ऐसे काम करते हैं जो आपने पहले कभी नहीं किया है तभी आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है. जो काम आप नहीं कर सकते उसे करने का प्रयास करना ही वास्तविक चुनौती होती है. जब आप अपने सुविधाजनक क्षेत्र की सीमा से बाहर आते हैं तो आपको अपने ऊपर विश्वास उत्पन्न होने लगता है और आप अपने व्यक्तित्व के बेहतरीन आयाम को प्राप्त करने लगते हैं. यदि आप जीवन में बदलाव चाहते हैं, अपने जीवन स्तर को सुधारना चाहते हैं तो आपको अपनी कार्यप्रणाली में एवं कार्य निष्पादन में सुधार करना होगा. एक अच्छा कार्य निष्पादन एक अच्छी मानसिकता की उपज होती है.

मो. जावेद अर्शद
क्षे.का.,मुंबई ठाणे

समाचार (केन्द्रीकृत)

दि. 26.01.2023 को गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान बैंक की अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक सुश्री ए. मणिमेखलै द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया. साथ में कार्यपालक निदेशक श्री नितेश रंजन, श्री निधु सक्सेना, श्री रामसुब्रमणियन एस तथा मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री उमेश कुमार सिंह और मुख्य सुरक्षा अधिकारी, ले. कर्नल संजय कुमार एवं गार्ड श्री संतोष जाड़े उपस्थित रहे.

दि. 19.01.23 को यूनियन बैंक ऑफ इंडिया ने टाटा हिताची के ग्राहकों को उपस्कर वित्त प्रदान करने हेतु श्री आलोक कुमार, क्षे.म. प्र., बेंगलुरू तथा श्री के. सोमस्कंदन सीएफ़ओ, मेसर्स टाटा हिताची कंस्ट्रक्सन मशीनरी कंपनी प्राइवेट लिमिटेड की उपस्थिति में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए.

दि. 08.03.23 को बैंक द्वारा ट्रायडेंट होटल, मुंबई में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रबंध निदेशक एवं सीईओ सुश्री ए. मणिमेखलै द्वारा की गई.

दि. 10.02.23 को प्रबंध निदेशक एवं सीईओ सुश्री ए मणिमेखलै ने 'उत्तर प्रदेश ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट- 2023' में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया वॉयस बैंकिंग समाधान "युवा" का लोकार्पण किया.

दि. 30.01.23 को रक्षा मंत्रालय (नौसेना) के एकीकृत मुख्यालय दिल्ली में अग्निवीरों सहित नौसेना के कर्मचारियों के वेतन खातों के लिए श्री आर. के. जगलान, म.प्र., जीबीआरडी यूनियन बैंक ऑफ इंडिया तथा कमांडर संदीप के. वर्मा, एसएमडीई (P&A) एवं सीडीआर मोहित काबरा की उपस्थिति में भारतीय नौसेना के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए.

दि. 04.03.23 को 'एम्पावर हर' पहल के तहत महिला अधिकारों और समानता के बारे में जागरूकता फैलाने हेतु महिला मैराथन का आयोजन किया गया.

इंस्टीट्यूट्स ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया द्वारा वित्तीय रिपोर्टिंग 2021-22 में उत्कृष्टता हेतु प्रदान किए गए आईसीएआई पुरस्कारों के अंतर्गत 'सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों' की श्रेणी में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को वर्ष 2021-22 की वार्षिक रिपोर्ट में शामिल वित्तीय विवरणों के लिए गोल्ड शील्ड से सम्मानित किया गया. यह सम्मान श्री एस के दाश, म.प्र (कंपनी सचिव) श्री पी के सामल, सीएफ़ओ तथा श्री गिरीश चन्द्र जोशी, क्षे.म.प्र., वाराणसी द्वारा प्राप्त किया गया.

दि. 26.01.23 को गोरखपुर क्षेत्र में गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर क्षे. प्र. श्री रंजीत सिंह द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया तथा बैंक में श्रेष्ठ कार्य निष्णादन करने वाले सशस्त्र प्रहरियों को क्षे. प्र. द्वारा सम्मानित किया गया.

दि. 26.01.23 को क्षे. प्र., हल्द्वानी श्री गौरव कुमार, उप क्षे. प्र. श्री कमलेश बर्गली ने क्षे. का. हल्द्वानी के स्टाफ के साथ गणतन्त्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया.

दि. 14.02.23 को क्षे. का., दिल्ली (मध्य) के क्षे. प्र., श्री गोविंद मिश्रा की उपस्थिति में 'एम्पावर हर' पहल के तहत निगम प्रतिभा विद्यालय (प्राथमिक कन्या स्कूल) में वृक्षारोपण कार्यक्रम किया गया तथा एलसीडी प्रोजेक्टर, प्रिंटर, 3 अलमारी और 30 कुर्सियां दान की गई.

दि. 18.03.23 को मऊ क्षेत्र के अंतर्गत खैराबाद शाखा के नए परिसर का उद्घाटन क्षे.म.प्र., वाराणसी श्री गिरीश चंद्र जोशी द्वारा किया गया. साथ में क्षे. प्र. श्री मिथिलेश कुमार, अन्य स्टाफ सदस्य एवं शाखा के सम्मानित ग्राहक उपस्थित रहे.

दि. 13.01.23 को श्री सुमित श्रीवास्तव, क्षे.म.प्र. लखनऊ की अध्यक्षता में कानपुर क्षेत्र के समस्त शाखा प्रमुखों की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया. इस अवसर पर क्षे. प्र. कानपुर श्री संजीव कुमार एवं क्षेत्राधीन शाखा प्रमुख गण भी उपस्थित रहे.

दि. 19.03.23 को 'पॉवर हिम' अभियान के तहत क्षे. का. हल्द्वानी के क्षे. प्र. श्री गौरव कुमार, उप क्षे. प्र. श्री कमलेश बर्गली के साथ क्षेत्र के अन्य स्टाफ सदस्यों ने योग अभ्यास किया.

दि. 23.01.23 को क्षे. का. दिल्ली (मध्य) द्वारा मुख्य अतिथि श्रीमती बीना वाहिद, क्षे.म.प्र., विशिष्ट अतिथि श्री प्रफुल्ल कुमार सामल, मुख्य वित्तीय अधिकारी, केंद्रीय कार्यालय मुंबई, श्री गोविद मिश्रा, क्षे. प्र., दिल्ली-मध्य की उपस्थिति में आउटरीच अभियान का आयोजन किया गया.

दि. 21.03.23 को क्षे.का. रायपुर द्वारा कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व के अंतर्गत 'एम्पावर हर' के तहत पाँडरी शाखा के महिला स्वयं सहायता समूह को श्री रूप लाल मीणा क्षे.म.प्र. भोपाल एवं श्रीमती कविता श्रीवास्तव, क्षे. प्र. द्वारा सिलाई मशीन वितरण किया गया.

दि. 19.03.23 को श्री रूप लाल मीणा, क्षे.म.प्र., भोपाल द्वारा यूनियन एमएसएमई फ़र्स्ट शाखा, रायपुर का उद्घाटन किया गया. कार्यक्रम में श्रीमती कविता श्रीवास्तव, क्षे. प्र., रायपुर, श्री सौरभ चफेकर, उप क्षे. प्र. श्री के के ओझा, शाखा प्रमुख एवं अन्य स्टाफ एवं ग्राहक गण उपस्थित रहे.

क्षे. का. राँची द्वारा दि. 14.03.23 को 'एम्पावर हर' योजना के तहत आर्मी स्कूल दीपटोली को वॉटर प्यूरिफायर कम कूलर प्रदान किया गया. मौके पर आर्मी स्कूल के प्रिंसिपल श्री अभय कुमार सिंह, क्षे. म.प्र. श्री ज्ञान रंजन सारंगी, क्षे. प्र. श्रीमती सोनालिका, एम्पवार हर समिति के नोडल अधिकारी सहायक महाप्रबन्धक.

क्षे. का. राँची द्वारा 13 जनवरी 2023 को क्षेत्राधीन सभी 68 शाखाओं हेतु भौतिक समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया. इस समीक्षा बैठक की अध्यक्षता उप अंचल प्रमुख श्री विकास कुमार सिन्हा ने की साथ ही राँची क्षेत्र के मेंटर जीएम श्री सीवी मंजूनाथ वर्चुअल माध्यम से जुड़े. क्षे. प्र. श्रीमती सोनालिका, उप क्षे. प्र. श्री मुकेश कुमार एवं एमएलपी प्रमुख श्री भास्कर मण्डल ने शाखाओं की समीक्षा करते हुए उत्कृष्ट प्रदर्शनकर्ता शाखा प्रमुखों को पुरस्कृत किया.

दि. 06.03.23 को 'एम्पावर हर' कार्यक्रम के अंतर्गत क्षे.का., मऊ में क्षे. प्र. श्री मिथिलेश कुमार द्वारा महिला स्टाफ सदस्यों को सम्मानित किया गया.

दि. 24.01.2023 'एम्पावर हर' अभियान के तहत क्षे. का., रीवा द्वारा उप महाप्रबंधक, श्री मोहन दास के. का. एवं क्षे. प्र. मार्कण्डेय यादव की गरिमामय उपस्थिति में इंटीग्रिटी स्कूल, रीवा में बैग वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया.

जिला प्रशासन रीवा द्वारा दि. 23.02.2023 को आयोजित रोजगार दिवस के अवसर पर यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तीन शाखाओं, विश्वविद्यालय शाखा, सिरमौर चौराहा शाखा, चोरहटा के शाखा प्रमुखों को शासकीय स्वरोजगार योजना में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए पुरस्कृत करते हुए जिलाधिकारी रीवा, मनोज पुष्प एवं क्षे. प्र. मार्कण्डेय यादव.

दि. 28.02.2023 को गंगटोक में नाबार्ड व सिक्किम स्थित बैंकों द्वारा आयोजित आउटरीच कार्यक्रम के दौरान गैंगटोक स्थित चिंतन भवन में माननीया वित्त मंत्री, श्रीमती निर्मला सीतारामन, भारत सरकार एवं श्री प्रेम सिंह तामाङ, मुख्यमंत्री, सिक्किम के कर-कमलों से सिक्किम क्षेत्र में स्टैंड अप इंडिया योजना के अंतर्गत यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के ग्राहकों को चेक प्रदान किया गया. इस कार्यक्रम में क्षे. प्र. श्री असीम पाल एवं गैंगटॉक शाखा प्रमुख श्री दयानंद थाती उपस्थित रहे.

दि. 09.02.23 को 'एम्पावर हर' कार्यक्रम के तहत क्षे.का., दुर्गापुर द्वारा हाटगोबिंदपुर में स्वयं सहायता समूह महिला सदस्यों की आर्थिक सहायता हेतु 07 सिलाई मशीनें प्रदान की गईं तथा इस अवसर पर रु 50 लाख तक का ऋण स्वयं सहायता समूह महिला सदस्यों को स्वीकृत और वितरित किया गया. इस अवसर पर श्री भवेश प्रकाश, क्षे. प्र., श्री अविनाश अग्रवाल, उप क्षे. प्र. और स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

दि. 01.03.23 को कालिम्पोंग में ऋण मेला का आयोजन किया गया, इस अवसर पर मुख्य अतिथि माननीय श्री शेखर कुमार चौधरी, (आईएएस) कालिम्पोंग के कर-कमलों से कालिम्पोंग शाखा के सम्माननीय ग्राहकों को ऋण स्वीकृत पत्र वितरित किया गया. कार्यक्रम में क्षे.म.प्र., कोलकाता श्री जी के सुधाकर राव, एवं क्षे. प्र. श्री असीम कुमार पाल एवं कई स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

दि. 28.02.23 को माननीया वित्त मंत्री, भारत सरकार, श्रीमती निर्मला सीतारामन एवं श्री प्रेम सिंह तामाङ, मुख्य मंत्री, सिक्किम ने गंगटोक में नाबार्ड व सिक्किम स्थित बैंकों द्वारा आयोजित आउटरीच कार्यक्रम के दौरान हमारे बैंक के एक स्टाल पर कुछ समय रुक कर हमारे बैंक के ग्राहक से बात की और अपने सोशल मीडिया एकाउंट से भी इस क्षण को साझा किया.

दि. 27.02.23 को क्षे.म.प्र. कोलकाता श्री जी के सुधाकर राव द्वारा क्षे. का. सिलीगुड़ी के अंतर्गत स्थित शाखाओं के लिए समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया तथा इस अवसर पर अच्छा कारोबार करने वाली शाखाओं को पुरस्कृत किया गया.

दि. 23.01.23 को अंचल कार्यालय भुवनेश्वर में 'आउटरीच कार्यक्रम' की निगरानी हेतु कें. का. से मार्गदर्शक के रूप में तैनात महाप्रबंधक श्रीमती अन्नपूर्णा तथा उप महाप्रबंधक श्री अजय कुमार, क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय के स्टाफ-सदस्यों को संबोधित करते हुए.

दि. 24.02.23 को क्षे. का. द्वारा उप क्षे. प्र. श्री अशोक मिश्र की उपस्थिति में क्षे. का. के सभी स्टाफ सदस्यों के साथ 'कैंसर जागरूकता' कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस अवसर पर कैंसर संबंधी जानकारी देने के लिए सर्जिकल ओंकोलोजी, एमएस, एमएच डॉ नितीश रंजन आचार्या मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे.

दि. 07.03.23 को 'एम्पावर हर' कार्यक्रम के अंतर्गत क्षे. का., संबलपुर ने मानसिक बीमारी से ग्रस्त महिलाओं के लिए 'मिसनरी ऑफ चैरटी' टर्स्ट के द्वारा 'आशा' नामक आश्रय गृह एवं पुनर्वास केंद्र हेतु भोजन की व्यवस्था की. साथ ही शौचालय एवं बाथरूम हेतु नए दरवाजे लगाए गए एवं चादर दान किए गए. क्षे. का. एवं 'एम्पावर हर' समिति के सदस्यों के साथ क्षे. प्र., श्री पंकज कुमार कपसिमे उपस्थित रहे.

दि. 29.03.23 को क्षे. का. भुवनेश्वर द्वारा सीएसआर गतिविधियों में 'एम्पावर हर' के तहत केंद्रीय विद्यालय-2, को क्षे. प्र. श्री सत्यबान बेहेरा द्वारा महिला अधिकारिता समिति की उपस्थिति में विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री अंजन कुमार खटुआ को स्मार्ट कक्षा के उपकरण जैसे प्रोजेक्टर, कंप्यूटर और सम्बद्ध उपकरण प्रदान किए गए.

दि. 29.03.23 को केशपुर शाखा (ब्रह्मपुर क्षेत्र) का उद्घाटन क्षे. प्र. श्री सत्यब्रत सामल ने किया. इस अवसर पर उप क्षे. प्र., श्री रामचंद्र बेहेर दलाई एवं मुख्य प्रबंधक वेंकट रबण बेहेरा के साथ-साथ अन्य स्टाफ सदस्य और ग्राहक उपस्थित रहे.

दि. 29.03.23 को क्षे. का., रायगड़ा की तरफ से अंचल लेखा परीक्षा प्रमुख, भुवनेश्वर श्री सुशील कुमार पाणिग्रही एवं क्षे. प्र. श्री तपन कुमार साहु के द्वारा गवर्नमेंट गर्ल्स हाई स्कूल में स्कूल बैग का वितरण किया गया.

दि. 20.01.23 को क्षे. का., संबलपुर में श्री सर्वेश रंजन, क्षेमप्र की अध्यक्षता में शाखा प्रमुखों की समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया. मंचासीन कार्यपालक श्री पंकज कुमार, क्षे.प्र. संबलपुर तथा श्री हरेंद्र कुमार, उप क्षे. प्र. संबलपुर.

दि. 24.03.23 को क्षे. का., बालेश्वर द्वारा बैंक की 'एम्पॉवर हर' पहल के अंतर्गत सत्यसाई विद्या मंदिर के बालिका छात्रावास में वाटर प्यूरीफायर दान किया गया. इस अवसर पर मीडियाकर्मी से बातचित करते क्षे. प्र., श्री निरंजन बारिक साथ में उप क्षे. प्र., श्री गजेन्द्र नाथ दास.

समाचार (पश्चिम)

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया क्षे. का. मुंबई (ठाणे) ने 3 से 6 फरवरी 2023 तक क्रेडाई-एमसीएचआई ठाणे द्वारा रेमंड ग्राउंड ठाणे पश्चिम में आयोजित 20वां रियल इस्टेट एचएफ़सी एक्स्पो 2023 में अपने प्रॉडक्ट की प्रदर्शनी लगाई. महाराष्ट्र के माननीय मुख्यमंत्री श्री एकनाथ शिंदे और भारत के पूर्व क्रिकेट कप्तान श्री कपिल देव यूनियन बैंक के स्टॉल पर पधारे तथा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को बधाई दी.

दि. 27.01.2023 को बढ़ते ग्राहक आधार की जरूरतों को पूरा करने के लिए सुश्री ए मणिमेखलै एम डी एवं सीईओ द्वारा पुणे (पूर्व) के नए क्षे. का. भवन का उद्घाटन किया गया. साथ में क्षे. प्र. श्री नवनीत दत्ता एवं अन्य कार्यपालक गण उपस्थित रहे.

दि. 23.01.23 को आरएलपी ठाणे के नए परिसर का उद्घाटन कार्यपालक निदेशक श्री रजनीश कर्नाटक के कर-कमलों द्वारा किया गया. इस अवसर पर क्षे.म.प्र. मुंबई श्री योगेन्द्र सिंह, मु.म.प्र. लार्ज कॉर्पोरेट वर्टिकल श्री अभिजीत बसाक, क्षे.प्र. मुंबई ठाणे श्रीमती रेणू के नायर, उ.म.प्र. (मा.सं.) डॉ चेतना पांडे और आरएलपी प्रमुख श्री मनीष सिंह सहित आरएलपी के स्टाफ सदस्य मौजूद थे.

दि. 06.02.23 को कार्यपालक निदेशक, श्री रजनीश कर्नाटक की अध्यक्षता में अंचल कार्यालय अहमदाबाद में समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया.

दि. 23.01.23 को क्षे. का. बड़ौदा में कार्यपालक निदेशक श्री नितेश रंजन, क्षे.म.प्र., अहमदाबाद श्री विट्ठल बनशंकरी एवं क्षे. प्र. श्री सत्यजीत महांती की उपस्थिति में एमएसएमई कस्टमर आउटरीच प्रोग्राम का आयोजन किया गया.

दि. 23.01.23 एवं 24.01.23 को क्षे. का. मुंबई (ठाणे) द्वारा मुलुंड शाखा में आयोजित आउटरिच कैम्पेन कार्यक्रम का उद्घाटन कार्यपालक निदेशक श्री रजनीश कर्नाटक के कर-कमलों द्वारा किया गया. इस अवसर पर क्षे.म.प्र., मुंबई श्री योगेन्द्र सिंह, मु.म.प्र., लार्ज कॉर्पोरेट वर्टिकल श्री अभिजीत बसाक, क्षे.प्र. मुंबई ठाणे श्रीमती रेणू के नायर, उ.म.प्र. (मा.सं.) श्रीमती डॉ चेतना पांडे एवं मुलुंड में स्थित विभिन्न शाखाओं के शाखा प्रमुखगण मौजूद थे.

दि 23.01.2023 को क्षे का, अमरावती द्वारा, श्री सुदर्शन भट्ट, महाप्रबन्धक, कें.का, मुंबई के मार्गदर्शन में शाखा प्रमुखों की समीक्षा बैठक का आयोजन किया. क्षे. प्र. श्री अनूप तराले, उप क्षे. प्र. श्री प्रमोद ठाकुर और शाखाओं के शाखा प्रबन्धक उपस्थित रहे.

दि. 01.02.2023 को बदलापुर शाखा (ठाणे क्षेत्र) के नए परिसर का उद्घाटन क्षेत्र मुख्य महाप्रबंधक मुंबई, श्री योगेन्द्र सिंह के कर-कमलों से हुआ. क्षे. प्र. सुश्री रेणु नायर, बदलापुर शाखा प्रमुख श्री लक्ष्मीनारायण सिंह एवं अन्य शाखा प्रमुख भी उपस्थित थे.

पुणे पीएमसी के अंतर्गत यूनियन बैंक ऑफ इंडिया क्षे. म. प्र. का., पुणे ने शहर के अंदर चलने वाली सभी बसों का बस ब्रांडिंग किया, इस मौके पर क्षे. म. प्र. का., के अंचल प्रमुख श्री कबीर भट्टाचार्य एवं उप अंचल प्रमुख श्री मयंक भारद्वाज द्वारा हरी झंडी दिखा कर बसों को रवाना किया.

दि. 01.03.2023 को क्षे. का., अमरावती में क्षे.म.प्र. श्री कबीर भट्टाचार्य द्वारा क्षे. का., अमरावती के नवीन परिसर का उद्घाटन किया गया. इस दौरान क्षे.प्र. श्री अनूप तराले, उप क्षे.प्र. श्री प्रमोद ठाकुर स.म.प्र. श्री संजय कुमार, क्षे. का., और शाखा के स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

दि. 08.03.2023 को क्षे. का., नासिक द्वारा 'कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व' के अंतर्गत सुश्री स्वरांजली पिंगले, उप मुख्य वित्त एवं लेखा अधिकारी, जिला परिषद, नासिक एवं क्षे. प्र., श्री सुमेर सिंह, के कर-कमलों से सिलाई मशीन का वितरण किया गया.

समाचार (दक्षिण)

दि. 11.01.23 को आंध्र प्रदेश राज्य के मुख्य मंत्री श्री वाई एस जगन मोहन रेड्डी एवं श्री नवनीत कुमार, क्षे.म.प्र. विजयवाड़ा व संयोजक राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति एवं अन्य वित्तीय संस्थानों के प्रतिनिधियों द्वारा ग्राहकों को 'जगनन्न तोडु' ऋण योजना के अंतर्गत वर्ष 2023 हेतु विभिन्न ऋण योजनाओं की घोषणा आंध्र प्रदेश सेक्रेटरियट में किया गया.

दि. 10.03.23 को राज्य स्तरीय बैंकेर्स समिति (एस एल बी सी) आंध्रप्रदेश की 222 वीं बैठक आंध्रप्रदेश के मुख्य मंत्री श्री वाई एस जगन मोहन रेड्डी, ए मणिमेखलै, एम.डी. एवं सीईओ व अध्यक्ष (एस एल बी सी), श्री नवनीत कुमार, क्षे.म.प्र. विजयवाड़ा व संयोजक (एस एल बी सी), एवं अन्य वित्तीय संस्थानों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में आंध्रप्रदेश राज्य के सचिवालय में संपन्न हुई.

दि. 20.03.23 को सीएसआर गतिविधि के तहत क्षे.का., बेंगलूरु (उत्तर) द्वारा प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, सुश्री ए. मणिमेखलै की उपस्थिति में अजय सरकारी स्कूल, बाशेट्टीहल्ली, दोड्डबल्लापुर को वॉटर कूलर एवं प्यूरिफायर तथा प्रथमिक स्कूल, बिसुवनहल्ली, दोड्डबल्लापुर में बच्चों के लिए स्कूल बैग तथा किचन सामग्री प्रदान किया गया.

दि. 20.03.23 को दोड्डबल्लापुर, क्षे. का., बेंगलूरु (उत्तर) में प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, सुश्री ए मणिमेखलै द्वारा एसटीपी के माध्यम से डिजिटल केसीसी की शुरुआत की गई. इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक श्री नितेश रंजन एवं क्षे.म.प्र., बेंगलूरु श्री आलोक कुमार एवं अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

दि. 17.02.23 को प्रबंध निदेशक एवं सीईओ सुश्री ए. मणिमेखलै द्वारा बेंगलूरु अंचल के कारोबार की समीक्षा बैठक की गई, इस अवसर पर क्षे.म.प्र श्री आलोक कुमार सहित अंचलाधीन क्षे. का. के क्षे. प्र. एवं शाखा प्रमुख उपस्थित थे.

दि. 18.03.22 को प्रबंध निदेशक एवं सीईओ सुश्री ए. मणिमेखलै द्वारा किसान क्रेडिट कार्ड का डिजिटल लॉंच किया गया, इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक श्री नितेश रंजन, अंचल प्रमुख श्री आलोक कुमार, श्री सम्पत राम (वरिष्ठ वैज्ञानिक,एनआईसी), श्री शकील अहमद, निदेशक (FRUITS-Farmer Registration and Unified beneficiary Information System)-, श्री राजेश बंसल (सीईओ, आरबीआई-एच, भारतीय रिज़र्व बैंक इनोवेशन हब), श्री रजनीश खरे (सीडीओ) सहित क्षे. प्र. बेंगलूरु (द) श्री वेद प्रकाश अरोड़ा, क्षे. प्र. बेंगलूरु (उ) श्री मनोहर एम.आर. सहित स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

दि. 23.01.23 को मंगला सेवा समिति ट्रस्ट (बच्चों के लिए अनाथालय) में कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम के दौरान माननीय प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, सुश्री ए मणिमेखलै ने 95 बच्चों को स्कूल बैग और किट वितरित किए तथा सोलार पैनल की स्थापना के लिए ₹4,00,984/- का चेक प्रदान किया. इस कार्यक्रम में कें. का. से मु.म.प्र. डीएमडी, श्री प्रवीण शर्मा, मु.म.प्र. एमएसएमई, श्री सी एम मिनोचा, म.प्र. खुदरा आस्ति विभाग, श्री संजय नारायण, महा प्रबंधक सहायक सेवाएँ विभाग, श्री जी बी मिश्रा एवं मंगलूरु अंचल के वरिष्ठ कार्यपालक गण भी उपस्थित थे.

दि. 01.02.23 को 'एम्पॉवर हर' पहल के तहत क्षे. का., बेलगावी ने स्वामी विवेकानंद सेवा प्रतिष्ठान, बेलगावी में प्रबंध निदेशक एवं सीईओ सुश्री ए मणिमेखलै के कर कमलों से स्कूल बैग और डायपर दान किए. इस अवसर पर मु.म.प्र. (एलसीवी) श्री अभिजीत बसाक, उ.म.प्र., सुश्री माधवी वी, क्षे.प्र. बेलगावी, डॉ. प्रकाश टी और अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

दि. 23.01.23 को मंगलूरु अंचल की कारोबारी समीक्षा बैठक का आयोजन प्रबंध निदेशक एवं सीईओ सुश्री ए मणिमेखलै की अध्यक्षता में किया गया. साथ में मु.म.प्र. डीएमडी, श्री प्रवीण शर्मा, मु.म.प्र. एमएसएमई, श्री सी एम मिनोचा, म.प्र. खुदरा आस्ति विभाग, श्री संजय नारायण एवं मंगलूरु अंचल के वरिष्ठ कार्यपालक गण भी उपस्थित थे.

दि. 30.01.23-01.02.23 तक संकाय सम्मेलन-2023 आयोजन के अवसर पर स्टा. महा., बेंगलूरु में प्रबंध निदेशक एवं सीईओ सुश्री ए. मणिमेखलै ने उपस्थित समस्त संकाय सदस्यों को संबोधित किया. श्रीमती एस. अन्नपूर्णा, म.प्र. (मा.सं. ज्ञानार्जन व विकास) प्राचार्य श्री ह्रषीकेश मिश्रा, उ.म.प्र. कें. का. डॉ चेतना पाण्डेय उपस्थित रहे.

दि. 10.03.23 को सुश्री ए मणिमेखलै, एम डी एवं सीईओ द्वारा विजयवाड़ा स्थित बीसी वेलफेयर हॉस्टल पर वुमेन को स्टेनलेस स्टील वाटर कूलर और सीलिंग फैन दान दिया. इस कार्यक्रम में क्षेमप्र विजयवांडा श्री नवनीत कुमार, क्षे.प्र. विजयवाड़ा श्री रजनीकांता राव और अन्य उपस्थित रहे.

दि. 10.02.23 को कार्यपालक निदेशक श्री रजनीश कर्नाटक द्वारा बेंगलूरु दक्षिण की आनेकल शाखा के नवीन परिसर का उद्घाटन किया गया. इस अवसर पर क्षे.म.प्र श्री आलोक कुमार, क्षे.प्र. श्री वेद प्रकाश अरोड़ा, शाखा प्रमुख सहित शाखा एवं स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

दि. 31.01.23 को स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलूरु के प्रांगण में बैंक की प्रबंध निदेशक व सीईओ सुश्री ए. मणिमेखलै के कर-कमलों द्वारा महात्मा गांधी की प्रतिमा का अनावरण किया गया. श्रीमती एस. अन्नपूर्णा, म.प्र. (मा.सं. ज्ञानार्जन व विकास) प्राचार्य श्री ह्रषीकेश मिश्रा, श्रीमती माधवी वी., उ.म.प्र., व डॉ चेतना पाण्डेय, उ.म.प्र., भी उपस्थित रहे.

दि. 10.03.23 को क्षे.म.प्र. विजयवाड़ा श्री नवनीत कुमार एवं अन्य कार्यपालकों की उपस्थिति में सुश्री ए मणिमेखलै, एम.डी. एवं सीईओ, के कर कमलों द्वारा गुणदाला, विजयवाड़ा में बी सी वेलफेयर हॉस्टल में छात्राओं को कॉलेज बेग वितरित किए गए.

दि. 12.01.23 को स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलूरु में "खुला व्यायामशाला" का फीता काटकर बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री रजनीश कर्नाटक द्वारा उद्घाटन किया गया. इस अवसर पर समस्त संकाय सदस्यों व प्रतिभागियों के साथ श्री ह्रषीकेश मिश्रा, प्राचार्य, श्री टाटा वेंकट वेणुगोपाल, म. प्र., श्री लाल सिंह, मु.म.प्र. (मा.सं.) व श्रीमती एस. अन्नपूर्णा, म.प्र. (मासं-ज्ञानार्जन व विकास) भी उपस्थित रहे.

दि. 03.03.2023 को विशाखपट्टणम में आन्ध्र प्रदेश सरकार द्वारा आयोजित ग्लोबल इनवेस्टर्स समिट - 2023 में केंद्रीय कार्यालय से श्री रामसुब्रमणियन एस, कार्यपालक निदेशक तथा श्री राजीव मिश्रा, मु.म.प्र ने भाग लिया. साथ हैं विशाखपट्टणम अंचल से श्री के एस डी शिव वर प्रसाद, क्षे.म.प्र, श्री पी सिंहाचलम, उप अं.प्र और अंचलाधीन क्षेत्रों के क्षेत्र प्रमुख.

दि. 02.03.23 को क्षे.का., त्रिवेन्द्रम द्वारा केरल सरकार की पहल के तहत, कृषि में एक मूल्य शृंखला विकसित करने हेतु वैगा-2023 कार्यक्रम में क्षे. प्र., श्री सुजीत एस. तारिवाल, उप क्षे. प्र., श्री एन. सनल कुमार की उपस्थिति में कृषि स्टॉल स्थापित किया गया.

दि. 15.02.23 को रुद्रवरम शाखा (करीमनगर क्षेत्र) के नये परिसर का उद्घाटन क्षे.मु.म.प्र. श्री सुरेश चंद्र तेली, एवं क्षे. प्र. श्री एम अरुण कुमार द्वारा किया गया. इस कार्यक्रम में उप क्षे. प्र., अग्रणी जिला प्रबंधक एवं अन्य कार्यपालक गण उपस्थित रहे.

दि. 27.02.23 को (मानव संसाधन) श्री जी.एन. दास द्वारा स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलूरु में पौधारोपण किया गया. महाप्रबंधक (मासं-ज्ञा. व वि.) सुश्री अन्नपूर्णा एस. व प्राचार्य श्री ह्रषीकेश मिश्रा की उपस्थित में आयोजित इस कार्यक्रम के दौरान समस्त स्टाफ सदस्यों के साथ श्रीमती सौम्या श्रीधर, उप महाप्रबंधक भी उपस्थित रही.

दि. 15.02.23 को जगित्याल कलेक्टरेट (करीमनगर क्षेत्र) नई शाखा का उद्घाटन क्षे.मु.म.प्र. श्री सुरेश चंद्र तेली, कलेक्टर शेख यासमिन बाशा एवं क्षे. प्र. श्री एम अरुण कुमार के द्वारा हुआ. इस कार्यक्रम में क्षे. का., करीमनगर के दोनों उप-क्षे. प्र., अग्रणी जिला प्रबंधक, जगित्याल एवं अन्य कार्यपालक गण उपस्थित रहे.

दि. 04.01.23 को यूनियन बैंक आफ इंडिया के स्टाल का उद्घाटन श्री अश्विन मार्गम, उपाध्यक्ष, नुमाइश सोसाइटी द्वारा किया गया. श्री के श्रीधर बाबु क्षे.प्र. सैफबाद, क्षे.प्र. श्री के डुंडीश्वर राव, क्षे. का. पंजागुट्टा और श्री कोटा अजय पॉल, उप अं.प्र उपस्थित रहे.

दि. 6.02.2023 को कोझीकोड़ में श्री रवींद्र बाबु, क्षेमप्र, मंगलूरु की अध्यक्षता में शाखा प्रमुखों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई. सुश्री सीएमए रोसलिन रोड्रिगस क्षे. प्र. एवं श्री सरजू कुमार पाधी, मुख्य प्रबंधक, ऋण मंचासीन हैं

दि. 06.03.23 को कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व के तहत क्षे. का. हैदराबाद कोटी द्वारा सी रामचंद गर्ल्स हाई स्कूल, हैदराबाद में 'एम्पॉवर हर' कार्यक्रम में स्कूल को जरूरी वस्तुओं का वितरण किया गया. कार्यक्रम में क्षे. प्र. हैदराबाद कोटी- श्री प्रमोद कुमार रेड्डी, उप क्षे. प्र. -श्रीमती एम. माणिक्येश्वरी, सी. रामचंद गर्ल्स हाई स्कूल की अध्यक्ष -सुश्री वेंकम्मा, मुख्य अध्यापिका- एस जयाप्रदा और स्नातक कॉलेज के सचिव श्री सुधाकरुडु भी शामिल रहे.

दि. 11.01.23 को मानाश्शेरी शाखा (कोषिक्कोड क्षेत्र) के एटीएम का उद्घाचन करते हुए डॉ नवास के एम, अध्यक्ष केएमसीटी ग्रूप एवं श्री टी ए नारायणन, क्षे. प्र., कोषिक्कोड. साथ में उपस्थित हैं श्री अजय मोहन, शाखा प्रमुख एवं अन्य स्टाफ सदस्य.

दि. 06.02.2023 को जेड सी सी हैदराबाद के स्टाफ ने क्षे.म.प्र. श्री सुरेश चंद्र तेली की उपस्थिति में समाधान के अंतर्गत 10000 मामलों के सफल निपटान के अवसर पर जश्न मनाया.

दि. 10.02.23 को क्षे. का., एर्णाकुलम की कुमारपुरम शाखा के नए परिसर का उद्घाटन करते हुए श्री टी एम वर्गीस (उत्कृष्ट शिक्षक हेतु राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता). श्री एम रवीन्द्र बाबू, क्षे.म.प्र., मंगलूरु; श्री मंजुनाथस्वामी सी जे, क्षे. प्र., एर्णाकुलम तथा पंचायत अध्यक्ष नीतामोल एम वी उपस्थित थे.

दि. 29.03.23 को क्षे. का., एर्णाकुलम द्वारा जनरल अस्पताल के ट्रॉमा केयर यूनिट के लिए प्रदत्त डक्टेबल एसी यूनिट का विधिवत् उद्घाटन करते हुए श्री एन एस के उमेश, जिला कलेक्टर एर्णाकुलम, क्षे. प्र. श्री मंजुनाथस्वामी सी जे, एर्णाकुलम जेनरल अस्पताल के अधीक्षक डॉ आर शहीर शा, शाखा प्रमुख तथा अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

व्यंजन

कुलुक्की शरबत

गर्मी में रोज पिएं केरल का फेमस कुलुक्की शरबत

आवश्यक सामग्री : चिया सीड्स : 1/2 चम्मच, नारियल पानी : 4 कप, जैगरी पाउडर : 1/4 चम्मच, नींबू : 1, नमक : स्वादानुसार, हरी मिर्च : 1, अदरक : थोड़ा-सा, पुदीना : 8-10 पत्रे, बर्फ : 2.

कैसे बनाएं कुलुक्की शरबत : कुलुक्की शरबत बनाने के लिए सबसे पहले चिया सीड्स को 15-20 मिनट के लिए भिगोकर रख दें. अब एक गिलास में नारियल पानी डालें. इसमें नींबू का रस निचोड़ लें.इसमें जैगरी पाउडर, नमक और चिया सीड्स डाल दें. इसके बाद हरी मिर्च काटकर डालें. आप चाहें तो अदरक का रस भी इसमें डाल सकते हैं. अगर आपको अदरक का स्वाद पसंद नहीं है तो आप इसे स्किप भी कर सकते हैं. इसके बाद इसमें गार्निशिंग के लिए पुदीने के पत्ते डालें. आखिर में बर्फ के टुकड़े डालकर सर्व करें और खुद भी पिएं.

कुलुक्की शरबत के फायदे : शरीर को दे ठंडक, पोषक तत्वों से भरपूर है कुलुक्की शरबत, हड्डियां बनाएं मजबूत, वजन कम करने में फायदेमंद, पेट के रोग करे दूर, इम्यूनिटी बढ़ाए कुलुक्की शरबत.

सिद्धार्थ चन्द्र
क्षे. का. नागपुर

हेल्थ टिप्स

आंतरायिक उपवास (इंटरमिटेंट फास्टिंग)

आंतरायिक उपवास हाल ही के वर्षों में वसा हानि रणनीति के बारे में सबसे ज्यादा चर्चा में बना हुआ है. आंतरायिक उपवास, एक निश्चित समय सीमा के भीतर कैलोरी की संख्या को सीमित करने की प्रक्रिया है. इस प्रक्रिया के अंतर्गत कुछ लोग पूरे 24 घंटे के उपवास का पालन करते हैं तथा अगले दिन दोगुनी कैलोरी का सेवन करते हैं. यहां तक कि ऐसे लोग भी हैं जो कई दिनों तक केवल पानी ही पीते हैं, तथापि रोजाना 16/8 घंटे का उपवास अधिक प्रचलित है. इसका अर्थ है कि 16 घंटे के लिए उपवास करना और 8 घंटे के भीतर अपनी सभी कैलोरी का सेवन करना. यह उपवास अचानक प्रारंभ न करते हुए क्रमिक आधार पर उपवास का समय बढ़ाने की सलाह दी जाती है.

जैसे-जैसे आपका शरीर उपवास की स्थिति में रहने का आदि हो जाता है, बिना खाए रहना आसान हो जाता है और आप लगभग भूल जाते हैं कि आपको भूख लगी है, इस प्रकार, सैद्धांतिक रूप में, आप समग्र रूप से महसूस करेंगे कि आप दिन के दौरान अधिक कैलोरी ले रहे हैं, लेकिन वास्तव में, आप अल्प मात्रा में खा रहे हैं और वजन कम कर रहे हैं.

नियमित डाइटिंग योजना तथा आंतरायिक उपवास के संबंध में आण्विक एवं सेलुलर एंडोक्रिनोलॉजी के तुलनात्मक अध्ययन में पाया गया है कि 10-सप्ताह के चरण के दौरान औसतन 'एक समान श्रेणी' का वजन कम हो गया था. वास्तव में 10 सप्ताह के दौरान लीन बॉडी मास और फैट लॉस की मात्रा में कोई अंतर नहीं था. ऐसे में लोग खुद को 'भूखा' क्यों रखना चाहेंगे? इसका कारण मनोवैज्ञानिक है. देखा जाए तो आप एक बार में अपनी कैलोरी का इतना बड़ा हिस्सा ले रहे हैं, ऐसा महसूस हो सकता है कि आप अपना पेट भर रहे हैं, लेकिन कैलोरी समान रहती है, इसलिए आपका वजन कम होता है.

डॉ. स्टीफन एंटोन के अनुसार "हम अभी तंत्र को समझना शुरू कर रहे हैं कि क्यों आंतरायिक उपवास फायदेमंद हो सकता है." कुल मिलाकर कोशिकाएं बेहतर प्रदर्शन करती हैं और अधिक आसानी से शरीर से अपशिष्ट को बाहर निकालने में सक्षम होती हैं. अत: शरीर को पर्याप्त कैलोरी नहीं मिल रही है, ऑटोफैगी एक प्रतिक्रिया है जो शरीर के तंत्र को बढ़ावा देने की अनुमति देगी जिससे उम्र बढ़ने और बीमारी से बचाव को विकसित करने में मदद मिलेगी.

अध्ययनों ने सिद्ध किया है कि कुल मिलाकर आंतरायिक उपवास अप्रत्यक्ष रूप से मृत्यु के कई कारणों की संभावना को कम करने में मदद करेगा, जिसमें कैंसर, मधुमेह, हृदय रोग शामिल हैं. यह एक साहसिक कथन है लेकिन साक्ष्य इन दावों की पुष्टि करते हैं. एक अध्ययन से पता चला है कि केवल 24 घंटों के बाद वृद्धि हार्मोन कई गुना बढ़ रहे हैं. वृद्धि हार्मोन द्वारा प्रदान किए जाने वाले कई लाभों को प्राप्त करने के लिए यह काफी बड़ी वृद्धि है .

आंतरायिक उपवास के लाभ में कुछ हैं- रक्तचाप का नियंत्रण, चर्बी घटाना, बढ़ी हुई इंसुलिन संवेदनशीलता के कारण शरीर के निचले वसा प्रतिशत को बनाए रखने में आसानी, शरीर की प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि, रेपामाइसिन (एमटीओआर) का यंत्रवत लक्ष्य बढ़ाने में सहायक, वृद्धि हार्मोन के स्तर में वृद्धि, बेहतर मानसिक ध्यान और उत्साह की अनुभूति आदि . इसके साथ ही कुछ दुष्प्रभाव भी हो सकते हैं जैसे कमज़ोरी, चक्कर आना, मितली, अनिद्रा, सरदर्द आदि.

आंतरायिक उपवास और वसा हानि के लिए पारंपरिक परहेज़ समान प्रतीत होते हैं. साक्ष्य बताते हैं कि आंतरायिक उपवास कुछ लाभ प्रदान करता है जो पारंपरिक परहेज़ नहीं करता है, इसमें शामिल हैं: एंटी-एजिंग गुण, समग्र हार्मोनल स्वास्थ्य, साथ ही, यह आम तौर पर एक जीवन शैली है जो व्यस्त लोगों के लिए सुविधा प्रदान करती है.

इंटरमिटेंट फास्टिंग एक ऐसी चीज है जिसके संबंध में आपको स्वयं निर्णय करना होगा कि आपके लिए यह फायदेमंद है अथवा नहीं. यह कुछ लोगों के लिए अविश्वसनीय रूप से बेहतर काम करता है तथा हो सकता है कि इनकी तुलना में अन्य के लिए अधिक असरदार न हो.

मोहित सिंह ठाकुर
वित्त एवं लेखा विभाग,
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

'यूनियन धारा' पत्रिका का अक्टूबर-दिसंबर 2022 अंक 'परिचालन विशेषांक' पढ़ा, सर्व प्रथम आपका बहुत-बहुत धन्यवाद. मै पूरे संपादक मण्डल को बधाई देता हूँ. जिस विस्तार के साथ आपने इस अंक को बनाया है यह केवल पत्रिका ही नहीं ज्ञान का भंडार प्रतीत होती है. मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि आपके बैंक द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएँ यूनियन धारा और यूनियन सृजन की प्रतियाँ हमारे कार्यालय को आपके आंचलिक कार्यालय भोपाल के माध्यम से हमेशा से ही प्राप्त होती रही हैं. संपादक मण्डल को आगे आने वाले अंकों के प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ.

संजय लांबा
मुख्य प्रबन्धक एवं सदस्य सचिव नराकास भोपाल,
अंचल कार्यालय, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया

आपके बैंक की तिमाही गृहपत्रिका 'यूनियन धारा' का जुलाई-सितंबर, 2022 का अंक प्राप्त हुआ धन्यवाद. पत्रिका के कुशल एवं सफल संपादन हेतु हमारी ओर से शुभकामनाएं एवं आभार स्वीकार करें. पत्रिका की विषय वस्तु रोचक एवं ज्ञानवर्धक है. पत्रिका में जम्मू-कश्मीर, लेह की विशेषताएं, सिंधु दर्शन महोत्सव, जीवन के लिए जागरूकता जैसे आलेख पत्रिका के सार्थक उद्देश्य को दर्शाते हैं. पत्रिकाओं के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मण्डल, सभी रचनाकारों व लेखकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं.

राजीव वार्ष्णेय
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की कॉर्पोरेट तिमाही गृह पत्रिका 'यूनियन धारा' की अक्टूबर - दिसम्बर 2022 परिचालन विशेषांक हमें प्राप्त हुई है. बहुत-बहुत धन्यवाद एवं बधाई. परिचालन विशेषांक बहुत ही ज्ञानवर्धक है. आपके बैंक की पत्रिका ज्ञान के सभी आयामों को पोषित करती चलती है पत्रिका के सारे लेख बहुत ही उम्दा हैं, पत्रिका की साज-सज्जा बहुत ही आकर्षक और बेहतरीन है. इस अंक को प्रकाशित करने के लिए मैं 'यूनियन धारा' के संपादक मंडल एवं पूरी टीम को बधाई देता हूं और आगामी अंकों के लिए हमारी ओर से शुभकामनाएं.

एस मनोज कुमार
सहायक प्रबंधक, इंडियन बैंक

यूनियन धारा के दिसंबर -2022 अंक पढ़ने का अवसर मिला. पत्रिका अति ज्ञानवर्द्धक व विभिन्न पहलुओं को अपने अंदर समेटे है. इस पत्रिका में ग्राहक सेवा प्रबंधन के विभिन्न परिप्रेक्ष्य, डिजिटाइजेशन, केवाईसी, हिन्दी साहित्य जगत के प्रसिद्ध कवि मैथिल कोकिल विद्यापति, एटीएम व डेबिट कार्ड का भविष्य, शिकायत निवारण नीति, यूनियन बैंक के विभिन्न ऑनलाइन प्रोडक्ट्स यथा यू मोबाइल, यूवीकॉन इत्यादि पर संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित आलेख है, जिसे पढ़कर इन पहलुओं पर हमें सटीक जानकारी मिलती है. साथ ही देश भर में विस्तृत यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के कार्यालयों में आयोजित बैंकिंग व राजभाषा संबंधी गतिविधियों की प्रमुख तस्वीरें (कैप्शन सहित) इस पत्रिका को और अधिक आकर्षक बनाती है. यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की एकमात्र द्विभाषिक पत्रिका "यूनियन धारा" निश्चित रूप से स्वयं में परिपूर्ण है. यह पत्रिका विभिन्न महत्त्वपूर्ण आलेखों, सुंदर तस्वीरों, आकर्षक प्राकृतिक दृश्यों के साथ रंग-बिरंगी एवं सजीव जान पड़ती है. सुंदर पत्रिका प्रकाशित करने के लिए "यूनियन धारा टीम" को हार्दिक बधाई व इसके अगले अंक के लिए आप सभी को शुभकामनाएँ.

श्री जितेंद्र कुमार सिंह
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी सह अपर मंडल रेल प्रबन्धक, समस्तीपुर

यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया की केंद्रीय कार्यालय से प्रकाशित यूनियन-धारा के नवीनतम अंक के प्रकाशन हेतु बैंक की यूनियन धारा- टीम को बहुत-बहुत बधाई. पत्रिका के कवर ने ही मन को आकृष्ट कर लिया है. और बैंकिंग परिचालन के लगभग सभी गतिविधियों की झलक एक-संग आमुख पृष्ठ पर देखने को मिल गई है. परिचालन विशेषांक के लेख बड़े ही संजीदगी एवं गंभीरता से लिखे गए हैं. इन विषयों को केवल बैंकर्स तक सीमित न रखकर आम जनता तक भी पहुँचाना लाभकारी सिद्ध होगा चूँकि यह उन्हें बैंकिंग परिचालन के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराएगा. परिचालन गतिविधियों, भविष्य की शाखा बैंकिंग, शिकायत निवारण के विभिन्न पहलुओं आसबा आदि विषय तात्कालिक परिदृश्य से हमें साझा कराते हैं. बैंक की विभिन्न गतिविधियाँ चित्र एवं समाचार के माध्यम से हमें देखने को मिलीं. संपादकीय टीम को उत्कृष्ट पत्रिका प्रकाशित करने हेतु पुनः बधाईयाँ.

रंजय कुमार मिश्रा
मुख्य क्षेत्रीय प्रबंधक, इंडियन ओवरसीज़ बैंक
क्षेत्रीय कार्यालय, कोटी, हैदराबाद

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की पत्रिका यूनियन धारा का अक्तूबर-दिसंबर, 2022 विशेषांक पढ़ा जो परिचालन पर केंद्रित है. सीकेवाईसी और वीडियो केवाईसी का महत्व, अच्छी ग्राहक सेवा जैसे आमजन के लिए उपयोगी सामग्री के साथ-साथ रुचिकर गद्य और पद्य रचनाएं, राजभाषा पुरस्कार व गतिविधियां, कुल मिलाकर पत्रिका में हिंदी भाषा, पाठकों की अभिरुचि और ज्ञानवर्धन, सभी बातों का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है. पत्रिका का कलेवर भी आकर्षक बन पड़ा है. कुल मिलाकर सहेज कर रखने लायक अंक.

दिव्येंदु बिद्यांत
स्थानापन्न महाप्रबंधक (मानव संसाधन), बीईएल कार्पोरेट कार्यालय, बेंगलूरु

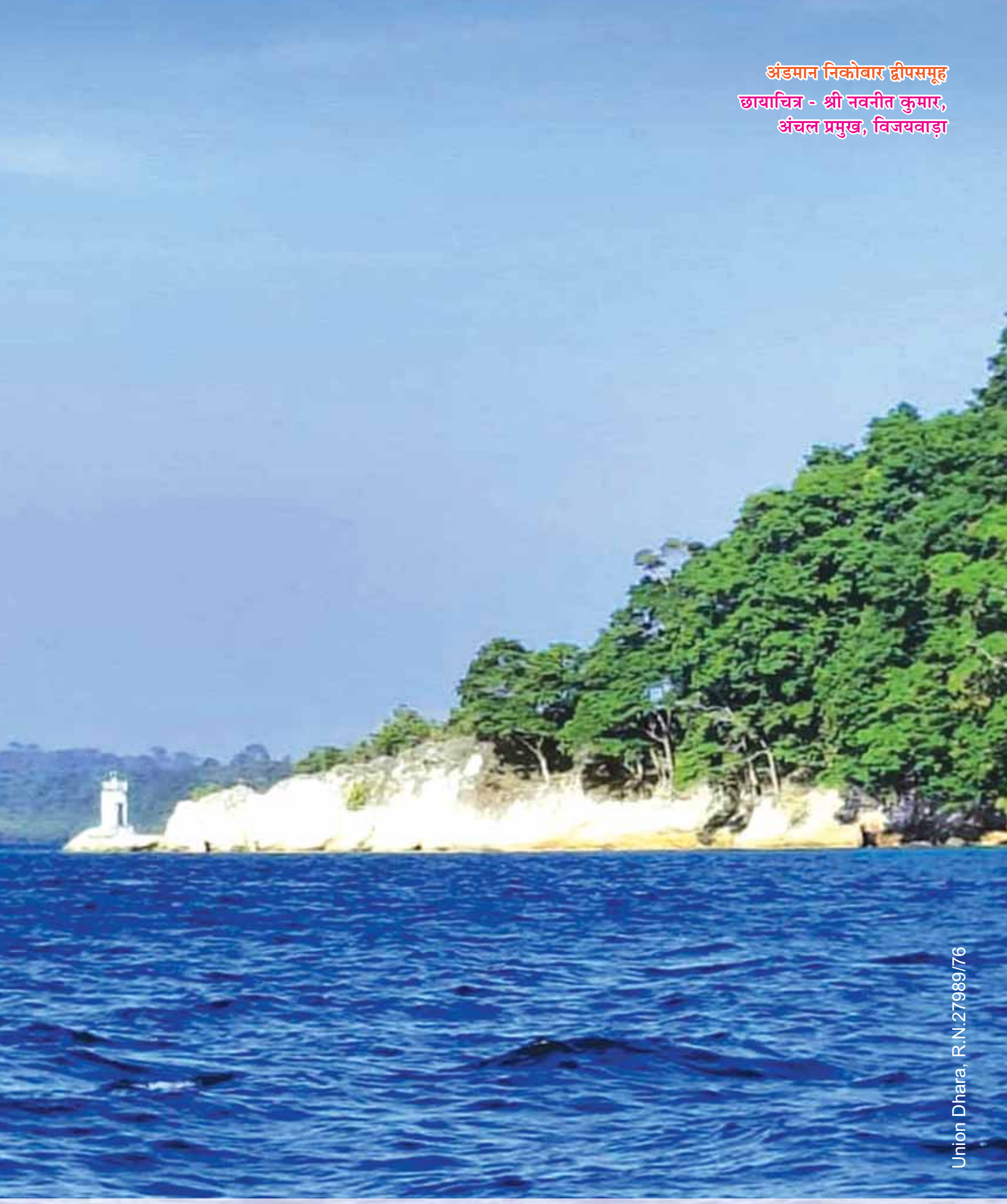

अंडमान निकोबार द्वीपसमूह
छायाचित्र - श्री नवनीत कुमार,
अंचल प्रमुख, विजयवाड़ा

Union Dhara, R.N.27989/76

Printed and Published by Gayathri Ravi Kiran on behalf of Union Bank of India, Printed at Uchitha Graphic Printers Pvt. Ltd., 65, Ideal Ind. Estate, Mathuradas Mill Compound, S. B. Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013, and Published from Union Bank of India, 239, Union Bank Bhawan, Vidhan Bhawan Marg, Nariman Point, Mumbai - 400 021. Editor - Gayathri Ravi Kiran.